मार्च ९५
होली विशेषांक
मूल्य-१८/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
अगला प्रधान मंत्री कब? कौन?
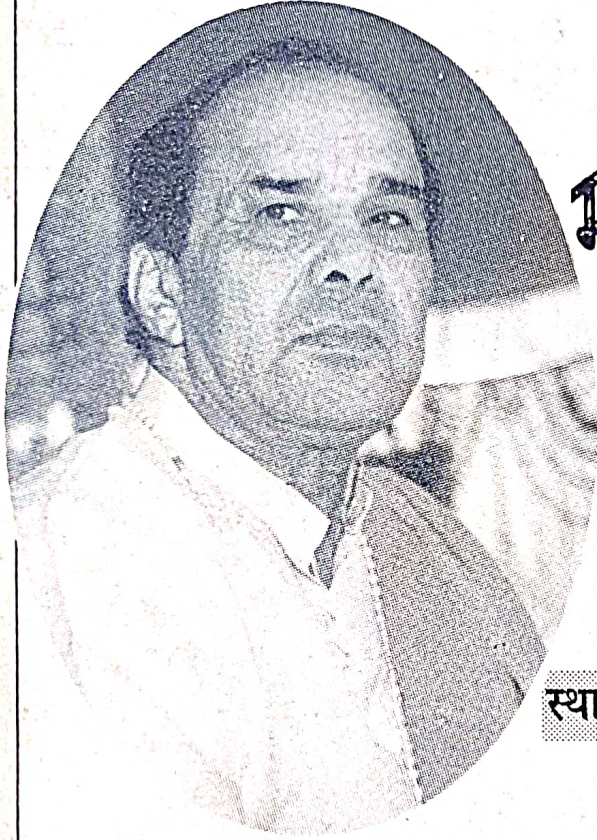
स्थान : डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)

जीवन का सौभाग्यदायक
अवसर जब गुरुदेव आवाज दे रहे हैं,
तो फिर आप सबको तो आना ही है।

इस शिविर में सम्पन्न हो रहा है –

गुप्त मनोवांछित शीघ्र कार्य सिद्धि साधना

(गुरु गोरखनाथ प्रणीत)

अद्भुत आश्चर्यजनक एवं आज के युग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साधना
(ऐसी साधना जो पूरे वर्ष में केवल एक बार होली की पूर्व रात्रि में ही सम्पन्न होती है)

– प्रयोग –

- स्वर्ण वर्षा प्रयोग
- पूर्ण वशीकरण सम्मोहन प्रयोग
- पद्मिनी प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग

शिविर शुल्क मात्र ३३०/-

– दीक्षा –

- दिव्य दृष्टि प्राप्ति दीक्षा
- सम्पूर्ण सौन्दर्य दीक्षा
- कामदेव - रति दीक्षा
- पुत्र प्राप्ति दीक्षा
- काई भी गुप्त दीक्षा जो गुरुदेव चाहें

विशेष सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१.३२२०९, फेक्स : ०२९१.३२०१०

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

प्रार्थना

योगारूढैः सततपसैः सत्यसंकल्पगर्भैः
सत्वैर्गेयः स तु प्रियतमः योगिभिर्ध्यानमम्यः
पायात्सः होलिकायां ननु नववधू गोपिकाभिः
क्रीडाव्यासक्तकृष्णश्च निखिलगुणः दिव्य एव।

निरन्तर तपस्या में लगे हुए, सात्विक भावों से युक्त, ब्रह्मनिष्ठ योगियों के इष्ट स्वरूप होलिका दहन के शुभावसर पर गोपिकाओं के साथ रंग भरे क्रीड़ा में संलग्न दिव्य गुणों से युक्त वे कृष्ण आप सभी साधकों की रक्षा करें।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम, या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु- संत होते हैं, अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करे, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके। यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वारा के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

अनुक्रमणिका

साधना

स्तम्भ

विवेचनात्मक

पाठकों के पत्र

● महादय, मैंने आपके द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** का **''अक्टूबर अंक''** पढ़ा। यह मुझे अच्छा और प्रेरणादायक लगा। कृपया मुझे अपनी पुस्तकों का एक सूची पत्र भेजें, जिससे कि मुझे आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का लाभ प्राप्त हो सके।

अमित कुमार, कोना, अम्बाला

—हमारी संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विज्ञापन पत्रिका में प्रकाशित होता रहता है, आप जोधपुर कार्यालय से सम्पर्क कर वी० पी० पी० द्वारा इन्हें प्राप्त कर सकते हैं।

— उपसम्पादक

● मैं मिथिला क्षेत्र में रहता हूं, और यहां की धरती भी बराबर अध्यात्म से जुड़ी रही है। विद्यापति, मण्डन मिश्र तथा वाचस्पति ठाकुर जैसे लोगों द्वारा यहां कल्याणकारी कार्य हुआ। परन्तु अब यह क्षेत्र इस मामले में बिलकुल शून्य सा हो गया है। छुट-पुट तांत्रिक आडम्बर बनाकर भोली-भाली जनता को धोखा दे रहे हैं। अतः आपसे निवेदन है, अगर एक शाखा कार्यालय यहां भी खोल दें, तो आपका आशीर्वाद यहां की जनता को भी प्राप्त हो सकता है।

अमलेन्दु कुमार, मधुवनी

● **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** समस्त जसवानी परिवार को वेहद उपयोगी व लाभप्रद सिद्ध हो रहा है। पहले जसवानी कॉलोनी के लोग राशियों पर विश्वास नहीं करते थे, किन्तु जब मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान में राशि पढ़ने पर अधिकतर सही उतरने लगी, तो वे अब सबसे पहले अपनी राशि पढ़ते हैं।

प्रहलाद जसवानी, मण्डला

● श्रीमान जी, आपकी अद्वितीय पत्रिका के अवलोकन करने के वाद हमें यह विश्वास हो गया है कि वास्तव में भारत समस्त विश्व में आध्यात्मिकता तथा ज्ञान-विज्ञान का आज भी शिरोमणी कहलाने का परचम फहराता है। आज भी इस विशिष्ट पत्रिका के द्वारा हमारे पुरातन ज्ञान-विज्ञान को जो संरक्षण प्राप्त हुआ, उसके लिए मैं तथा मेरे सब मित्र हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

बंशी कुमार, धामली

● पूज्य गुरुदेव, सर्वप्रथम अंग्रेजी में प्रकाशित पत्रिका के लिए हार्दिक बधाई। पत्रिका का गेट-अप अत्यन्त आकर्षक है। लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक तथा उनकी भाषा उपयुक्त एवं सुगम है। अध्यात्म एवं साधना के क्षेत्र में अच्छे स्तर की यह एकमात्र पत्रिका है। मुझे आशा एवं विश्वास है, कि यह पत्रिका शीघ्र ही मासिक रूप में आयेगी, क्योंकि दक्षिण भारत एवं विदेशों में हिन्दी भाषी अपेक्षाकृत कम हैं।

दीनानाथ, गाजियावाद

● प्रिय सम्पादक जी, मैं पिछले ६ वर्षों से **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका का नियमित पाठक हूं। पत्रिका की जितनी प्रशंसा की जाए बहुत कम है। यह पत्रिका विश्व की अद्वितीय पत्रिका है तथा अन्य पत्रिकाओं की आपाधापी सत्य-असत्य की लीक से एकदम परे हट कर सौ टंच खरी है।

संगत सिंह, गुड़गांव

● पूज्य गुरुदेव, पत्रिका इतनी ज्ञानवर्धक एवं रोचक है, कि पहले तो पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार करती हूं, उसके बाद जब पत्रिका हाथ में आती है तो, जब तक पूरी नहीं पढ़ लेती हूं, मुझें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। यह पत्रिका निश्चय ही वर्तमान में भगवत् गीता ही है।

श्रीमती संतोष, नई दिल्ली

● परमपूज्य गुरुदेव, जब से मैंने पत्रिका को पढ़ा है, अपने हृदय में एक विचित्र सी हलचल अनुभव करने लगा हूं। मैं आपसे मिलने को बेचैन रहने लगा हूं, मुझे लग रहा है कि मेरी जन्मों-जन्मों की मंजिल आप हैं। हे गुरुदेव! मेरी जिन्दगी की नाव को भी आप ही किनारे लगा सकते हैं।

अशोक कुमार, दिल्ली

● आदरणीय सम्पादक जी, मेरा दिल,मेरी आत्मा कहती है कि भविष्य में इस पत्रिका का एक-एक शब्द अमूल्य होगा। बड़े से बड़े गूढ़ ज्ञान को आप इतनी सहजता से और सरलता से देते हैं, यह कार्य आप ही कर सकते हैं। हमारी सबकी शुभ-कामनाएं आपके साथ हैं।

चेतन सिंह वैश्य, आगरा

● जनवरी का **तंत्र विशेषांक** प्राप्त हुआ, इसमें दिए गए **''तंत्र के १०८ प्रयोग''** में से कुछ प्रयोग होली के अवसर पर सम्पन्न किये, आशा के अनुरूप सफलता प्राप्त हुई, धन्यवाद।

जसवन्त डुमसिया, वम्बई

● **महाशिवरात्रि विशेषांक** अपने विविध आयामों के साथ अत्यधिक उपयोगी बन पड़ा है, इसमें भगवान शिव से सम्बन्धित अनेक रहस्यों का ज्ञान **''शिव तत्व का रहस्य''**, **''शिवरात्रि''**, **''राज- राजेश्वर महाकाल''** व अन्य लेखों से प्राप्त हुआ। इतनी दुर्लभ जानकारी के लिए धन्यवाद।

श्रीमती मधुरा, बैंगलोर

● कृपया आप मंत्र के द्वारा अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्ति का कोई प्रयोग प्रकाशित करें, जिस साधना को करने के बाद मुझे प्राकृतिक सौन्दर्य प्राप्त हो सके और मैं कृत्रिमता से बच सकूं।

कु० अनामिका, पुणे

— इसी अंक में आपकी इच्छानुसार साधना प्रकाशित है, जिसे सम्पन्न कर आप अपनी कामना पूरी कर सकती हैं।

— उपसम्पादक

वर्ष 15 **अंक 3** **मार्च 95**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरु सेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार** - अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन : 0291 - 32209, फेक्स : 0291 - 32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

सम्पादकीय
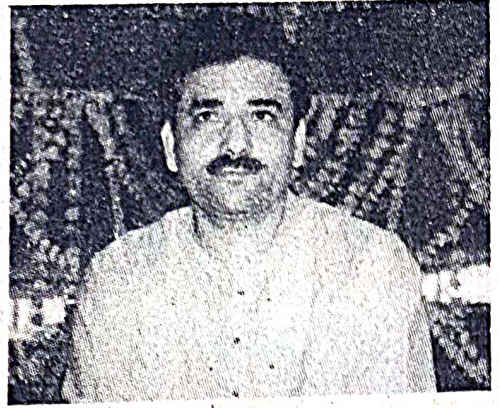
होली का इन्द्रधनुषी पर्व विविध रंगों की छटा बिखेरता हुआ पुनः आ गया है. . . आ गया है एक बार फिर से एकता का संदेश सिखाने . . . आ गया है एक बार फिर से सभी के जीवन को आनन्द व उमंग से सराबोर कर देने के लिए। प्रकृति तो बार - बार मनुष्य को अवसर प्रदान करती ही है, जिससे वह अपने अन्दर की न्यूनताओं को समाप्त कर, अपने मन में छाये विषाद, तनाव और शत्रुता की दुर्भावना को होलिका की अग्नि में समर्पित कर, भस्म कर दे, और पुनः मनुष्य **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** की भावना से अनुप्राणित हो अपने तन-मन को, पूरे समाज को, पूरे विश्व को प्रेम और सौहार्दय के रंगों में रंग सके।

प्रकृति और मानव का रागात्मक सम्बन्ध अत्यधिक प्राचीन है। हम जहां प्रकृति से हंसना, खिलखिलाना, गाना और उन्मुक्त भाव से अपनी मनोभावनाओं को अभिव्यक्त करना सीखते हैं, वहीं प्रकृति द्वारा स्वतः उत्पन्न विभिन्न मंत्रों व श्लोकों के माध्यम से अपने जीवन को प्राचीन काल से ही समृद्ध व सशक्त भी बनाते आ रहे हैं।

वर्तमान युग में भी इन मंत्रों और श्लोकों का प्रयोग कर, अपने जीवन को सुख, सम्पदा, ऐश्वर्य, आनन्द और उमंग के विविध रंगों से सजा-संवार सकते हैं।

रंग, गुलाल व अबीर से सजा - संवरा और बसन्त की मादकता समेटे है यह **''होली विशेषांक''** जीवन के विविध रंगों की तरह ही। इस अंक में हैं विविध साधनाएं — **''नारायण कल्प''**, **''गरिमा प्रयोग''**, **''मातंगी हृदय प्रयोग''**, **''प्रज्ञा सिद्धि''** इत्यादि।

होली के इस पावन पर्व पर आइये हम सभी पूज्य गुरुदेव से मिलकर एक साथ यही आशीर्वाद मांगें— **''ऐसी रंग दे कि रंग नाहीं छूटे।''**

होली का पर्व आप सभी के लिए अत्यधिक समृद्धिकारक हो, इसी शुभकामना के साथ . . .

आपका

नंदकिशोर श्रीमाली
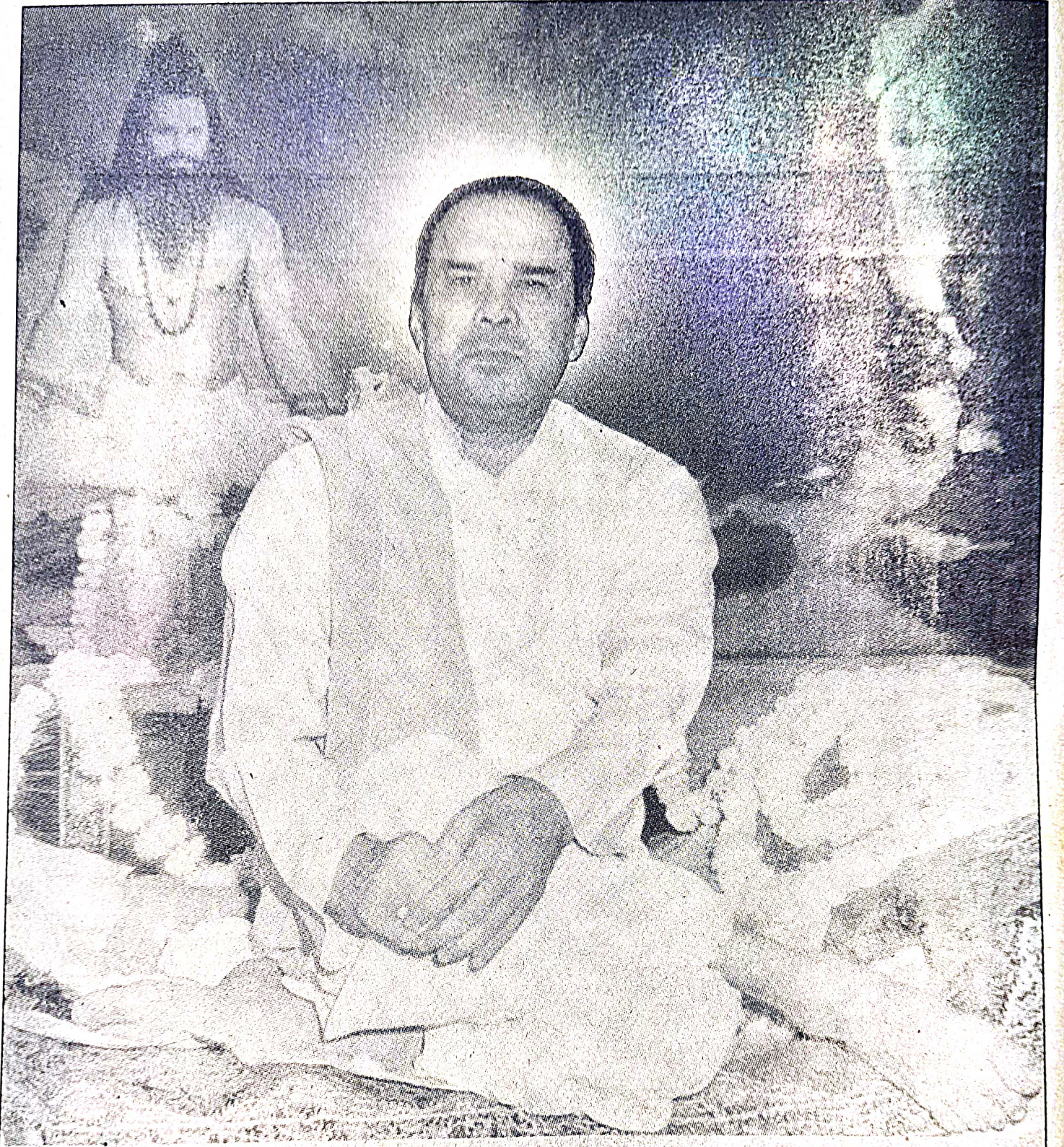
त्वदीयं वस्तु निखिलं तुभ्यमेवं समर्पयेत्

"वास्तव में इस भूमि पर प्रत्येक जीवात्मा समान प्रकार से ही जन्म लेती है, और समान प्रकार से ही देह त्याग करती है।

फिर क्या कारण है कि प्रत्येक जीव की गति भिन्न होती है, और भिन्न - भिन्न प्रकार के कर्मों से बंध वह जन्म - मृत्यु के चक्र में फंस जाता है?

इसके लिए आवश्यक है, कि हम गुरु तत्व को समझें . . . गुरु की गुरुता को समझें . . . और समझना होगा, जीव की चेतना शक्ति को . . . जिसे जान लेने के बाद ही जीव इस जगत में समस्त भौतिक और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करता हुआ ब्रह्मानन्द में विलय हो जाता है।"

शास्त्रों में गुरु को 'ब्रह्मा' का स्थान दिया गया है, तो वहीं गुरु को 'विष्णु' स्वरूप में भी स्वीकार किया गया है, और गुरु का शिव स्वरूप ही वास्तव में "गुरु तत्व" को बोध कराने वाला माना गया है।

ब्रह्मा के रूप में अवस्थित हो गुरु, शिष्य को उत्पन्न करते हैं, उसे जन्म देने की क्रिया करते हैं, एक सामान्य व्यक्ति को शिष्यत्व की भावना प्रदान कर उसे ज्ञान मार्ग पर अग्रसर करते हैं।

जब एक सामान्य मनुष्य शिष्यत्व का भाव पा, चेतना प्राप्त कर शिष्य रूप में नया जन्म लेता है, तब गुरु विष्णु स्वरूप में उपस्थित होकर उसका पालन करते हैं, जिस प्रकार माता-पिता अपने नवजात अबोध शिशु को अपने संरक्षण में लेकर उसका पालन-पोषण करते हैं, ठीक उसी प्रकार गुरु अपने नवजात शिशु रूपी शिष्य का पालन-पोषण करते हैं।

तभी तो ऋषियों के मुख से उच्चरित हुआ—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव।।

गुरु जब अपने शिव स्वरूप में आते हैं, तब वे सही शब्दों में सद्गुरु का रूप धारण कर शिष्य को ज्ञान रूपी अमृत से आप्लावित करते हैं, तथा उसके पूर्व जीवन के और इस जीवन के जो छल, दोष, कुकर्म और विकारों से भरी देह है, उन विकारों को मृत्यु प्रदान करते हैं, फिर शिष्य को प्रदान करते हैं — चेतना, ऊर्जा, अपनी तपस्या का अंश, जिसे पाकर एक सामान्य नर, नारायण बनने की ओर अग्रसर हो उठता है, तथा अपने रोम-रोम में गुरु को समाहित करता हुआ, वह स्वयं गुरुमय हो जाता है, देवतुल्य बन जाता है।

तब वह सांसारिकता को दिव्य - दृष्टि से, जो कि सद्गुरु ने उसे प्रदान की है, निहारने लगता है, उसे समझने का प्रयास करता है, और तब वह जाग्रत और चैतन्य शिष्य के रूप में उभर कर सामने आता है।

जिस प्रकार समुद्र-मंथन हुआ और उसमें से विष, अमृत तथा अन्य प्रकार के पदार्थ प्राप्त हुए, ठीक उसी प्रकार शिष्य के अन्दर से भी सभी प्रकार के गुण-अवगुण, श्रद्धा, छल, कपट एवं सभी प्रकार की अन्तः वृत्तियां उभर कर बाहर प्रकट होती हैं, जिसे एक शिष्य अबोध शिशु के रूप में आश्चर्य से निहारता है, ऐसे

समय में ही "सद्गुरु" शिव स्वरूप में शिष्य के समक्ष उपस्थित होते हैं, शिष्य के मंथन से उत्पन्न विष का पान करते हैं, उसे पुनः ज्ञान रूपी अमृत प्रदान कर, स्वयं औघड़दानी शिव के रूप में शिष्य पर करुणा की वर्षा करते हैं।

इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगोचर करते हुए हमारे धार्मिक ग्रंथों में वर्णित किया है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

शिष्य पूर्णरूप से चैतन्य एवं जाग्रत होकर गुरु तत्व में विलीन होना प्रारम्भ कर देता है। वह अपने-आप में एक आनन्दमय अवस्था प्राप्त करने लगता है, उसे "ईश्वर तत्व", जो कि वास्तव में "गुरु तत्व" है, दृष्टिगोचर होने लगता है, और तब उसे एहसास होने लगता है, कि वास्तव में गुरु ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र से भी परे "परब्रह्म" की सत्ता में अवस्थित हैं।

शिष्य स्वयं गुरुमय हो करके करुणा का, त्याग का और देवत्व का साकार पुञ्जीभूत स्वरूप बन जाता है, वह एक छोटे से बीज से वृक्ष बन जाने की अवस्था को प्राप्त कर लेता है, और साकार करता है उन स्वप्नों को, उन आशाओं को, जो स्वयं उसकी आत्मा, उसका गुरु, उसका गुरुत्व उसके लिए देखता है।

क्या यह सब एक मनुष्य को आसानी से प्राप्त हो जाता है? सर्वप्रथम तो ऐसे गुरु का प्राप्त होना ही अत्यन्त कठिन है, जो शिष्य को "नर से नारायण" बनने की ओर गतिशील कर सके, क्योंकि गुरु को स्वयं में भी इन सभी अवस्थाओं से परे होना आवश्यक है। ऐसे सद्गुरु तो अत्यन्त कठिनता से दृष्टिगोचर होते हैं, जो ब्रह्मा स्वरूप बनकर उसे जन्म दे सकें, विष्णु की तरह उसका पालन कर सकें और शिव के रूप में उसे "मोक्ष के मार्ग" पर गतिशील कर सकें।

यदि कई जन्मों के पुण्योदय होने से सद्गुरु उसके जीवन में आएं भी, तो व्यक्ति का अहंकार, उसका दम्भ, उसके स्वार्थ ही उसके कदमों को जकड़ लेते हैं, और वह सद्गुरु को "सन्देह के घेरे" में बद्ध कर लेता है, क्योंकि सद्गुरु जो अपने-आप में ही परब्रह्म अवस्था में स्थित हैं, वे अत्यन्त मायावी होते हैं।

सद्गुरु उसे अपने जन्म-जन्मांतरों के सम्बन्धों की याद दिलाते हैं, अपनी परा-शक्ति के माध्यम से, अपनी चेतना-शक्ति के माध्यम से, क्योंकि वे उस किसी न किसी जन्म में शिष्य स्वीकार कर चुके होते हैं, वे वचनबद्ध होते हैं, उस शिष्य को मुक्ति प्रदान करने के लिए, इसलिए वे शिष्य पर बराबर दृष्टि रखते हैं, और अवसर मिलते ही उसे पुकारते हैं, आवाज देते हैं, क्योंकि सद्गुरु अपने-आप में "ब्रह्म" हैं, "त्रिकालदर्शी" हैं, वे शिष्य के जन्मों-जन्मों का स्मरण रखते हैं।

जो सौभाग्यशाली शिष्य होते हैं, जिनमें चेतना होती है, वे शीघ्र ही इन सब स्थितियों को समझकर अपने-आप को गुरु के चरणों में समर्पित कर देते हैं। ऐसा नहीं, कि सद्गुरु एक ही शिष्य को चेतना प्रदान करते हैं, दूसरे को नहीं। वे समदृष्टा भाव से ही चेतना, स्मरण देते हैं, जिस आत्मा की जितनी शुद्धता होती है, पवित्रता होती है, वह उतनी ही शीघ्रता से गुरु की अन्तः इच्छाओं को समझ, गुरु पथ पर अग्रसर हो उठता है। वह उन समस्त लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है, जिसका उसके जीवन में जन्म-जन्मांतरों से अभाव होता है।

यह तो गुरु और शिष्य के आत्मिक सम्बन्ध होते हैं, जिनका एहसास, जिनका स्मरण सद्गुरु ही करवा सकते हैं। **शिष्य में अथवा उस अबोध शिशु में इतनी क्षमता नहीं होती, कि वह सद्गुरु की पहिचान कर सके, यह पहिचान तो स्वयं सद्गुरु ही शिष्य को प्रदान करते हैं, क्योंकि वे किसी न किसी जन्म में वचन बद्ध होते हैं, शिष्य के जीवन को पूर्णता प्रदान करने के लिए।**

वे शिष्यों के मध्य, सामान्य मानव-जाति के मध्य उपस्थित होकर, उनके व्यंग-बाणों का सामना करते हैं, उनसे उत्पन्न विष का, जो कि आलोचना, कुतर्कों के रूप में होता है, पान करते हैं, और बदले में वह सभी कुछ प्रदान करने का प्रयास करते हैं, जिसकी इस मानव-जाति को नितान्त आवश्यकता है, जिससे इस मानव-जाति का कल्याण सम्भव होता है।

अर्पण है ऐसे सद्गुरु के चरणों में कोटि कोटिशः जीवन,
अर्पित है ऐसे सद्गुरु के चरणों में तन-मन।

हम सभी शिष्य व्यक्त नहीं कर पा रहे अपने सौभाग्य को. . . अपनी भावनाओं को. . . हम तो मात्र इतनी ही विनती कर सकते हैं — **"त्वदीयं वस्तु निखिलं तुभ्यमेवं समर्पयेत्"।**

सफलता का रहस्य

मकड़ी एक लम्बा ताना बुन रही थी, जो बार - बार टूट जाता था, फिर भी वह निराश नहीं हुई, प्रयास जारी रखा और चौदहवें प्रयास में सफल हुई। यह दृश्य पराजित ब्रूसो देख रहा था, उसने तेरह बार लड़ाई में मात खाई थी। मकड़ी के साहस से प्रभावित होकर उसने चौदहवीं बार लड़ाई की तैयार की तथा दूने उत्साह से लड़ा और सफलता प्राप्त की।

ब्रूसो कहते रहते थे— हर असफलता बताती है कि पूरी तत्परता पूर्वक कार्य नहीं हुआ। जो भूलों को समझते हैं और सुधारते हैं, वे असम्भव को सम्भव कर दिखाते हैं। ठीक इसी प्रकार साधक की स्थिति होती है, किसी भी साधना को बार - बार करने से एक स्थिति ऐसी आती है कि वह उसमें पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त कर लेता है।

अगला प्रधानमंत्री कब और कौन?

आज देश की बिगड़ती राजनैतिक व्यवस्था को देखते हुए प्रत्येक भारतीय इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए उत्सुक है कि अगला प्रधानमंत्री कौन होगा, क्या मध्यावधि चुनाव होगा? और अगर होगा तो कौन - कौन सी पार्टियां , कौन-कौन से व्यक्ति उभर कर सामने आयेंगे?

हर पार्टी इसी कोशिश में है कि मध्यावधि चुनाव हों, कांग्रेस के भी कुछ व्यक्ति प्रधान मंत्री पद पर आसीन होने के लिए ये चाहेंगे, और इसी लालच में कोई नया समीकरण बनाने का प्रयास करेंगे, देश में चारों ओर की परिस्थितियों को देखकर ये अनुमान लगाया जाना मुश्किल है कि अगला प्रधानमंत्री कब और कौन बनेगा? पिछले कुछ समय में अत्यंत चौंकाने वाली घटनाएं घटित हुईं, जैसे—

१. अर्जुन सिंह का इस्तीफा।
२. बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार।
३. नारायण तिवारी का उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा।
४. लाल कृष्ण आडवानी का रुख प्रधानमंत्री पद के प्रति।
५. शरद पवार का प्रधानमंत्री पद की ओर झुकाव होना।
६. नरसिंहा राव के प्रधानमंत्री पद की ओर आसीन होने की सम्भावना।

राजनैतिक सरगर्मियों को बढ़ते देखकर यदि भारत की कुण्डली पर गौर किया जाए, तो यह बात उभर कर सामने आती है कि इतनी जल्दी-जल्दी चुनावों की स्थिति उत्पन्न होने से जनता बहुत अधिक दुखी, पीड़ित और अप्रसन्न है।

भारत की कुण्डली को देखकर यह ज्ञात होता है कि मध्यावधि चुनावों के शीघ्र होने की सम्भावनाएं अधिक हैं, किन्तु ये अपने अनुकूल समय पर ही होंगे. . . आइये भारत की जन्मकुण्डली और देश के शीर्षस्थ व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों के आधार पर देखें कि कौन प्रधानमंत्री पद ग्रहण करता है? इसके लिए कांग्रेस व अन्य पार्टियों में जो अन्दरुनी गहमागहमी चल रही है और उससे जो स्थितियां उत्पन्न हो रही हैं, वे इस प्रकार हैं—

आज देश की राजनीति में काफी उथल-पुथल हो रही है. . . आज रोज अखबारों में मंत्री-मण्डल के त्याग पत्र देने के समाचार सामने आ रहे हैं . . . क्या इन स्थितियों को देखते हुए और ज्योतिष की गणनाओं से यह निश्चित है कि मध्यावधि चुनाव होंगे . . .?

१. अर्जुन सिंह— ये एक कर्मठ नेता हैं, इनके अचानक दिये गये इस्तीफे ने नैतिकता दर्शाने की बजाय कांग्रेस को नुकसान पहुंचाया है। इनकी जन्मकुण्डली के आधार पर इनके ग्रहों की स्थिति यही बताती है कि मंगल और राहू इनके लिए अनुकूल हैं, किन्तु बृहस्पति और राहू का आपसी सम्बन्ध हो जाने के कारण ११ जनवरी ९५ से वे ज्यों-ज्यों आगे बढ़ने का प्रयत्न करेंगे, वे उतना ही पीछे की ओर सरकते चले जायेंगे।

अपने एक निर्णय के कारण इन्हें पछताना पड़ेगा तथा इनके जो विश्वासपात्र हैं, वे भी इन्हें अचानक ही धोखा दे जायेंगे। हो सकता है कि ये प्रधानमंत्री पद के एकदम नजदीक पहुंच कर पीछे धकेल दिये जायें, इन्हें अपने अस्तित्व को बचाने के लिए बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ेगा और हर समय सावधान रहना पड़ेगा।

२. लाल कृष्ण आडवानी – इनकी जन्मकुण्डली का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि आजकल के समय में हिन्दुत्व और साम्प्रदायिक बल का प्रयोग करते हुए कोई पार्टी कई राज्यों में बहुमत पायेगी, और यह बात भारतीय जनता पार्टी पर ही खरी उतर रही है, परन्तु इस गणना से त्रस्त जनता स्वयं ही उन पार्टियों का बहिष्कार करेगी, जो इस प्रकार आम जनता में फूट डालने की कोशिश करते हैं।

आडवानी जी का योग प्रधानमंत्री पद के लिए कुछ - कुछ प्रबल है, किन्तु पार्टी की जन-विरोधी नीतियों की वजह से उनके प्रधानमंत्री बनने के अवसर कम ही दिखाई देते हैं? फरवरी से अप्रैल तक का समय इनके लिए शुभ है, इसके बाद इनकी सम्भावनाएं नहीं के बराबर हैं, इन पर शनि का प्रभाव पड़ने के कारण स्वास्थ्य की कमजोरी की वजह से शायद यह सम्मोननीय पद तक नहीं पहुंच पायें।

> **क्या जनता यह निर्णय कर पायेगी कि देश की सत्ता कौन सम्हाले. . . क्या आज के नेताओं को देखते हुए यह निर्णय कर पाना सरल है कि प्रधानमंत्री का दावेदार कौन होगा . . . या फिर कोई ऐसा व्यक्तित्व सामने उभर कर आयेगा, जो . . .**

३. शरद पवार – इनके ग्रह नक्षत्र यह बताते हैं कि वे अपने क्षेत्र महाराष्ट्र में एक उच्चतम पद पर ही बने रहेंगे, और वहां उनकी नींव मजबूत रहेगी, किन्तु राष्ट्रीय स्तर पर उनके सितारे गर्दिश में ही दिखाई देंगे। केन्द्रीय सरकार में उच्च पद प्राप्त होने के अवसर हैं, परन्तु प्रधानमंत्री बनने का कोई योग बनता दिखाई नहीं देता।

४. नरसिंहा राव – जनवरी में राजनैतिक स्थिति डावांडोल रहेगी। यह समय इनके लिए बड़ी ही विकट परिस्थितियों में उलझे रहने का समय है, तथा फरवरी के अन्त और मार्च के प्रारम्भिक समय में थोड़ी अनुकूलता आयेगी, परन्तु अप्रैल या मई के आखिर में कुछ ऐसी स्थितियां बनेंगी, जिससे विरोधी नेता भी उनके हितैषी बन उनको पूर्व सहयोग प्रदान करेंगे।

श्री राव की कुण्डली और भारत की जन्मकुण्डली को देखते हुए यह पता चलता है कि ये अपनी ५ साल की अवधि को पूर्ण कर लेंगे, पर उसके बाद प्रधानमंत्री पद को प्राप्त करना बहुत कुछ कांग्रेस की स्थिति पर निर्भर करेगा, क्योंकि कांग्रेस के जो बड़े-बड़े नेता हैं, वे राव जी से असन्तुष्ट हैं, **अतः भारत की जन्मकुण्डली और देश के शीर्षस्थ लोगों की जन्मकुण्डली के आधार पर सूक्ष्मता से आंकलन और अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि चुनाव अपने निर्धारित समय पर ही होंगे और जो देश में शीघ्र ही मध्यावधि चुनाव होने की सम्भावनाएं बन रही हैं, वे धूमिल हो जायेंगी।**

आजकल हर राज्य के अन्दर एक नई पार्टी उभर कर सामने आ रही है, जैसे कि उत्तर प्रदेश में समाजवादी जनता पार्टी और बहुजन समाज पार्टी, और साऊथ में तेलगू देशम, ए० आई० डी० के० आदि इस प्रकार की छुट-पुट पार्टियां उठ रही हैं, पर वे राष्ट्रीय स्तर पर बहुमत पाने के काबिल नहीं हैं।

सभी पार्टियों की जन्मकुण्डलियों का सूक्षमता से अध्ययन करने पर व उच्चकोटि के ज्योतिषियों की गणना के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भविष्य में प्रधानमंत्री एक ऐसा व्यक्ति होगा, जिसका वर्तमान पार्टियों से कोई सम्बन्ध नहीं होगा, लेकिन भविष्य में बहुत सी पार्टियां उनसे संगठन करने के लिए लालायित रहेंगी, उसके नाम का पहला अक्षर **न, द, स, ल** से शुरू होगा।

इन दिनों देश में राजनैतिक सरगर्मियों को देखते हुए एक ऐसा व्यक्ति उभर कर सामने आयेगा, जो कि अपने आदर्शों के द्वारा देश में बढ़ते भ्रष्टाचार का विरोध करते हुए, देश की राजनीतिक व्यवस्था को एक नया मोड़ देते हुए उसका पूर्व कायाकल्प कर देगा, और पुरानी सड़ी-गली एवं भ्रष्ट व्यवस्था को बहिष्कृत करता हुआ एक नवीन युग की संरचना करेगा।

अतः वर्तमान ग्रह स्थितियों के आधार पर तो यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस और श्री नरसिंहा राव जी ही प्रधानमंत्री पद पर आसीन रहेंगे।

– दिव्य चक्षु

यह जीवन पग-पग परिवर्तनशील है, और प्रत्येक मानव में आगे बढ़ने की होड़ सी लगी हुई है, हर कोई जीवन को अपने ढंग से जीना चाहता है और जल्दी से जल्दी अपने लक्ष्य की ओर पहुंचना चाहता है, व्यापारी जल्दी से जल्दी लखपति बनना चाहता है, अधिकारी अपने विभाग में सबसे उच्च पद पर पहुंचने के लिए जी तोड़ प्रयास करता है, प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक प्रकार की छटपटाहट सी महसूस होती है, जिससे असन्तोष की स्थिति उत्पन्न होने लगती है, क्योंकि आज मानव के लिए इस कुरूप समाज में जीना एक दुष्कर कार्य मालूम होता है।

आज का मानव-जीवन इतना अधिक जटिल हो गया है कि उसकी समस्याओं का कोई अन्त नहीं है, किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए उसे पग-पग पर परेशानियों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिससे की उसकी गति अवरुद्ध हो जाती है। आज के इस मंहगाई के जमाने में व्यक्ति के लिए सांस लेना और भी दुर्लभ हो गया है, वह आये दिन विभिन्न प्रकार की बाधाओं के कटघरे में अपने-आप को खड़ा पाता है, जहां से निकलना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। कभी रोटी की समस्या, तो कभी घर की समस्या, कभी अच्छी सुयोग्य पत्नी, पुत्र प्राप्ति की इच्छा, तो कभी धन की आवश्यकता, कभी रोग ग्रसित होने की समस्या, तो कभी नौकरी की समस्या, कभी मानसिक द्वंद्वों से ग्रसित होने की समस्या, तो कभी उच्च सम्मान प्राप्त करने की इच्छा, कभी कर्जा बढ़ जाने की समस्या, तो कभी शत्रु बाधा इस प्रकार की सैकड़ों-हजारों समस्याओं से व्यक्ति को आये दिन जूझना पड़ता है, और उसका अधिक से अधिक समय और शक्ति इन्हीं समस्याओं के हल ढूंढने में लग जाती है, पर फिर भी वह इन सब से मुक्त नहीं हो पाता।

> **“अर्जुन ने कृष्ण से दिव्यास्त्र प्राप्त करके सभी कौरवों को परास्त किया था, राम ने इसी दिव्यास्त्र से रावण को परास्त किया था। आप को भी इस यंत्र को अपने घर में स्थापित कर अपने सभी दुष्प्रभावों को समाप्त करना चाहिए।”**

वैसे तो इन सबसे छुटकारा पाने के लिए विभिन्न प्रकार के मंत्र-जप, साधना-उपासना, पूजा-पाठ आदि करवाये जाते हैं, किन्तु आज के इस कलियुग में व्यक्ति के पास इतना समय ही नहीं है, कि वह अपनी गति को थोड़ा रोक कर कुछ समय इन सब कार्यों के लिए निकाले, उसे तो शीघ्र फलदायक युक्ति की ही कामना हर क्षण मन में रहती है, जो उसकी मध्यम गति को रफ्तार दे सके।

किन्तु तेज रफ्तार से बढ़ते हुए इस युग में जहां मनुष्य निरन्तर उन्नति की ओर गतिशील होना चाहता है, जहां वह विभिन्न परेशानियों और बाधाओं से मुक्त होना चाहता है, वहीं पण्डितों द्वारा एक **"दिव्यास्त्र यंत्र"** का निर्माण किया गया है, जो प्रत्येक व्यक्ति, साधक व शिष्य के लिए श्रेयस्कर सिद्ध होगा, इसे प्राप्त करने पर व्यक्ति अपने जीवन की समस्त परेशानियों से चाहे वह शारीरिक हों, मानसिक हों या आर्थिक हों पूर्णतः मुक्त हो सकेगा।

वह व्यक्ति अवश्य ही अति सौभाग्यशाली माना जाता है, जिसके घर में गुरु-कृपा वश "दिव्यास्त्र यंत्र" स्थापित होता है। घर में इस यंत्र के प्रभाव से किसी भी प्रकार के होने वाले तांत्रिक प्रभाव तुरन्त समाप्त हो जाते हैं, क्योंकि तांत्रिक प्रयोग का प्रभाव इतना कुचक्र पूर्ण होता है कि उससे पूरा का पूरा घर समाप्त हो जाता है, उसके कारण घर में, परिवार में भयंकर कलह होने लगता है, सभी सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं, घर के लोग बड़ी-बड़ी बीमारियों से घिर जाते हैं। काम-काज व्यापार छिन्न-भिन्न हो जाते हैं तथा कर्ज से लद जाते हैं और भी जितने कुप्रभाव होते हैं, तंत्र प्रयोग के उन सभी को "दिव्यास्त्र यंत्र" समाप्त कर देता है तथा भविष्य में होने वाले किसी भी प्रकार के दुष्प्रभावों से सुरक्षित रखता है।

इस यंत्र के प्रभाव से बिगड़े हुए सभी काम-काज ठीक चलने लगते हैं, तथा सभी लोगों के स्वास्थ्य भी ठीक होने लगते हैं, बीमारी उस घर से कोसों दूर हो जाती है। **प्रत्येक गृहस्थ को चाहिए कि वह इस यंत्र को अपने घर में स्थापित करे, क्योंकि यदि आप गृहस्थ हैं, तो आप के पास समस्याएं अवश्य होंगी, और होनी भी चाहिए, चाहे वह नौकरी से सम्बन्धित हो या कन्याओं के विवाह से सम्बन्धित हो या और कोई समस्या हो, उनके समाधान का एकमात्र अचूक समाधान केवल 'दिव्यास्त्र यंत्र' ही है।** जो इस वर्ष १९९५ का पूज्य गुरुदेव द्वारा दिया गया आप को अनुग्रह स्वरूप उपहार है। यह यंत्र **'विशिष्ट तांत्रिक मंत्रों से प्राण-प्रतिष्ठित'** किया गया है, जो शीघ्र ही आप की समस्याओं को समाप्त कर नई प्रक्रिया से आप को जीवन जीने के लिए प्रेरित करेगा, इसे पाकर अवश्य ही आप अपने-आप को धन्य समझेंगे।

इस यंत्र को प्राप्त कर लेना गृहस्थ व्यक्ति के जीवन का परम सौभाग्य कहलाता है, क्योंकि यह यंत्र विशेष शक्ति से आपूरित होने के कारण अपने-आप में श्रेष्ठ है।

यह अपने-आप में अद्वितीय यंत्र है, जिसका लाभ धारण करने वाले को श्रद्धा और विश्वास होने पर एक महीने के भीतर-भीतर ही मिलने लग जाता है। यह एक ऐसा दिव्यास्त्र है, जिसका प्रभाव कभी खाली जा ही नहीं सकता। धन, समृद्धि, उन्नति, ऐश्वर्य आदि सभी कुछ इसके द्वारा प्राप्त हो सकता है।

इस यंत्र के प्राप्त कर लेने के बाद जीवन तनाव मुक्त होता दिखाई देगा और एक अपूर्व शांति प्राप्त होगी, तथा विभिन्न कार्यक्षेत्रों में शीघ्र ही सफलता मिल सकेगी। शत्रु बाधा से छुटकारा पाने का तो यह अद्वितीय यंत्र है, यह ऐसा दिव्य अस्त्र है, जिससे शत्रु को आसानी से परास्त किया जा सकता है, और जिसका वार कभी खाली नहीं जाता।

यह तो आप पर निर्भर करेगा कि इसका महत्व आप कितना समझते हैं, सूर्य सदैव सभी पर समान रूप से अपनी धूप देता है, वह धूप लेने वाले पर निर्भर करता है। यह सौभाग्यशाली यंत्र अपने नाम के अनुकूल अवश्य आपको प्रभावित करेगा। **"मंत्रे तीर्थे द्विजे दैवे"** इन पर श्रद्धा की आवश्यकता होती है। यह यंत्र भी आप की श्रद्धा का पात्र होना चाहिए, यदि आप की श्रद्धा इसमें भरपूर रही, तो यह यंत्र अपने नाम के अनुकूल प्रभाव देगा ही, इसमें कोई संदेह नहीं है। हमारे पत्रिका परिवार की ओर से आपको यह सन्देश है कि आप इस यंत्र को अवश्य ही अपने घर में स्थान देकर सौभाग्यशाली बनें।

इस विशेष अवसर पर आप सबको पूज्य गुरुदेव की ओर से बिना किसी शुल्क के लिए निःशुल्क ही यह यंत्र प्रदान किया जा सकेगा। इन यंत्रों को विशेष क्षणों में पूज्य गुरुदेव के निर्देश से तैयार करवाया गया है, जिसे प्राप्त कर जीवन में सम्पूर्ण सफलता अर्जित की जा सकती है।

इस पत्रिका में इससे सम्बन्धित पोस्टकार्ड है, जिन्हें स्वयं या अन्य किसी सदस्य को पत्रिका का दो वर्ष का सदस्य बनाकर, उस कार्ड पर उस सदस्य का नाम व पता भरकर हमें भेज दें, और साथ ही अपना नाम व पता भी नीचे लिखकर भेज दें, जिससे कि यह यंत्र आपको भिजवाया जा सके। यह यंत्र ३९२ रुपये की वी०पी०पी० से आपको भेजा जायेगा, जिसमें ३६० रुपये पत्रिका शुल्क और ३२ रुपये डाक खर्च होता है।

जब भी यह पैकेट आपके पास पोस्टमैन द्वारा पहुंचे, तो आप इस धनराशि को देकर इसे अवश्य छुड़वा लें, इसकी रसीद आपको भेज दी जायेगी।

ये "दिव्यास्त्र यंत्र" कुछ ही मात्रा में निर्मित हो सके हैं, इसलिए ये सभी व्यक्तियों के लिए तो नहीं, लेकिन कुछ ही व्यक्तियों, जिनके नाम हमें पहले प्राप्त हो जायेंगे, उन्हें उपलब्ध हो सकेगा, यह यंत्र भौतिक समस्याओं से युक्त हो जीवनोन्नति का सर्वोच्च यंत्र है, जो हर उस व्यक्ति के लिए वरदान स्वरूप है, जिसे प्राप्त होगा, यदि किसी सदस्य को हम यह यंत्र नहीं भिजवा सके, तो इसके लिए हम पहले से ही क्षमा प्रार्थी हैं।

पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत इस यंत्र को प्राप्त कर जीवन की समस्त बाधाओं से मुक्त हो सकें, ऐसा ही आप सबको आशीर्वाद है।

गृहस्थ संन्यास जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है

आज भी भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य जी का नाम पूर्ण आदर व श्रद्धा के साथ लिया जाता है, और इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी लोग उन्हें अत्यन्त ही सम्माननीय दृष्टि से याद करते हैं। बहुत ही महान व्यक्ति थे वे, और उतना ही भव्य था उनका जीवन, जो साधारण व्यक्ति की शक्ति से परे था।
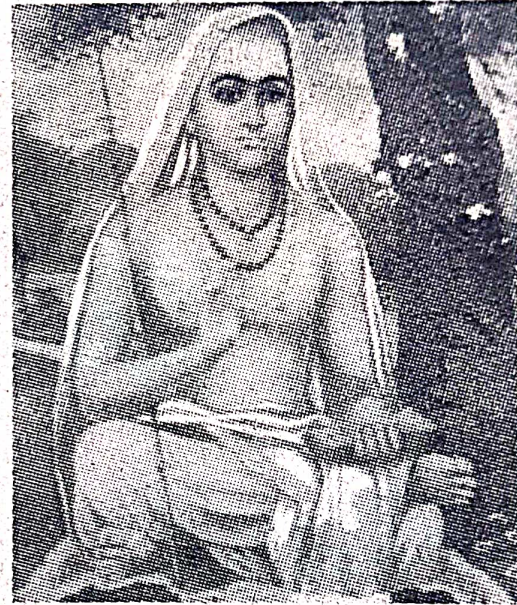
इस तरुण संन्यासी ने अखण्ड विशाल भारत के दक्षिण से उत्तर, पूर्व से पश्चिम तथा भारतेत्तर देशों में भी पद यात्रा करके वेदान्त धर्म को जनगण के उपयोगी, अनुष्ठानिक धर्म में रूपान्तरित और प्रतिष्ठित किया। इन्होंने हिन्दू धर्म को वैदिक आदर्श में पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए, भारत के चार प्रान्तों में चार धर्म - दुर्ग स्थापित किए, एक प्रहरी के समान ही, ये चारों मठ हिन्दू धर्म की विजय - वैजयन्ती फहरा रहे हैं।

शंकराचार्य द्वारा प्रचारित वेदान्त का प्रभाव भारत में सर्वत्र परिव्याप्त है। वे एक सत्यदृष्टा ऋषि थे। अपरोक्षानुभूति की जाग्रत प्रेरणा ही उनके जीवन का अन्यतम वैशिष्टय था, वे देह धारण करके भी विदेह थे।

आचार्य शंकर का जन्म उच्च ब्राह्मण कुल में हुआ था। बचपन से ही शंकर बहुत ही शांत, धीर और तीक्ष्ण बुद्धि के थे, युवावस्था में उनमें जो अभूतपूर्व प्रतिभा और असाधारण मेधा शक्ति थी, और जिससे सम्पूर्ण संसार चमत्कृत हुआ था, उसका उन्मेष मात्र तो उनमें बचपन से ही दिखाई देने लग गया था। तीन वर्ष की आयु में ही वेद, पुराण, महाभारत, रामायण आदि इन्हें कण्ठस्थ हो गए थे। आश्चर्य की बात तो यह थी, कि ये जो भी पढ़ते थे या सुनते थे, इन्हें कण्ठस्थ हो जाता था। पांच वर्ष की आयु में ही **उन्हें उपनयन संस्कार करके गुरुगृह भेज दिया गया, थोड़े दिन बाद ही शंकर की प्रतिभा, बुद्धि और विशुद्ध उच्चारण ने गुरु व अन्य सभी को आश्चर्यचकित कर दिया था।** दो वर्ष में ही वे उपनिषद, पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि अनेक शास्त्रों में पूर्ण पारंगत हो गए थे, जिन शास्त्रों के अध्ययन में अत्यन्त मेधावी शिष्यों को बीस वर्ष लगते थे, उन्होंने दो वर्ष में ही उसका पूर्ण अध्ययन कर डाला।

उनके गुरुगृह से लौटते ही मां विशिष्टा देवी ने जब उनके आगे विवाह का प्रस्ताव रखा, तो उन्होंने इंकार कर दिया, और अपने विचार पर दृढ़ बने रहे, इस प्रकार की दृढ़ता ने मां को विस्मित तथा अभिभूत कर दिया।

ब्रह्मचारी शंकर घर में रहकर ही अध्ययन और अध्यापन कार्य में तत्पर रहे अनेक वयोवृद्ध पंडित भी शास्त्राध्ययन के लिए उनके पास आया करते थे, **उनके शास्त्र व्याख्यान को सुनकर स्तम्भित रह जाते थे, और सोचने लगते थे कि सात वर्ष के बालक में इतना असाधारण पाण्डित्य प्रतिभा यथार्थ में ही दैवी शक्ति का द्योतक**

है। ब्रह्मचारी शंकर अपनी सर्व प्रधान दिनचर्या व श्रेष्ठ साधना मां को सुख और आनन्द प्रदान करने में समझते थे, एक तरह से वे मातृ भक्त थे।

एक बार कुछ द्वैत ब्राह्मण अतिथि रूप में शंकर के भुवन में आये, तब उन्होंने शंकर की जन्मपत्री देख कर कहा—"शंकर स्वल्पआयु है", तभी से उनके मन में एक दूसरे प्रकार की प्रतिक्रिया प्रारम्भ हुई और उन्होंने संन्यास ग्रहण करने का निश्चय कर लिया। उन्होंने विचार किया—संन्यास ग्रहण के बिना आत्मज्ञान नहीं हो सकता और ज्ञान लाभ के बिना मुक्ति सम्भव नहीं है, उस समय वे केवल आठ वर्ष के ही थे, और इसी समय इनका एक मृत्यु योग भी था, वे व्याकुल हो उठे, कि कैसे संन्यास ग्रहण किया जाए?

दिन-प्रतिदिन उनके हृदय में संन्यास धारण करने की इच्छा प्रबल हो उठी, किन्तु जब माता के सामने इस प्रश्न को रखा, तो उन्होंने कहा—"मैं प्राण रहते तुम्हें संन्यासी नहीं होने दूंगी।" वे इस कथन को सुनकर चिन्तित रहने लगे, क्योंकि **जिस अद्वैत ब्रह्मात्य विज्ञान के प्रचार के लिए उनका शरीर धारण हुआ था, उसमें संन्यास ग्रहण अपरिहार्य था, उसके बिना अद्वैत ब्रह्म ज्ञान लाभ प्राप्त करना असम्भव था।**

उन्हें चिन्तित देखकर मां ने भी संन्यासी होने की स्वीकृति प्रदान कर दी, और तब से ही उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अभिलाषा पूर्ण हो गई।

संन्यास ही जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि नहीं है, उसके लिए गृहस्थ बनना भी आवश्यक है, क्योंकि बिना गृहस्थ के संन्यास जीवन अपूर्ण है, अधूरा है, निरर्थक है। इस तथ्य का ज्ञान उन्हें तब हुआ, जब वे मण्डन मिश्र की पत्नी उभयभारती से शास्त्रार्थ कर रहे थे।

उस समय मण्डन मिश्र और आचार्य शंकर के समान अन्य कोई विद्वान व सिद्धहस्त नहीं थे, वे दोनों ही उच्च शास्त्र-ज्ञाता माने जाते थे, तब आचार्य शंकर ने मण्डन मिश्र से शास्त्रार्थ करने की ठानी, क्योंकि उनके अलावा वे सभी उच्च से उच्च शास्त्र ज्ञाताओं को अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के बल से परास्त कर चुके थे।

आचार्य शंकर ने मण्डन मिश्र के आगे यह प्रस्ताव रखा, जो मण्डन मिश्र को स्वीकार था। उन्होंने निर्णय के लिए कौन दोनों में से सर्वोच्च है, मण्डन मिश्र की पत्नी उभयभारती को चुना, जो कि साक्षात् सरस्वती का ही स्वरूप थीं, इस बात को दोनों ने ही स्वीकार किया, कि वही निर्णय करेगी, कि कौन पराजित हुआ... और जिसकी पराजय होगी, उसे विजेता की शिष्यता ग्रहण करनी होगी।

दोनों पक्षों की सम्मति से उभयभारती ससंकोच मध्य के आसन पर बैठ गईं और दोनों के बीच शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ, जो १७ दिन तक चलता रहा, किसी पक्ष में दुर्बलता के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे, १८ वें दिन शंकराचार्य ने मुण्डक उपनिषद् का उल्लेख करते हुए कहा—**"परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणों निर्वेदमायात् नास्त्यकृतः कृतेन"**—अर्थात् "वेदविद ब्राह्मण कर्म से प्राप्त लोकों की परीक्षा करके, उसका नश्वर फल देख कर उस पर वैराग्य उत्पन्न करे, क्योंकि "अकृत" मोक्ष "कृत" के द्वारा प्राप्त नहीं है। मोक्ष आत्मा का स्वरूप है, जो त्रिकाल में विद्यमान है, किसी कर्म के द्वारा उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। कर्म के द्वारा जिस स्वर्गादि फल का संयोग होता है, उसका उपयोग भी होगा। जन्म होने से मृत्यु अवश्यम्भावी है, मोक्ष यदि प्राप्त होता तो उसका भी विनाश निश्चय ही होगा। मनुष्य अज्ञान से अपने को बद्ध समझता है। आत्मा स्वरूप ज्ञान होने से वह त्रिकाल युक्त आत्मा का स्वरूप ही जान पाता है, अतः उसके लिए मोक्ष उत्पन्न नहीं हुआ, चिन को उसका ज्ञान नहीं था, उस अज्ञान के हट जाने से सूर्य की तरह प्रकाशित होती है।

"तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्" इस प्रमाण से कर्म की हीनता प्रतीत होती है, परन्तु वेद के कर्म भाग में ज्ञान की हीनता बताने वाला एक भी प्रमाण आप नहीं प्रदर्शित कर सकते।"

> **संन्यास का तात्पर्य गृहस्थ जीवन का त्याग और गेरुवे वस्त्र धारण कर लेना नहीं होता। संन्यास का अर्थ है– मन में किसी भी प्रकार की तृष्णा न हो और केवल मात्र प्रभु चिन्तन हो ... जो गृहस्थ में भी सम्भव है।**

इस प्रश्न का मण्डन मिश्र कोई उत्तर न दे सके, उभयभारती उन्हें चुप देखकर व्यथित हुई, परन्तु उन्होंने न्याय और सत्य की मर्यादा को नहीं तोड़ना चाहा, दोनों पक्षों का उपसंहार करते हुए उन्होंने कहा—**"मेरे पति पराजित हो गए हैं, किन्तु उनकी पराजय सम्पूर्ण नहीं हुई है। शास्त्र में "आत्मनोऽर्ध पत्नी" अर्थात् पत्नी को पति की अर्धांगिनी कहा गया है, अतः मुझे पराजित करके ही आप मेरे पति को अपना शिष्य बना सकते हैं।"**

किन्तु आचार्य शंकर किसी स्त्री से शास्त्रार्थ करने के पक्ष में नहीं थे, तब उभयभारती ने कहा—"यदि आप मुझसे शास्त्रार्थ नहीं कर सकते, तो आपको अपनी पराजय स्वीकार करनी होगी।" ऐसा सुनते ही आचार्य शंकर उनसे शास्त्रार्थ करने में सहमत हो गए। इस प्रकार १७ दिन तक उन दोनों में शास्त्रार्थ चलता रहा, और दोनों पक्षों में कोई दुर्बल प्रतीत नहीं हो रहा था, उभयभारती की विचार- शैली, पाण्डित्य,

गम्भीरता और विश्लेषण शक्ति से आचार्य बड़े ही विस्मित हुए।

१८ वें दिन उनकी विचार प्रक्रिया ने एक नया मोड़ लिया। मण्डन-पत्नी ने आसन पर बैठते ही आचार्य जी से प्रश्न किया— **"काम का क्या लक्षण है? काम-कला कितने प्रकार की है? शरीर के किस अंग में काम रहता है? किन-किन क्रियाओं से उसका आविर्भाव और तिरोभाव होता है ? शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष में पुरुष और नारी के शरीर में काम की ह्रास-वृद्धि कैसे होती है, और नारी किस प्रकार से पुरुष के ऊपर कामकला का विस्तार करती है?"**

शंकर इन सब प्रश्नों को सुनकर सिर झुकाये बैठे रहे और फिर कहा—हे देवी! आप शास्त्रीय प्रश्न उठायें, मैं उनका उत्तर दूंगा। एक संन्यासी से इस प्रकार के प्रश्न क्यों पूछ रही हैं?

इसके उत्तर में उभयभारती ने कहा— "क्यों यतिवर! कामशास्त्र क्या शास्त्र नहीं है? यदि आप सिद्ध संन्यासी हैं, तो आप जितेन्द्रिय हैं, कामशास्त्र-चर्चा में आपको चित्त विकार क्यों होगा?"

उन्होंने यह भी कहा— "कामशास्त्र की आलोचना से यदि आपको चित्त-विकार होता है, तो समझना होगा, कि अभी आप तत्व ज्ञान में पूर्ण प्रतिष्ठित नहीं हुए हैं... और तब आप गुरु होने के योग्य नहीं है।"

ये शब्द सुनकर आचार्य शंकर को बहुत ग्लानि हो रही थी, कि वे जीवन के इस महत्वपूर्ण पक्ष से क्यों वंचित रह गए, अतः **जब तक वे गृहस्थ जीवन को पूर्णतया समझ नहीं लेंगे, कि गृहस्थ जीवन क्या है? तब तक कामशास्त्र को भी भली-भांति नहीं समझ सकते, और इसका पूर्ण अनुभव प्राप्त करने के लिए पहले उन्हें गृहस्थ जीवन व्यतीत करना होगा,** अन्यथा उन्हें मण्डन-पत्नी को पूर्ण प्रामाणिक उत्तर न दे पाने के कारण उनकी शिष्यता को ग्रहण करना होगा। यह उनके व्यक्तित्व को ललकारने वाली बात थी, जो उन्हें कभी सहन न होती।

अतः उन्होंने बहुत सोच-विचार कर मण्डन-पत्नी से एक मास का समय मांगा और कहा—"मैं संन्यासी हूं और इस मुख से आपके प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सकूंगा, क्योंकि संन्यासी के लिए काम-त्याग करना ही तो शास्त्र का अनुशासन है, त्रिगुणातीत अवस्था में प्रतिष्ठित ज्ञानी को भी लोक संग्रह के लिए व्यवहारिक क्षेत्र में शास्त्र की मर्यादा रखनी पड़ती है, अतः मैं किसी दूसरे शरीर में प्रविष्ट होकर आपके प्रश्नों का उत्तर दे सकूंगा, यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो।"

मण्डन-पत्नी की स्वीकृति प्राप्त कर गृहस्थ जीवन को पूर्णतः भली प्रकार से समझने के लिए उन्हें एक राजा के शरीर में "परकाया प्रवेश प्रक्रिया" के माध्यम से प्रवेश करना पड़ा और राजा के रूप में गृहस्थ जीवन जीते हुए उन्होंने कामकला का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। एक मास में ही आचार्य पूर्ण गृहस्थ जीवन का अध्ययन कर, वापिस अपने योग-बल के माध्यम से संन्यासी वेश में आ गए और मण्डन-पत्नी के सभी प्रश्नों का पूर्ण प्रामाणिक उत्तर देकर विजयी कहलाए।

इसलिए मात्र संन्यास ग्रहण कर लेना ही मोक्ष प्राप्ति नहीं है, उसके लिए जीवन के दोनों पक्षों को पूर्ण करना आवश्यक है। **जीवन में आत्म-तत्व से साक्षात्कार के लिए जितना संन्यासी होना आवश्यक है, उतना ही गृहस्थ भी, क्योंकि बिना गृहस्थ में पूर्णता के संन्यास जीवन की पूर्णता असम्भव है।**

शिवावतार शंकराचार्य जी को भी संन्यास जीवन से वापिस गृहस्थ जीवन में राजा का रूप धर कर जाना पड़ा और जिन रहस्यों से, जिस ज्ञान से वे अज्ञात थे, उन्हें प्राप्त करना पड़ा, और तभी वे पूर्ण तत्वज्ञानी, सत्यदृष्टा ऋषि और सिद्ध आचार्य कहलाये।

अर्थात् जीवन में जब तक गृहस्थ जीवन के सभी आयामों की उपलब्धि नहीं होती, तब तक संन्यास जीवन अधूरा है, क्योंकि **जब तक गृहस्थ के सभी पक्षों को पूर्णता के साथ नहीं जीया जायेगा, तब तक कोई न कोई इच्छा मन में शेष अवश्य रह जायेगी और संन्यास जीवन खंडित हो जाएगा, इसके लिए सर्वप्रथम गृहस्थ जीवन में सम्पूर्णता ग्रहण करना आवश्यक है।**

जीवन मुक्ति एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु केवल संन्यास लेना ही आवश्यक नहीं है, अपितु गृहस्थ होना भी आवश्यक है। ये तो गाड़ी के दो पहियों की भांति ही हैं, जिसका एक पहिया गृहस्थ, तो दूसरा पहिया संन्यास है, अतः मानव जीवन की सर्वोच्चता के लिए दोनों ही महत्वपूर्ण एवं आवश्यक पक्ष हैं।

यह कोई आवश्यक नहीं है कि गृहस्थ जीवन को छोड़ने के बाद ही संन्यास ग्रहण किया जा सकता है। आज भी ढोंगी पंडित-पुरोहित इसी बात को मान्यता देते हैं, जो कि सर्वथा गलत है। गृहस्थ जीवन को त्याग देने से संन्यास ग्रहण नहीं हो जाता, संन्यास का अर्थ है—सभी वस्तुओं का न्यास कर देना अर्थात् मन में किसी प्रकार की कोई इच्छा अवशेष न रह जाए, केवल मात्र प्रभु चिन्तन हो, और यह गृहस्थ में भी सम्भव है। **गृहस्थ में रह कर मनुष्य संन्यास ग्रहण कर सकता है, उसके लिए गृह त्याग या सांसारिक वस्त्रों को त्यागने की आवश्यकता नहीं है,** और न घर छोड़ने और गेरुए वस्त्र धारण करने से संन्यास धारण हो जाता है, यह तो मात्र भ्रम है मानव-मन का, जिसे दूर करना होगा, क्योंकि इतने बड़े योगी, ऋषि को भी पुनः गृहस्थ में लौटना पड़ा... और इसी के आधार पर यह प्रामाणिकता के साथ कहा जा सकता है— **"गृहस्थ संन्यास जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है।"** ❋

ऐसी रंग दे कि रंग नाहीं छूटे

होली का पर्व होता ही इतना उमंग भरा है कि लोग महीने भर पहले से ही इसकी प्रतीक्षा करते हैं, और सभी अपनी इच्छानुसार इस पर्व पर पूर्णता के साथ प्रत्येक क्षण को अपने तन-मन, हृदय और प्राणों में समेट लेना चाहते हैं, चाहे वे गृहस्थ हों, संन्यासी हों, साधक हों अथवा तांत्रिक या मांत्रिक. . .

भंवरों की गुनगुन, चिड़ियों की चहचहाहट, कोयल की कूक जब पूरे वातावरण को गुंजायमान कर देती है, जब पेड़- पौधे नवल पत्तों के हरे-भरे रंगों से अपने-आप को सजा- संवार लेते हैं, जब तितलियां झूमती हुई, फूलों पर इधर-उधर भ्रमण करने लगती हैं, जब हिरन भी कस्तूरी की सुगन्ध से आकर्षित हो इधर-उधर नाचने-कूदने लगते हैं, तो फिर सम्पूर्ण प्रकृति रंग-बिरंगे रंगों से सुशोभित हो पूर्ण श्रृंगार युक्त दिखाई देने लगती है, जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रही हो, खिलखिलाती, मुस्कराती अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ. . .

क्योंकि किसी के आने की आहट उसके कानों में पहले से ही सुनाई देने लगती है, उसके श्वासों की सुगन्ध पुरवाई बनकर चारों ओर महकने लगती है, जिसके लिए वह सजी है, जिसके लिए उसने स्वयं को सुन्दर और आकर्षित करने वाले वस्त्रों से सजाया है, और जिसकी प्रतीक्षा में रत, वह पूर्ण श्रृंगार युक्त हो आंखें बिछाये खड़ी है, क्योंकि उसने उसके जीवन में चैतन्यता दी है, जीवन्तता दी है, प्राणश्चेतना दी है, वह उसी को तो निहार रही है, अपने सुन्दर, कटीले नेत्रों से एकटक, इतनी कोमलता और सौन्दर्य को देख मेघ भी हर्षित हो उठते हैं, और बरस उठते हैं पूरे वेग के साथ अपनी शीतल वर्षा से अवनी की चुनर को रंगने के लिए, उसे अपने प्रेम में आनन्द से सराबोर कर देने के लिए, वेसुध कर देने के लिए, वही और केवल वही क्षण तो होता है, उस आनन्दित कर देने वाली फुहार में भीगने और भिगो देने का, और केवल वही तो रंग होता है रंग जाने का उस शीतल और मदमस्त फुहार में।

होली का आगमन सभी के प्राणों को झंकृत कर देता है, सभी के दिलों में उमंग, उल्लास, जोश भर देता है, सभी उमंगित
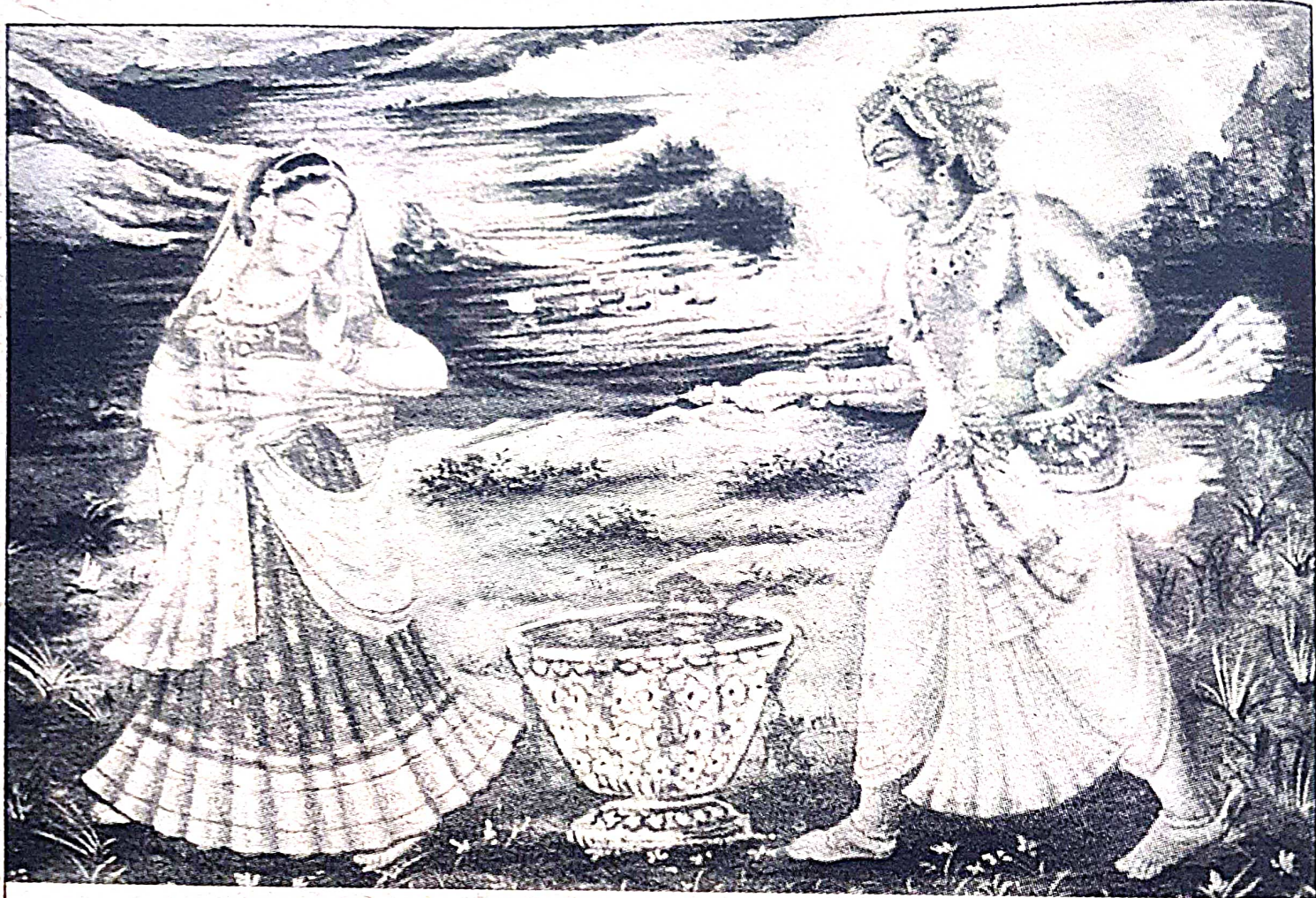
या अनुराग की काग लखां जहां रागती राग किसोर किसोरी।
त्यौं पद्माकर घाली घला फिर लाल हां लाल गुलाल की झोरी।
जैसी की तैसी रही चिपकी कर काहू न केसरि रंग में बोरी
गोरिन के रंग भीजिगौ सांवरो सांवरो के रंग भीजी सुगोरी।।

हो, उल्लसित हो नाचने-झूमने लगते हैं, सभी भंवरे की भांति फूलों का रस पी, मतवाले हो गुन-गुन कर छलिया वन गाने लगते हैं।

होली **"राग और रंग"** का पवित्र त्यौहार है। होली के आगमन के पूर्व ही जन-जीवन में वसंत अपनी मादकता का प्रभाव दिखाने लगता है, सबके दिलों में एक उमंग की लहर सी दौड़ने लगती है, जन-जीवन में उत्साह का, प्रेम का संचार होने लगता है। हम जहां प्रकृति से उन्मुक्त भाव से हंसना, गाना सीखते हैं, वहीं लोक-संस्कृति की आत्मा से फूटते रस भरे गीत भी सुनते हैं, और तब लोक-संस्कृति तथा गीतों की मधुमय सुगन्ध से समस्त प्रकृति मदमस्त हो उठती है।

"होली" शब्द सुनते ही द्वापर युग की याद हो आती है, जब कृष्ण, राधा और गोपियों के साथ यमुना तट पर होली खेला करते थे, अत्यन्त तन्मयता और मस्ती भरी होली, जब राधा और समस्त गोपियां कृष्ण के ही रंग में रंग गई थीं, जब उन्होंने अपने तन-मन पर कृष्ण की ही मनमोहक छवि अंकित कर ली थी, जब उन्होंने कृष्ण के ही रंग में रंगी चादर को तन पर ओढ़ लिया था, तभी तो होली का नाम लेते ही "ब्रज की होली" का स्मरण सर्वप्रथम हो आता है, एक ऐसा श्यामल रंग, जो कभी नहीं उतरा, और न ही कोई दूसरा रंग ही उस पर चढ़ सका।

. . . इतना गहरा, इतना सुन्दर, इतना आनन्दित कर देने वाला, कि उसके आगे तो सभी रंग फीके नजर आते हैं, जिसने तन को ही नहीं, अपितु पूरे जीवन को ही रंग दिया, उस प्रेम, रस और आनन्द की फुहार से, जो तन-मन पर वर्षा बनकर बिखरा था, उन गोप-ग्वालों और गोपिकाओं को प्रेम रस में भिगो देने के लिए, जिसका प्रत्यक्ष दर्शन हमें कवियों के गीतों और कविताओं में स्पष्ट झलकता है, और उनसे ही पता चलता है, कि वह दृश्य, वह आनन्द, वह रंग क्या था, और कैसा था, जिसमें वे रंगे थे, जिसमें वे लीन हुए थे, जो उनके जीवन का आनन्द था? कैसा था वह रंग बसंती, जिसने उन ब्रजवासियों को बेसुध कर, असीम आनन्द की उपलब्धि प्रदान की थी?

जैसे होली के विभिन्न रंग होते हैं, वैसे ही जीवन के भी विभिन्न रंग होते हैं, जिसमें हर मनुष्य को रंगना ही पड़ता है, अब चाहे वह रंग गेरुआ हो या काला. . . है तो रंग ही। मनुष्य को भी एक न एक रंग में अवश्य ही रंगना पड़ता है। हर रंग का जीवन में अपना अलग-अलग महत्व होता है। यहां गेरुआ रंग सुखों का, तो काला दुःखों का सूचक है।

गेरुआ रंग अक्सर संन्यासी व्यक्ति ही धारण करते हैं, गृहस्थ नहीं — लोगों के मन में यह भ्रामक धारणा घर कर गई है, कि इस रंग को संन्यासी व्यक्ति ही धारण करते हैं अन्य नहीं, जिन्होंने अपना घरबार छोड़ दिया हो, जो काम, क्रोध को त्याग चुके हों, जो प्रभु चिन्तन में लीन हों और जिन्हें दुनियादारी से कोई मतलब न हो— सर्वथा गलत है, क्योंकि रंग तो मात्र सूचक है उस संन्यास का, जो गृहस्थ जीवन में रहकर भी सम्भव है, यह रंग तो पवित्रता का बोध कराता है, कि अब सांसारिक क्रियाकलापों से वह परे है, अब उसे किसी प्रकार का कोई मोह नहीं है। गृहस्थ जीवन में रहकर भी वह प्रभु का चिन्तन कर सकता है, और गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी वह संन्यास की उच्चता को प्राप्त कर सकता है, ऐसा कोई बन्धन नहीं है, कि गृहस्थ में होते हुए संन्यास जीवन नहीं जीया जा सकता है।

जीवन को सभी रंगों में रंगते हुए आत्मलीन हो जाना – संन्यास का अर्थ है, और ये सभी रंग हैं– सुख, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, अच्छी पत्नी, पुत्र-पुत्री, धन - वैभव, समृद्धि इन सब में पूर्णता प्राप्त कर उस एक रंग को प्राप्त कर लेना, जिसे व्रज कुमारियां श्याम रंग कहती हैं, अर्थात् प्रभु में लीन हो जाना, एकाकार हो जाना।

''भोपाल शिविर'' में पूज्य गुरुदेव ने सभी साधकों एवं शिष्यों को ''संन्यास दीक्षा'' देते हुए उसके महत्व और उसके मूल स्वरूप का ज्ञान कराया था, जिससे कि साधक उसके मूल अर्थ को जान सकें, कि संन्यास वास्तव में है क्या? संन्यास का अर्थ है— जीवन को सभी रंगों में रंगते हुए आत्मलीन हो जाना, और ये सभी रंग हैं— सुख, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, अच्छी पत्नी, पुत्र-पुत्री, धन-वैभव, समृद्धि इन सब में पूर्णता प्राप्त कर उस एक रंग को प्राप्त कर लेना, जिसे व्रज कुमारियां श्याम रंग कहती हैं, अर्थात् प्रभु में लीन हो जाना, एकाकार हो जाना।

इस रंग में रंग जाने के लिए ही हमें प्रेरित करता है, यह होली का पावन त्यौहार, जो मनुष्य के समस्त विकारों को दूर कर, उन्हें प्रेम के रस से आप्लावित कर देने का पर्व है।

पूज्य गुरुदेव तो एक चित्रकार की भांति ही अपने प्रत्येक शिष्य के गृहस्थ जीवन में, सुन्दर और आकर्षक रंगों की रंगोली बनाकर उनको अपने दीक्षा, शक्तिपात और विभिन्न विशिष्ट साधनाओं के गेरुए रंग में रंगने के लिए, हर क्षण तत्पर हैं, और होली का त्यौहार ही मात्र ऐसा पावनतम पर्व है, जो विभिन्न रंगों को अपने में समेटे हुए, सभी को एक रंग में रंग देने का उत्सव है, जिसे पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में जोधपुर में मनाया जा रहा है।

जोधपुर ऐसी पावनतम, चैतन्यता युक्त, पवित्र एवं दिव्यतम स्थली है, जहां लगता है मानो सिद्धाश्रम ही इस धरती पर उतार आया हो, जहां गुरुदेव विराजमान हैं. . . और गुरुदेव के रंग में रंग जाना तो प्रत्येक शिष्य के जीवन की प्रथम और अंतिम कामना है, एक बहुत बड़े सौभाग्य की बात है, जब इस पृथ्वी पर साक्षात् पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में हम होली खेलेंगे. . . तो कौन नहीं रंगना चाहेगा उस पावनतम रंग में, जिसे प्रेम, आनन्द और पूर्णता कहते हैं, जिसे जीवन की सर्वोच्चता कहते हैं।

अपने ही रंग में रंग दो गुरुवर,
प्रेम रंग बरसा दो गुरुवर।
ऐसा रंग जो कभी नाहीं छूटे,
कृपा नेह बरसा दो गुरुवर।
होली के रंगों की भांति,
जीवन को हर्षा दो गुरुवर।
प्रेम रंग में रंगी चुनरिया,
ओढ़ पावन हो जाऊं गुरुवर।
अवनी पर अमृत छलका दो,
प्रेम रंग बरसा दो गुरुवर।।

हे गुरुदेव! इस रंगोत्सव पर हमारे जीवन की समस्त न्यूनताओं को दूर कर, अपनी प्रेममयी कृपा - दृष्टि से हमें रंग दीजिए न. . . जो रंग मस्ती, जोश, उमंग भर देने वाला है. . . जो रंग आनन्द से सराबोर कर देने वाला है. . . मदमस्त कर देने वाला है. . . प्रेम रस में डुबो देने वाला है. . . जिसके आगे हर रंग फीका है. . . हर रंग बेमानी है. . . ऐसे ही रंग में रंग दो भगवन्! जो कभी न छूटे . . . हे प्रभु! मेरी चुनरिया ऐसी रंग दो, कि यह रंग जीवन भर चढ़ा ही रहे छूटे नहीं—

''मोहे ऐसा रंग दे कि फिर ये रंग नाहीं छूटे!''

ये साधक बच्चे

*माता-पिता के संस्कारों का बच्चे पर कितना गहरा असर पड़ता है यह बच्चों की योग्यता से आंका जा सकता है उस पर भी जिस गुरु-मार्ग पर माता-पिता चल रहे हों और उस पर यदि बच्चे चलना शुरू कर दें, तो 'सोने पे सुहागा' वाली युक्ति चरितार्थ होती है। जिस प्रकार से अभिमन्यु ने वीर योद्धा के सभी गुण-संस्कार, चक्रव्यूह भेदन तक अपनी मां के गर्भ से सीख लिया था, उसी प्रकार से प्रत्येक बालक धार्मिक संस्कारों को अपनी मां के गर्भ से ही सीखना शुरू कर देता है। **छोटी उम्र में बालक को गुरु के सान्निध्य में रहने का अवसर मिले, तो फिर वह अपने अविभावकों से भी दो कदम आगे निकल जाता है, यह सिद्ध कर दिया है पूज्य गुरुदेव द्वारा दीक्षित हुए कुछ बालक-बालिकाओं ने,** जो बचपन से ही मंत्र, ध्यान, साधना एवं नैतिक ज्ञान को सीख रहे हैं—*

पानीपत (हरियाणा) के प्रसिद्ध अधिवक्ता **श्री विलायतीराम जी** के पौत्र (पोता) ध्रुव ने ढाई वर्ष की नन्हीं सी उम्र में अनेक संस्कृत मंत्रों को कण्ठस्थ करके, नियमित साधना द्वारा यह सिद्ध कर दिया है, कि अध्यात्म बच्चों की प्रगति के लिए, उनमें धार्मिक संस्कार रोपण के लिए अति आवश्यक है। **ध्रुव को अभी तक गुरु मंत्र, गायत्री मंत्र, चेतना मंत्र, लक्ष्मी मंत्र, गुरु स्तवन (कुछ भाग), आरती, चार-पांच हिन्दी-संस्कृत कीर्तन कण्ठस्थ हो चुके हैं।** वह नियमित रूप से पद्मासन में बैठकर आधा घण्टा गुरु साधना करता है, उसकी वाणी में ओज है। उल्लेखनीय है कि इसके पिता **श्री अनीश व माता श्रीमती अनीता ने पूज्य गुरुदेव से १०८ दीक्षाएं पूर्णरूप से लेने का संकल्प लिया है,** जिसमें आधी के लगभग विशिष्ट दीक्षाएं पूर्ण हो चुकी हैं, अब उसके माता-पिता अपने पूर्ण समय व श्रम द्वारा समर्पित भाव से गुरु सेवा में लगे हुए हैं।

ध्रुव, पानीपत

सात वर्षीय **कुमारी मयूरी ठाकुर** जिला साहेबगंज बिहार के साधक **राजेश ठाकुर** और **साधना** की पुत्री हैं। इन्होंने २१ अप्रैल १९९४ को इलाहाबाद में आयोजित जन्मोत्सव **''हीरक जयन्ती महोत्सव''** (शिविर) में पूज्य गुरुदेव से **''गुरु दीक्षा''** और **''पूर्ण सफलता प्राप्ति दीक्षा''** ली उसके बाद से ८ माह के अन्दर पढ़ाई, लिखाई, खेल कूद प्रतियोगिताओं में अपने स्कूल में, जो नाम कमाया, उसे देखकर विद्यालय के सभी व्यक्ति हतप्रभ रह गए। **मयूरी ने जुलाई ९४ के गुरु पूर्णिमा (पानीपत) शिविर में सवा लाख मंत्र-जप की गुरु साधना का शुभारम्भ कर ''संस्कार दीक्षा'' ली।** इस अनुष्ठान द्वारा मस्तिष्क- विकास और वाक्पटुता में बहुत प्रगति हुई।

मयूरी, साहेबगंज
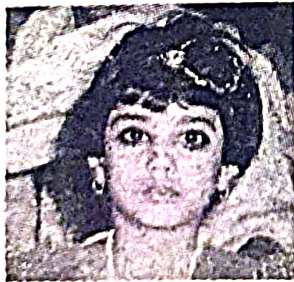
बड़ी बहन के पद्चिन्हों पर चलने का हठ छोटी बहन ५ वर्षीया **पल्लवी ठाकुर** ने करना शुरू कर दिया, और पानीपत (हरियाणा) शिविर में जुलाई ९४ को इन्होंने भी अपनी मां **श्रीमती साधना सुमन** के साथ **सामान्य दीक्षा** ली। वैसे इसके पूर्व ये कई दीक्षाएं इलाहाबाद में भी **विशिष्ट दीक्षा** के रूप में प्राप्त कर चुकी थीं। कु० पल्लवी दुर्गा मां की बहुत भक्त हैं, इसलिए पल्लवी ने **गुरु दीक्षा** व गुरु आज्ञा के बाद अपनी मां के साथ २१० माला **नवार्ण मंत्र** की पूर्ण कीं, और आज अन्य सामान्य बच्चों से अलग हटकर प्रतिभा विकास में अपनी एक अलग पहिचान बना रही हैं।

पल्लवी, बिहार

अमीनाबाद, लखनऊ, उ० प्र० के इलाहाबाद बैंक में कार्यरत साधक **श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव** की सात वर्षीया पुत्री **कु० अनुश्री श्रीवास्तव** पिछले दो वर्षों से गुरु मंत्र-जप, गुरु-पूजन पूर्ण श्रद्धा, भक्ति से कर रही हैं। जब भी कभी गुरुदेव के दर्शन करने वाली बात "अनुश्री" से कही जाती, तो वह तपाक से बोलती— "गुरुदेव जब लखनऊ आयेंगे, तभी दर्शन करूंगी और दीक्षा लूंगी"। कई स्थान के साधकगण अक्टूबर ९४ में जब नवरात्रि शिविर की मांग कर रहे थे, तब अनुश्री ने लिखकर दे दिया था— गुरुदेव इस बार लखनऊ में ही आयेंगे, और कहीं नवरात्रि का शिविर नहीं करेंगे। एक माह बाद जब लखनऊ शिविर की घोषणा हुई और अनुश्री की बात सत्य निकली, तब लोगों ने बालिका द्वारा की जा रही गुरु साधना, उपासना, भक्ति का सही मूल्यांकन किया। वर्तमान में इनकी मां **श्रीमती रेखा रानी श्रीवास्तव** अपनी छोटी पुत्री **स्वप्निल** को भी लखनऊ शिविर में दीक्षित कराकर साधनाएं सिखा रही हैं।

कु० अनुश्री, लखनऊ

१६-०५-१६६५
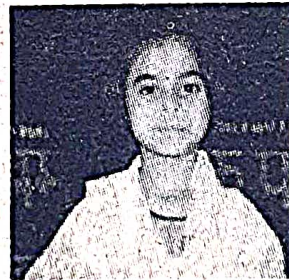
रोग मुक्ति एवं पूर्ण कायाकल्प हेतु

"नारायण कल्प"

> "आधुनिक युग में ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं मिलेगा, जो रोग ग्रस्त न हो। आज का खान-पान, रहन-सहन कुछ भी नियमित नहीं होने के कारण छोटे से छोटा शिशु भी रोग ग्रस्त हो जाता है, जिनका निदान डॉक्टरों की समझ में भी नहीं आता, इन विविध रोगों का निदान सम्भव है इस प्रयोग द्वारा . . ."

ब्रह्माण्ड का केन्द्र बिन्दु मानव है, हम मानव के अस्तित्व को नकार नहीं सकते, हर क्षण ज्ञान और विज्ञान दोनों ही उसके लिए प्रयत्नशील रहते हैं, कि जैसे भी सम्भव हो मानव सुखमय जीवन व्यतीत करे, जबकि विज्ञान ने आज बहुत तरक्की कर ली है और मानव के सुखी जीवन के लिए वह हर क्षण प्रयासरत रहा है, और उसकी सुख-सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए हर प्रकार के साधन भी जुटाए हैं, पर क्या वह मानव को पूर्णरूप से स्वस्थ और वास्तविक सुख की प्राप्ति करा सका है? क्या वह मानव की जर्जर तथा रोग ग्रस्त देह को समाप्त कर नवीन काया प्रदान कर सकने में सक्षम हो सका है? क्या वह उसे पीड़ादायक एवं कष्टप्रद जीवन से मुक्ति दिलाने में समर्थ हो सका है? क्या वह उसके दुःख, पीड़ा, बाधा, परेशानियों को समाप्त कर सका है?

इन सब प्रश्नों का उत्तर है— नहीं!

विज्ञान वास्तविक सुख देने में अक्षम है। देह का कायाकल्प होना कोई साधारण बात नहीं होती, यह तो ज्ञान द्वारा ही सम्भव हो सकता है, और ज्ञानियों ने इन सब प्रश्नों का हल अपनी कठोर साधना व तपस्या से ढूंढ निकाला है, जब उनके घोर परिश्रम से प्राप्त इन गूढ़ रहस्यों का अर्थ आज हमें सहज रूप में प्राप्त हो रहा है, तो कोई उसके महत्व को समझ नहीं पा रहा है।

मनुष्य के भौतिक जीवन में कोई एक समस्या नहीं होती, कोई एक रोग नहीं होता, जिससे छुटकारा पाया जा सके, उसके गृहस्थ जीवन में तो अनेक प्रकार की बाधाएं, व्याधियां होती हैं, जो उसके उन्नति की ओर बढ़ते कदम को रोक लेती हैं, जिसके फलस्वरूप मानव-जीवन व्यर्थ सा लगने लगता है, क्योंकि जब तक व्यक्ति रोग मुक्त नहीं होगा, तब तक वह पूर्णरूप से स्वस्थ नहीं कहला सकता। किन्तु जुकाम, कैंसर आदि को ही रोग नहीं कहते, अपितु विभिन्न परेशानियां, बाधाएं आदि भी व्यक्ति के लिए किसी रोग से कम नहीं होतीं, जब तक व्यक्ति पूर्ण पौरुष युक्त न हो, तब तक उसका व्यक्तित्व अधूरा है, अपूर्ण है।

ज्योतिषानुसार व्यक्ति के जीवन में कुछ ग्रह ऐसे भी होते हैं, जिनका दुष्प्रभाव पड़ने पर वे उस व्यक्ति को रोगी बना डालते हैं, फिर चाहे वह व्यक्ति लाख उपाय कर ले, वह ठीक नहीं हो पाता, हजारों-लाखों रुपये उसके इलाज में खर्च हो जाते हैं, उसके बावजूद भी वह स्वस्थ नहीं हो पाता, और सभी तरह के इलाज होम्योपैथिक, ऐलोपैथिक या आयुर्वेदिक करवा कर जब वह थक जाता है, तब मृत्यु का स्मरण होते ही उसके मन में भय और शोक व्याप्त हो जाता है, जिसकी वजह से वह समय से पहले ही भय ग्रस्त और मृत्यु के प्रति आशंकित हो जाने के कारण मृत्यु की गोद में चला जाता है।

यदि रोगी अपने महत्वपूर्ण क्षणों में से थोड़ा-सा समय निकाल कर मंत्र-जप करे, जो कि विशेष शक्ति युक्त हो, और जिसको यदि विशेष मुहूर्त में किया जाए, तो उसके महत्वपूर्ण लाभ उस रोगी को स्वस्थ और सुखमय जीवन प्रदान कर देते हैं। व्यक्ति इतनी मेहनत, दौड़-धूप और परिश्रम करने पर भी रोगमुक्त नहीं हो पाता, वह अपने-आप को अस्वस्थ ही महसूस करता है, क्योंकि आये दिन की उलझनें, परेशानियां, तनाव उसे रोगी बना देते हैं।

आज जबकि अधिकतर बीमारियों का इलाज विज्ञान ने ढूंढ निकाला है, किन्तु सभी का नहीं, इसीलिए जहां विज्ञान भी अपने घुटने टेक देता है, वहीं से ज्ञान का प्रारम्भ होता है। ज्ञान से तात्पर्य यहां उस मूल क्रिया-पद्धति से है, जो व्यक्ति को सुखमय जीवन प्रदान करती है। ज्ञान का तात्पर्य यहां उस ईश्वरीय शक्ति से है, उस मंत्र-बल से है, जिसके माध्यम से कुछ भी सम्भव हो सकता है।

किसी भी व्यक्ति की दुर्बलता व शरीर की विकृति उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समाप्त कर डालती है, अपने शरीर, मन और सम्पूर्ण व्यक्तित्व को सजाने, संवारने और निखारने के लिए किसी विशिष्ट दैवी शक्ति की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को पड़ती ही है।

व्यक्ति असमय ही पड़ी चेहरे की झुर्रियों, आंखों के नीचे स्याह, बाल पक जाने आदि को देख बड़ा ही दुःखी और व्यथित हो जाता है, क्योंकि उसे समय से पहले ही अपने भीतर बुढ़ापे के लक्षण नजर आने लगते हैं। मानव-जीवन की तीन ही अवस्थाएं होती हैं— १. बाल्यावस्था २. यौवनावस्था ३. वृद्धावस्था, और हर व्यक्ति को इन तीनों अवस्थाओं से गुजरना ही पड़ता है, इसीलिए जब वह बुढ़ापे के लक्षण अपने अन्दर देखता है, तो उसे अपनी मृत्यु का भी आभास होने लगता है, जो उसे अन्दर तक झकझोर देती है।

दवाएं खाकर रोग समाप्त होने के बाद भी व्यक्ति अस्वस्थ बना रहता है? कारण होते हैं – ग्रह-नक्षत्र, इनको पूजा-पाठ द्वारा शान्त तो किया जा सकता है, किन्तु इनके प्रभाव से जो रोग शरीर में व्याप्त हो गया है, उसका समापन सम्भव है– 'नारायण कल्प' द्वारा ही।

क्या ऐसा नहीं हो सकता, कि वृद्धावस्था वापिस यौवनावस्था में बदल जाये, और हम फिर से पूर्ण स्वस्थ, निरोगी, भय रहित दिखाई दें, और अपने जीवन का आनन्द ले सकें? यह प्रश्न हर व्यक्ति के मानस-पटल में हर क्षण उमड़ता-घुमड़ता रहता है, पर क्यों?

. . .क्योंकि हर कोई यही चाहता है, कि वह अपने जीवन में हर क्षण यौवनवान बना रह सके, हरदम उसके चेहरे पर एक तरोताजगी, नूर और तेजस्विता झलकती हुई दिखाई दे, वह हर क्षण मस्ती में डूब सके, आनन्द से सराबोर हो सके, क्योंकि जब तक जीवन में उत्साह, उमंग, आनन्द और मस्ती नहीं होगी, तब तक जीवन पूर्ण नहीं कहला सकता।

''धन्वन्तरी'' ने भी स्पष्ट शब्दों में प्रमाण के साथ कहा है– ''वृद्धावस्था को यौवनावस्था में बदला जा सकता है'', और ऐसा तब सम्भव हो सकता है, जब शरीर का पूर्णरूप से कायाकल्प हो , जिसे ''नारायण कल्प'' के सिद्ध होने पर प्रत्येक साधक कर सकता है, और उसमें सफलता भी प्राप्त कर सकता है, क्योंकि यह

अपने-आप में एक श्रेष्ठतम प्रयोग है। नारायण कल्प– वह प्रक्रिया, जिसके द्वारा वह अपनी सड़ी-गली, जर्जर काया के बदले में एक सुन्दर, सुगठित और आकर्षित कर लेने वाली काया को मात्र मंत्र-बल की शक्ति द्वारा पुनः प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है, किन्तु इसके लिए आवश्यकता है– संयम की। आवश्यकता है– "नारायण कल्प मंत्र" और "यंत्र" के प्रति श्रद्धा की। आवश्यकता है– उसके प्रति पूर्ण आस्था और विश्वास की।

क्योंकि मंत्र-बल द्वारा इस "नारायण कल्प" से ऐसी ऊर्जा का संचरण होता है, जो रोगी के हृदय के भीतर, उसके रोम-रोम को आभा युक्त कर, उस साधक का उस मंत्र और यंत्र के देवता से सामञ्जस्य स्थापित कर देती है, जिसके फलस्वरूप वह निरोगी हो जाता है, तथा उसकी सम्पूर्ण देह में "कायाकल्प" की प्रक्रियां प्रारम्भ हो जाती है, और वह पूर्ण स्वस्थ और यौवनवान बन जाता है।

जीवन में संशय, दुःख, पीड़ा, व्याधि, बाधा, शोक, भय यही तो रोग के मूल कारण हैं, जिनकी वजह से व्यक्ति हर क्षण अस्वस्थ और वृद्ध दिखाई देता है, और जब तक रोग की इस मूल जड़ को ही उखाड़ कर नहीं फेंका जाएगा, तब तक व्यक्ति स्वस्थ हो ही नहीं सकता, किन्तु अपने-आप में पूर्णरूप से रोग मुक्त, भय रहित हुआ जा सकता है, अपने-आप को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता है, और वह भी मंत्र-जप द्वारा।

मंत्र शक्ति तथा विधिवत सम्पन्न किये गये प्रयोग का इतना अधिक प्रभाव पड़ता है उस साधक के चित्त पर, कि वह उसी क्षण से अपने शरीर को हल्का अनुभव करने लगता है, और कुछ ही समय के अंतराल बाद वह स्वतः ही स्वस्थ और सुन्दर दिखने लगता है, उसका धीरे-धीर कायाकल्प हो जाता है।

जब व्यक्ति चारों तरफ से हताश और निराश हो जाता है, तब वह ईश्वर की शरण में जाता है, और उनकी पूजा-आराधना कर अपने सुखमय जीवन की कामना करने लगता है, परन्तु यह संशय उसके मन में रहता ही है, कि शायद पूर्ण हो जाए, किन्तु उसी पूजा को, उसी आराधना को यदि एक विधिवत तरीके से कर रोग मुक्त, स्वस्थ एवं सुखी होने की कामना की जाए, तो वह इस "नारायण कल्प" द्वारा अवश्य ही सम्पन्न हो सकती है, तब व्यक्ति या साधक ज्यादा सुन्दर और पूर्णरूप से स्वस्थ हो जाता है, तब वह औरों से ज्यादा सुखी व सम्पन्न दिखने लगता है, क्योंकि उसके शरीर का पूर्ण कायाकल्प जो हो जाता है। इस प्रयोग को निम्न प्रकार से करें–

सामग्री : नारायण यंत्र, नारायण चक्र, पीली हकीक माला।

दिवस : १६ मई १९९५, मंगलवार, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, द्वितीया या अन्य किसी भी **मंगलवार** को प्रातःकाल या रात्रि में अपनी सुविधानुसार कभी भी प्रयोग किया जा सकता है।

विधि

१६ मई को ही अथवा एक दिन पहले अर्थात् १५ मई को साधक दो अशोक के पत्ते तोड़कर ले आए, फिर अपने पूजा स्थान पर स्नान कर पीले आसन पर बैठे तथा अपने सामने चौकी पर पीला वस्त्र बिछा कर कुंकुम या रोली से ॐ लिखकर 'नारायण यंत्र' स्थापित करे। अशोक के पत्तों पर हल्दी घोल कर निम्न यंत्र अंकित करे, यंत्र लिखने के लिए अशोक की लकड़ी की बनी हुई कलम प्रयोग करे, यंत्र इस प्रकार बनाये–

११	१	२१
६	०	५
२७	३	२६

इन पत्तों को यंत्र के ऊपर रख दे तथा उस पर 'नारायण चक्र' रखे। पीले पुष्प और पीले रंगे हुए चावलों से संक्षिप्त पूजन करे तथा दैनिक साधना विधि के अनुसार न्यास सम्पन्न कर ध्यान करे–

उद्यत्-प्रद्योतन-शत-रूचिं तप्त-हेमावदाभम्,
पार्श्व-द्वन्द्वे जलधि-सुतया विश्व-धात्र्या च जुष्टम्।
नाना-रत्नोल्लसित-विविधाकल्पमापीत-वस्त्रम्,
विष्णुं वन्दे दर-कमल-कौमोदीकी-चक्र-पाणिम्।।

इस प्रकार ध्यान कर भगवान नारायण से अपनी मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करे तथा 'पीली हकीक माला' से निम्न मंत्र का ५ माला जप सम्पन्न करे–

मंत्र

ॐ नं नृणाय कायाकल्प पूर्णत्व
सौन्दर्य प्राप्तये फट्

इस प्रकार मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् पूजन में उपयोग की गई सामग्री यंत्र, चक्र तथा माला को पीले रंग के कपड़े की पोटली में बांधकर नदी में विसर्जित कर दे।

व्यापार वर्धक प्रयोग

यह प्रयोग शुक्रवार को करना चाहिए, सामने किसी पात्र में **बिल्ली की नाल** रखकर उसे सिन्दूर से रंगना चाहिए, फिर उस पर केसर का तिलक कर सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर निम्न मंत्र का ११ माला **कमलगट्टे की माला** से जप करें–

मंत्र : ॐ श्रीं श्रीं श्रीं परमा सिद्धि व्यापार वृद्धिं नमः।

मंत्र- जप पूरा होने पर सिद्ध बिल्ली की नाल को लाल वस्त्र में लपेट कर दुकान में रख दें तो आश्चर्यजनक रूप से व्यापार में वृद्धि होती है। माला को नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

ऑडियो : प्रति कैसेट ३०/-

पत्रिका विशेषांक

"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" मासिक पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित होने वाली साधनाओं का सम्पूर्ण विवेचन, मंत्रों का उच्चारण और उसकी गोपनीयता को स्पष्ट करती ये कैसेटें—

(१) सिद्धाश्रम सम्पूर्ण सिद्धि विशेषांक (माह - दिसम्बर ६४)
(२) तंत्र विशेषांक (माह - जनवरी ६५)
(३) महा शिवरात्रि विशेषांक (माह - फरवरी ६५)

भजन सौरभ

मन ही धूप . . . मन ही छांव . . . जब मन प्रसन्न होता है तब हृदय में प्रेम की हिलोरें उत्पन्न होती हैं . . . कुछ यूं ही आनन्द बिखेरते भजन सौरभ के ये कैसेटें — **भजन सौरभ (I), भजन सौरभ (II), भजन सौरभ (III)**

दैनिक साधना विधि

नित्य दैनिक साधना में प्रयोग किए जाने वाले मंत्र और साधना का पूर्ण विधि- विधान है इस कैसेट में।

वीडियो : प्रति कैसेट २००/-

नवरात्रि

नवरात्रि पर्व पर किए जाने वाले अति विशिष्ट प्रयोग . . . जिसे पूज्यपाद गुरुदेव ने स्वयं सम्पन्न करवाया है। आप भी इस कैसेट के माध्यम से इस प्रयोग को सम्पन्न कर लाभ उठा सकते हैं।

स्वर्णदेहा अप्सरा

आयु, वर्ग का कोई बन्धन नहीं होता इस साधना के लिए। सहजता से सिद्ध हो जाने वाली अप्सरा। जिसे इस कैसेटे में वर्णित प्रयोग के माध्यम से कई साधकों ने सिद्ध किया है, आप भी . . . .

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

भगवती जगदम्बा प्रत्यक्ष साधना शिविर

दिनांक ०१/०४/९५ से ०८/०४/९५

शक्ति साधना में सर्वाधिक महत्व "नवरात्रि महोत्सव" का ही है, और इनमें भी केवल दो "वासन्तीय नवरात्रि" और "शारदीय नवरात्रि" प्रमुख हैं।

शक्ति का उद्गम स्थल तो मानव - शरीर के भीतर ही है, लेकिन वह ढका है, अज्ञान, दोष-पाप के आवरण द्वारा।

इस शक्ति भाव को जाग्रत करना है, एकाग्र भाव से "पराम्बा मां भगवती" की साधना द्वारा, जो जगत की आधार शक्ति हैं, और जो शिव की शक्ति हैं।

कुण्डलिनी जागरण के दिव्य भाव की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सकती है हर एक के भीतर, यदि उसमें लगन है, इच्छा शक्ति और संकल्प के साथ आगे बढ़ने की कामना है।

नवरात्रि पर्व सोये हुए भाग्य को जगाने का पर्व है, क्योंकि भाग्य का लेख केवल शक्ति सम्पन्न होकर ही नवीन रूप से लिखा जा सकता है।

पराम्बा शक्ति मां भगवती का सबसे प्रबलतम स्वरूप है— "मां काली", और जब मां काली अपना वरद्हस्त साधक पर रखती हैं, तो वह अपने जीवन में सांसारिक चक्रव्यूह को भेदते हुए बढ़ता ही चला जाता है अपने लक्ष्य की ओर, तीव्र गति से। मां काली की सिद्धि से, मार्ग के कांटे बन जाते हैं— पुष्प, और बाधाएं बन जाती हैं — साधारण कण। शत्रु हो जाते हैं— निर्जीव, और उदित होता है— पराक्रम भाव।

साधना करनी है महाकाली की, जो कि चामुण्डा हैं, महामाया हैं, अम्बिका, दुर्गा, कालरात्रि हैं।

इस नवरात्रि में महालक्ष्मी, जो त्रिभुवन मोहिनी देवी हैं, जिनकी माया से ही यह संसार गतिमान है, उस महालक्ष्मी का आह्वान करना है, नमन करना है, इस विशेष नवरात्रि महोत्सव में, जिनके स्वरूप हैं— श्री, पद्मा, कमला, लक्ष्मी।

नवरात्रि महोत्सव में पराम्बा महाशक्ति के "महा सरस्वती" स्वरूप का आह्वान कर अपने भीतर आरोहित करना है, जो महाविद्या, महावाणी भारती, वाक्ब्राह्मी, वागेश्वरी हैं, जिनकी कृपा से साधक जीवन में उस शक्ति को प्राप्त करता है, जिससे उसका यश चारों दिशाओं में फैलता है, तथा उसे 'वाक् सिद्धि' एवं 'वशीकरण सिद्धि' प्राप्त होती है।

वास्तव में नवरात्रि तो शतअष्टोतरी साधना-सिद्धि पर्व है, जब शक्ति के १०८ स्वरूपों का आह्वान कर उन्हें चैतन्य किया जाता है।

गुरु शक्ति पीठ कराला

इस बार "वासन्तीय नवरात्रि महोत्सव" का "गुरुशक्ति-पीठ कराला" में विशाल आयोजन होगा, जिसमें साधना के नए आयामों के साथ एक नवीन अध्याय
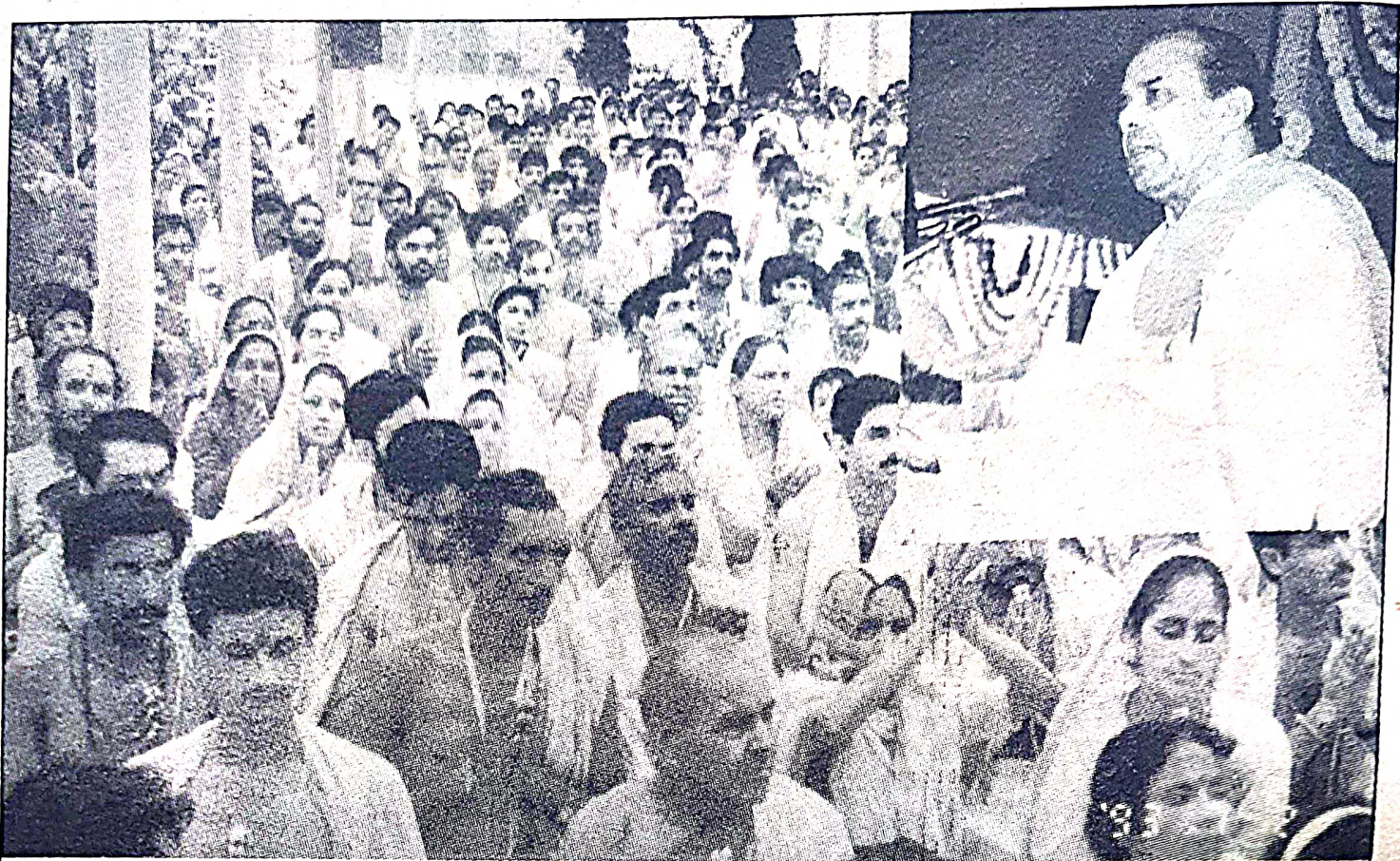
जुड़ेगा, जिसके साक्षी होंगे गुरुदेव **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"** एवं **"श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी।"** शक्ति साधना के इच्छुक हर साधक को आमंत्रण है, कि वह आश्रम में आकर, इस साधना शिविर में भाग लेकर जीवन में आगे बढ़ने के लिए अपने कदमों को गतिमान करे।

शक्ति साधना का यह विशेष उत्सव केवल साधुओं, संन्यासियों अथवा तांत्रिकों के लिए नहीं है, **यह पर्व तो आयोजित किया जा रहा है, उन साधकों के लिए, जो अपना सांसारिक धर्म निभा रहे हैं, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपने-अपने कार्यों द्वारा अपनी आजीविका चला रहे हैं।** यह शिविर है उनके लिए, जो गृहस्थ जीवन में पूर्णरूप से जुड़े हैं, क्योंकि यह उनका कर्त्तव्य है, लेकिन इसके साथ ही साथ अपने गृहस्थ जीवन को सुन्दर से सुन्दरतम रूप में परिवर्तित करते हुए जीवन का वह मूल आनन्द तत्व प्राप्त करना चाहते हैं, जिसके बिना जीवन में एक प्यास सी है, कि सब कुछ अधूरा सा है।

यह साधना पर्व है उनके लिए, जो अपने जीवन की कमियों को, जो चाहे इस जीवन के कृत्यों द्वारा आई हो अथवा पूर्वजन्म के दोषों के कारण, उन सभी कमियों को दूर कर जीवन में परिपूर्णता प्राप्त करना चाहते हैं।

इस शिविर में सम्मिलित होंगे समाज के हर वर्ग के लोग, कोई प्रोफ़ेसर है, तो कोई इंजीनियर, डॉक्टर, सरकारी अधिकारी, बेरोजगार, व्यापारी अर्थात् समाज के हर वर्ग के लोग इस महापर्व पर उपस्थित होकर नौ दिन तक खो जाते हैं — ज्ञान, ध्यान और शक्ति के उस चैतन्य वातावरण में, जिसकी प्यास उन्हें पूरे वर्ष रहती है।

यह शिविर आत्म-शुद्धि, आत्म-कल्याण, आत्म-परीक्षा और आत्म-शक्ति के पूर्ण स्वरूप- दर्शन का शिविर है।

"अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार" जोधपुर एवं दिल्ली द्वारा आप सभी को इस शक्ति महोत्सव का आमंत्रण है, स्वयं आएं, पत्नी के साथ आएं अथवा पूरे परिवार के साथ आएं, और जीवन का एक नवीन अनुभव, अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त करें।

सभी साधकों का, पूज्य गुरुदेव के शिष्यों का एवं धार्मिक बन्धुओं का स्वागत है, जो इस जाज्वल्यवान पराम्बा शक्ति मां भगवती के त्रिविधि स्वरूप महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती साधना से युक्त 'भगवती जगदम्बा प्रत्यक्ष साधना शिविर' में भाग लेना चाहते हैं। इस शिविर में पूज्य गुरुदेव "डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी" एवं "श्री नंदकिशोर श्रीमाली जी" आठ दिनों तक साधनात्मक ज्ञान प्रदान करेंगे और साथ ही पूज्य गुरुदेव प्रदान करेंगे अपनी तपस्या का अंश विशिष्ट दीक्षाओं के शक्तिपात, दिव्यपात व ऊर्ध्वपात के द्वारा, जो आपके भविष्य के दिशा निर्देश का आधार बन सकेगा। साधना की बारीकियां, शास्त्रोक्त पद्धति से स्वयं गुरुदेव के श्रीमुख से सुनकर साधक नित्य प्रति साधना स्वयं सम्पन्न करेंगे, और अपने- आप को एक नए वातावरण में पायेंगे, जिसमें शांति है, और जीवन का वास्तविक दर्शन है।

(विशेष – कवर के तीसरे पेज को देखें)

ज्वल-ज्वल शूलिनी

(दुष्ट ग्रह विनाशिनी)

उस रात मुझे रह-रह कर भय लग रहा था, कभी कोई पास खड़ा हुआ महसूस होता, तो कभी लगता, कि कोई कान में फूंक मार रहा है, और कभी कोई तेजी से पास से गुजर गया महसूस होता . . .रात भर सो नहीं पाया, पसीने-पसीने होता रहा, सुबह इसी कारण सिर में दर्द था। कॉलेज जाने का बिलकुल भी मन नहीं था, फिर भी मां के जोर देने पर, कि दोस्तों में जाकर मन बहल जाएगा, चला गया, वहां जाकर थोड़ा आराम मिला और हंसी-मजाक में ही दिन बीत गया।

दोपहर बाद जब घर पहुंचा, तो फिर वही घबराहट, वही परेशानी, कुछ समझ में नहीं आ रहा था, कि ऐसा क्यों हो रहा है। मां को बताया तो बोली— सो नहीं पाया, इसलिए ऐसा हो रहा है, फिर तो यह रूटीन-सा बन गया, न कॉलेज में मन लगता था, न दोस्तों में, न ही घर में खाना-पीना, सोना, हंसना सब खत्म होता सा लगता था। दोस्त बहलाने की कोशिश करते पर ज्यादातर नाकामयाब रहते।

इसी तरह एक लम्बा समय बीत गया, मैंने बी०ए० पास कर लिया था, आगे पढ़ने की इच्छा खत्म हो चुकी थी, कि पड़ोस में एक नया परिवार कहीं गोरखपुर की तरफ से ट्रांसफर होकर आया। वे लोग काफी मिलनसार तथा धार्मिक प्रवृत्ति के थे। **उनका मेरी ही उम्र का एक लड़का था, उसकी आंखों में एक विशेष चमक थी, वह ज्यादातर मौन रहता, कभी-कभी आमना-सामना होता, तो वह मुस्करा देता था, "हैलो" कहने पर जवाब देता, तो सम्मोहन की फुहार सी उसके मुंह से निकल पड़ती।** उसको देख कर मन आनन्द से भर जाता, कॉलोनी में सभी उसके साथ बात करना चाहते, और लड़के-लड़कियां सभी तेजी से उसके दोस्त बनते चले गए।

उसके चेहरे पर गजब का आकर्षण था, वह जिसकी तरफ देख कर मुस्करा पड़ता, वही उसका हो जाता, नाम भी सुन्दर था "अतुल"। फिर पता ही नहीं चला, कि कब हम दस ही दिनों में बहुत अच्छे मित्र बन गए। हम दिन में एक साथ एक-दो घंटे के लिए अवश्य मिलकर कहीं बैठते, किसी पार्क में चले जाते, कहीं नहर के किनारे घूमने चले जाते। बातचीत के विषय भी उसके अनोखे थे, वह कभी "प्रकृति" के बारे में बात करता, कभी "भगवान", तो कभी "युवा पीढ़ी क्या कर सकती है?" इस विषय पर, मैं तो सिर्फ सुनता रहता।

वह घंटा भर एक ही विषय पर बोलता रहता, फिर अचानक मौन हो जाता, कभी आस-पास कोई आहट सी सुनने की कोशिश करता, और इसी तरह समय बीतता गया। कॉलेज खुल गए, वह भी मेरी क्लास का ही विद्यार्थी बना, हम वैसे ही साथ-साथ जाते और साथ-साथ लौटते। मेरी अवस्था अब भी कभी-कभी वैसी ही हो जाती, कभी-कभी सिर दर्द, कभी पेट खराब रहता। **घर में मेरे कारण परेशानियां खड़ी हो जातीं, कभी पिताजी से झड़प, कभी बहिन से झगड़ा, पिताजी भी परेशान रहने लगे थे। हर महीने एक अच्छी-खासी रकम मुझे डॉक्टरों को दिखाने, दवाइयां खरीदने पर खर्च हो जाती, पर मुझे किसी भी चीज से आराम नहीं मिलता था।**

मुझे आराम मिलता, तो केवल अतुल के साथ में, जितनी देर मैं उसके साथ रहता, बस उतनी देर तक ही, उसका साथ छूटते ही मन बेचैन होने लगता। अब लोग पिताजी को सलाह देते थे कि किसी ने कुछ कर दिया है, जिससे पिताजी की आमदनी पर काफी विपरीत प्रभाव पड़ा था, इससे पिताजी परेशान थे, ऊपर से मेरा चिड़चिड़ा व्यवहार घर में शांति खत्म कर रहा था।

ऐसे में मुझे केवल अतुल ही भाता, और कमाल की बात तो यह है, कि जब से वह परिवार आया है, मैं कभी उनके घर नहीं गया, पर मां कई बार हो आई थी। एक दिन मां ने ही मुझे बताया कि अतुल का अलग कमरा है, जिसमें कोई नहीं जाता। अतुल बहुत अधिक आध्यात्मिक प्रकृति का है, यह जानकर मुझे बड़ा कौतूहल हुआ, कि **२१ वर्ष की उम्र का लड़का इतना सुन्दर और आध्यात्मिक प्रवृत्ति! फिर एक दिन मैंने उसके साथ उसके घर चलने के लिए पूछा, तो उसने तुरन्त हामी भर दी,** उसे साथ लेकर मैं कॉलेज से ही सीधा उसके घर में गया, उसके घर का ड्रॉइंग रूम एक मंदिर जैसा था, उसमें देवी-देवताओं के चित्र लगे थे, और एक बहुत सुंदर पेन्टिंग लगी थी, कुछ देर तक तो मैं उस चित्र का आनन्द लेता रहा, मन में उसका कमरा देखने की तीव्र इच्छा हो रही थी, पर मैंने उससे कुछ कहा नहीं, कि दोस्त होने के नाते वह खुद ही मुझे

ले चलेगा, लेकिन उसने भी कुछ नहीं कहा।

चाय आई, सिर्फ मेरे लिए उसने चाय भी नहीं ली, बस मौन बैठा रहा और मुझे देखता रहा, चाय पीकर मैंने चलने की इच्छा प्रकट की, तो भी उसने रुकने के लिए नहीं कहा, बस चुपचाप मुझे छोड़ने गेट तक आ गया। अब मैं भी गम्भीर हो चुका था, **मुझसे रहा नहीं गया, तो गेट पर ही उससे पूछ लिया, अतुल! क्या बात है, गम्भीर क्यों हो? तो उसने मुझे बड़ी ही तीक्ष्ण दृष्टि से देखा, और बोला कि "कल तुम कॉलेज मत जाना, मैं तुम्हारे घर आऊंगा"।** ऐसा कहकर वह तेजी से वापिस मुड़ गया, मैं हैरान सा हुआ घर आ गया, मन में बहुत उथल-पुथल सी थी।

आज रात मैं कुछ चैन से सोया, सुबह जल्दी ही आंख खुल गई, याद आया कि चार दिन बाद कॉलेज का टूर जाने वाला है, सोचा, यदि अतुल जायेगा तो ही जाऊंगा और सोचते-सोचते सुबह हो गई, नहा कर अतुल का इन्तजार करने लगा। १० बजे के करीब मेरे सिर में तेज दर्द हुआ और मैं गश खा गया, तेज बुखार चढ़ गया और कब मैं बेहोश हो गया, इसका पता ही नहीं चला। दोपहर बाद अतुल कॉलेज से सीधा मेरे पास ही आ गया, डॉक्टर देखकर जा चुका था, मैं दवाई के असर से सो रहा था, अतुल ने हाथ धोकर मेरे सिर पर दायां हाथ रख दिया, मुझे ऐसा लगा कि जैसे किसी ने बर्फ की सिल्ली रख दी हो।

बुखार तेजी से कम होता चला गया, आंखें खोलीं, तो अतुल को अपलक ताकते हुए पाया, उसकी आंखों में लाली थी, **मुझे देखता पाकर उसने हाथ हटा लिया और कुछ देर आंखें बन्द करके बैठा रहा, उसके चेहरे पर तनाव था। धीरे से बोला, "इन दवाओं से कुछ नहीं होगा, मैं तुम्हारी मदद करूंगा",** उसने मेरी मां से मेरी जन्मकुण्डली लेकर अपने पास रख ली। कुछ देर उसे देखता रहा, फिर मुझे देखता रहा, फिर उठकर मेरे कमरे में घूमने लगा, कभी दरवाजे के बीच खड़ा हो जाता, कभी खिड़की से बाहर झांकता दिशाओं का अंदाज करता हुआ लगता। उसके चेहरे पर एक तेज उभर आया था, जींस-टीशर्ट पहिने वह कोई देवता सा लग रहा था। फिर चलते हुए बोला, "कल सुबह घर आ जाना, १ बजे एक पंडित के पास चलेंगे", मां को तसल्ली देकर वह चला गया।

ग्रहों के दुष्प्रभाव के कारण ही इसके पिता का व्यापार धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है, बहुत जल्दी ही आर्थिक तंगी और अनेकों समस्याओं में ये उलझ जायेंगे।

यदि ग्रह शांति का उपाय नहीं किया गया तो कोई भी दुर्घटना हो सकती है . . .

आज रात एक लम्बे समय के बाद मैं गहरी नींद सोया था, रात भर उसके ठंडे हाथ का स्पर्श माथे पर अनुभव होता रहा, सुबह तैयार होकर बैठ गया, ऐसा लगा ही नहीं, कि कल मैं इतना बीमार था। मैं ठीक १ बजे ही उसके घर पहुंच गया। "अतुल" अत्यन्त आनन्दित दिखाई दे रहा था, बड़ी शानदार मुस्कराहट के साथ उसने मेरा स्वागत किया, मोटर साइकिल उठाई और मुझे बैठाकर चल पड़ा। हम ४०-५० किलोमीटर के बाद शहर से काफी दूर निकल आए थे, अब मुझसे रहा नहीं गया, तो पूछ बैठा, **मुझे कहां ले जा रहे हो? जवाब में उसने, "बस थोड़ी दूर और" कहा और स्पीड बढ़ा दी। ५ मिनट के सफर के बाद कच्चे रास्ते पर मोटर साइकिल मोड़ कर धीरे-धीरे चलाने लगा।** ३-४ किलोमीटर चलने के बाद गांव के एक मंदिर में पहुंचे, जहां एक पुजारी आराम कर रहा था, फिर भी हमें शहर से आया जान कर हमारे पास आकर बैठ गया। अतुल ने उसे मेरी जन्मकुण्डली देखने की प्रार्थना की, उसने अनमने भाव का प्रदर्शन किया, तो अतुल ने उसके कान में धीरे से कुछ कहा, अब उसके चेहरे के भाव ही बदल गए और प्रसन्नता झलकने लगी। उसने हमारे लिए दूध मंगवाया और मेरी जन्मकुण्डली देखने लगा।

आधा घंटा गणना करने के पश्चात् वह बोला— इसकी ग्रह दशा बहुत ही शोचनीय है। इसी के ग्रहों के दुष्प्रभाव से इसके पिता का व्यापार भी खत्म हो रहा है, और शीघ्र ही इनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो जाएगी। यह सब सुनकर मेरा हौसला पस्त हो गया और "अतुल" भी गम्भीर हो गया। पंडित जी गम्भीर स्वर में बोले— उपाय तो मेरे पास है, पर समय नहीं है, क्योंकि मैं स्वयं एक अनुष्ठान में लगा हूं, यदि आप स्वयं कर सकें, तो उपाय बता दूं या कहें तो दूसरे पंडितों से करवा दूं, खर्चा काफी होगा, उसने २१ दिन का अनुष्ठान बताया, खर्च बताया, तो मैंने "पिताजी से पूछ कर ही जवाब दूंगा" कहकर अतुल की तरफ देखा, जो उठ कर देवी की प्रतिमा के पास चला गया था और पता नहीं क्या सोच रहा था।

दूध आ गया था, अतुल हमारे पास आ गया, हमने दूध पीया और वापिस सीधे अतुल के घर आ गए, रास्ते में मैंने अतुल को अनुष्ठान वाली बात बतायी,

खर्चा सुनकर अतुल बोला— "यह रहने दो, उपाय मैं बताऊंगा", ऐसा कहकर, मुझे घर छोड़ कर वह अपने घर चला गया।

अतुल के आश्वासन से मैं सन्तुष्ट था। पिताजी को पंडित की कही बातें बताई, पंडित ने मेरे बचपन की कुछ घटनाएं भी बताई थीं, वे बातें सुन कर मां-पिताजी को पंडित की बातों पर पूरा विश्वास हो गया, लेकिन अनुष्ठान वाली बात मैं उनसे छिपा गया। शाम को अतुल के घर गया तो पता चला, कि वह जब से घर लौटा है, तब से ही अपने कमरे में है। दरवाजा अन्दर से बन्द था, मैं कुछ देर इन्तजार करके लौट आया। सुबह गया तो अतुल ड्राइंग रूम में शांत, गम्भीर बैठा था, मुझे देखकर मुस्कराया भी नहीं और शांत स्वर में बोला— "तुम सही समय पर मुझे मिले हो, अन्यथा तुम्हारा परिवार बरबाद हो जाता"।

उपाय तो मेरी समझ में आ गया है, पर विधि-विधान के लिए मुझे अपने गुरुदेव से मिलना होगा।" मेरे पूछने पर उसने कहा— "गुरुदेव हिमालयवासी हैं, पर इच्छा करने पर या आवश्यकता पड़ने पर ही दर्शन देते हैं।" उनके दर्शन करने की इच्छा करने पर वह मुस्करा पड़ा, और बोला— "यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है, मैं पूछ कर बताऊंगा, तुम मुझे शाम को मिलना।"

शाम को वह मिला तो प्रसन्न था, बोला — "गुरुदेव विधान बताने के लिए मान गए हैं, यह एक प्रयोग है और इसे मैं तुम्हारे लिए करूंगा, प्रयोग सम्पन्न हो जाने पर तुम मेरे साथ गुरुदेव से मिलने चलना।" यह सुनकर मेरा मन शांत हो गया, मुझे अतुल पर पूरा विश्वास था, उसके स्वर की दृढ़ता मेरा मनोबल थी। मुझे हाथ-पैर धोकर, आने के लिए कह कर वह अपने कमरे में चला गया।

हाथ-पैर धोकर मैं उसके कमरे में बाहर ही पहुंचा था, कि एक सुगन्ध का झोंका सा आकर मुझसे टकराया, मन आनन्द से भर गया, यही सुगन्ध कभी-कभी अतुल के शरीर से भी आती थी, मैं धीरे से कमरे में घुसा तो चौंक गया, जमीन पर दाईं दीवार से लगी चौकी पर कुछ यंत्र रखे थे, आसन लगा था, दीपक, धूपदानी, एक माला, चन्दन आदि पूजा की कुछ जानी-पहिचानी वस्तुएं रखी थीं।

अतुल अपने बिस्तर पर बैठा मुझे देख रहा था, उसने मुस्करा कर मुझे अपने पास बैठा लिया और बोला— **"रात से तुम्हें रोज मेरे पास बैठकर मंत्र-जप करना होगा, एक घंटे का जप सात दिन तक करना है, बाकी क्रियाएं साथ-साथ बताता जाऊंगा। आज उसकी वास्तविकता जानकर मन बड़ा प्रसन्न था। साधना, तंत्र प्रयोग ये सब सुना तो था, पर यह पता नहीं था कि एक दिन मुझको भी करना पड़ेगा।** "वह देर तक मुझे तंत्र-मंत्र के बारे में बताता रहा। एक घंटे बाद उसने मुझे कल आने के लिए कहकर विदा कर दिया।

अगले दिन सुबह-सुबह उसके घर गया, तो उसकी मां ने बताया कि वह तड़के ही कहीं गया है, दोपहर तक आने को बोल गया है। मैं शाम को गया, तो पता चला कि मेरे लिए उसका फोन आने वाला है। थोड़ी देर बैठा ही था कि फोन आ गया, अतुल ही था, बोला— "तुम्हारे लिए गुरुदेव से यंत्र, माला लेने आया था, गुरुदेव ने रोक लिया है। अब तुम्हारा प्रयोग शुक्रवार की रात से शुरू करेंगे, गुरुदेव सहायता करेंगे"। मैं शांत मन से घर वापिस आ गया, और उस विशेष दिन का इन्तजार करने लगा।

आज अतुल मुझे प्रयोग शुरू करायेगा, मैं सुबह से ही उत्सुक था। उसके कहे अनुसार मैं सात्विक खाना खाता और उसी तरह रहना शुरू कर दिया था। कम बोलता था, मौन रहने से मन प्रसन्न रहने लगा था, रात को ठीक समय पर स्नान करके मैं उसके घर पहुंच गया। मैं धुले वस्त्र पहिन कर गया था, पर उसने मुझे एक धोती पहिनवा दी और एक आसन पर बैठा दिया। मेरे सामने एक चौकी थी, जिस पर लाल कपड़ा बिछा था, **सामने लाल चावलों की ढेरी पर एक यंत्र रखा था, यंत्र के सामने सरसों के तेल का दीपक लगाया तथा दाईं तरफ अगरबत्ती लगा दी थी, यंत्र के पीछे दीवार से लगा एक तेजस्वी योगी का चित्र था,** अतुल ने उनको श्रद्धा से प्रणाम करते हुए कहा— "ये मेरे गुरुदेव हैं, इनके आशीर्वाद से ही यह प्रयोग सफल होगा"।

वह स्वयं मेरे दाईं तरफ बैठ गया, उसकी आंखों में एक चमक सी थी, वह पूर्ण आत्मविश्वास से भरा हुआ था। ठीक समय १० बजे उसने दीपक प्रज्वलित कर दिया, अगरबत्ती जला दी, सबसे पहले मुझे मंत्र-स्नान कराया, उसने मंत्र बोला और

मैंने आचमनी से पानी अपने ऊपर छिड़क लिया, हाथ धोकर तीन बार आचमन कराया।

इसके बाद मेरे हाथ में जल देकर संकल्प कराया — "आज इसी क्षण से मैं आपको अपना गुरु स्वीकार कर रहा हूं, आप कृपा कर मुझे आशीर्वाद दें और मेरा प्रयोग सफल करें," ऐसा कह कर जल जमीन पर छोड़ दिया। अतुल ने मुझसे तांत्रोक्त पद्धति से गुरु-पूजन करवाया। पूजन समाप्ति पर उसने मुझे कागज पर लिखा मंत्र दिया—

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शूलिनी दुर्गायै फट्

और तेल में घुले सिन्दूर से यंत्र पर नौ बिन्दियां लगवाईं, जप करने की "लाल हकीक माला" पर भी नौ बिन्दियां लगवाईं तथा एक "रुद्राक्ष", जो यंत्र के सामने स्थापित था, उस पर एक बिन्दी लगवाई। अतुल ने उस मंत्र का उच्चारण समझाया तथा बिना हिले-डुले, एक घंटे तक यथासम्भव अपलक उस यंत्र पर देखते हुए मंत्र-जप करने के लिए कहा। माला जितनी भी हो जाए, उसकी गणना नहीं करनी थी, मैंने जप शुरू कर दिया।

५ मिनट ही बीते होंगे कि टांगें दुखने लगीं, बार-बार पलक झपक जाती, बड़ी बेचैनी के साथ जप पूरा किया, उठते समय टांगें जवाब दे गईं। अतुल ने मेरी बड़ी हिम्मत बढ़ाई, कपड़े बदल कर मैं घर वापिस आ गया, बड़ी बेचैनी में रात बीती।

अगली रात उसी समय पर धुली हुई लाल धोती पहिन कर मैं आसन पर बैठ गया, आज दिन में मैंने सविस्तार गुरु-पूजन समझ लिया था। धूप, दीप लगाकर संक्षिप्त गुरु-पूजन करके, मैंने मंत्र-जप शुरू कर दिया, अतुल शांत भाव से बस पास बैठा रहा, फिर मुझे एकाग्र देख कर बाहर चला गया। एक घंटे का जप आज कुछ सहज लगा। आज पता चला कि मेरी दिशा दक्षिण है, तथा वह यंत्र **"शूलिनी यंत्र"** है। मंत्र-जप पूरा कर, गुरुदेव को प्रणाम कर आसन से उठा और वस्त्र बदल कर घर आ गया, ऐसा सात दिन तक किया।

तीसरी और चौथी रात सामान्य ही बीती, लेकिन पांचवी रात कुछ भय सा लगा, मन में बेचैनी सी हुई, मन हुआ कि मंत्र-जप बन्द करके बैठ जाऊं, आंखें अपलक देखने से जलने सी लगी थीं, पर मैं गुरुदेव को देखता रहा और जप करता गया। छठी रात मन शांत था, एक सुगन्ध सी महसूस हो रही थी। मैं अपने अनुभव अतुल को बताता, तो वह मेरी हिम्मत बढ़ाता था।

आज अन्तिम और सातवीं रात्रि थी, मैंने पूर्ण तांत्रोक्त पूजन किया, मंत्र-जप किया और अन्त में जल समर्पण करके गुरुदेव की आरती के साथ प्रयोग सम्पन्न कर लिया। **सुबह-सुबह ही यंत्र, माला, रुद्राक्ष, चावल, अगरबत्ती की राख एक लाल कपड़े में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दी।** मन में अपूर्व शांति थी, इतनी शांति, इतना आनन्द पहले कभी महसूस ही नहीं हुआ था। तीसरे ही दिन पिताजी को एक बड़ा ऑर्डर मिला, घर में खुशियां जैसे तूफान की तरह उमड़ पड़ीं।

अतुल तो मेरा पूजनीय हो गया था। भय, परेशानियां, पिताजी का तनाव पता नहीं कहां लोप हो गए थे, फिर कब मैंने गुरुदेव से विधिवत दीक्षा प्राप्त की, कब साधनाएं करने लगा, यह सब कुछ स्वप्न जैसा लगा, ऐसा लगा ही नहीं, कि मैं इस तरह ग्रहों से या तंत्र प्रयोगों से पीड़ित भी रहा हूं। मेरी भी आंखों में आज वही चमक है, जो मैंने अतुल की आंखों में देखी थी, मेरी मुस्कराहट में भी वही सम्मोहन आ गया है, और आज कॉलेज के लड़के-लड़कियां मुझसे दोस्ती करने में आनन्द महसूस करते हैं। कल और आज में बहुत बड़ा अन्तर हो गया है।

यह सात दिवसीय रात्रिकालीन साधना है, इस साधना को साधक **२ मई मंगलवार,** वैशाख शुक्ल पक्ष सिद्ध योग तृतीया के दिन से प्रारम्भ कर सकते हैं या फिर अन्य किसी भी **रविवार** से इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है।

शत्रु वशीकरण प्रयोग

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, और इससे शत्रु वश में हो जाता है, फिर जैसा कहा जाता है, वैसा ही वह करता है।

रविवार के दिन **'नाग मुष्टिका'** लाकर, काले कपड़े में बांध कर अपने सामने रख दें, और तेल का दीपक लगा लें, फिर काली धोती पहिन कर, काले आसन पर बैठ कर, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर **'काली हकीक माला'** से निम्न मंत्र की ११ माला जप करें—

मंत्र— **ॐ भ्रां धुं धुं ठः ठः हुं हुं ॐ**

इस प्रकार यह पांच दिन तक करें, छठे दिन पोटली में बंधी हुई 'नाग मुष्टिका' शत्रु के घर के सामने या दुकान के सामने डाल दें, तो शत्रु का मन बदल जाता है, और वह पूरी तरह वश में हो जाता है। माला जमीन में गाड़ दें।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और शीघ्र सिद्धिप्रद है।

गागर में सागर

पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित

अरविन्द प्रकाशन जोधपुर की अद्वितीय कृतियां

प्रति पुस्तक मूल्य : 5/-

सौन्दर्य :

सौन्दर्य का आधार ही सृष्टि है, सृष्टि का आधार ही सौन्दर्य है, और सौन्दर्य ही ईश्वर की आराधना भी है, इसी मूल तथ्य को परिभाषित करती है यह पुस्तक आपके सम्मुख . . .

हंसा! उड़हूं गगन की ओर :

तुम्हें उस साधना के आकाश में, ज्ञान के आकाश में, आनन्द के आकाश में, पूर्णता के आकाश में उड़ते हुए जीवन का रस, जीवन का आनन्द और जीवन की पूर्णता प्राप्त कर लेनी है।

तारा साधना :

तारा सिद्धि के गोपनीय रहस्य को उजागर करती कलियुग की सर्वोच्च्य धन प्रदायक साधना . . .

स्वर्ण सिद्धि :

कोई कठिन नहीं है, सोना बनाना, इसी अज्ञात रहस्य को अपने में समेटे हुए है यह, जो दुर्लभ है प्रत्येक व्यक्ति, साधक व शिष्य के लिए।

मैं बाहें फैलाये खड़ा हूं :

तुम चाहे कितनी ही खामियों और न्यूनताओं से भरे हुए हो, पर तुम मेरे ही प्राणों के अंश हो, अतः इन समस्त न्यूनताओं को मैं अपने-आप ही दूर कर लूंगा, इसीलिए तो . . .

अप्सरा साधना सिद्धि :

जीवन की अद्भुत और पूर्ण सुखोपभोग देने वाली सौन्दर्यमयी साधनाएं, जिन्हें सिद्ध करने में शास्त्रीय दृष्टि से किसी प्रकार का कोई बन्धन या दोष नहीं है।

सिद्धाश्रम :

जिसका नाम स्मरण करते ही पवित्रता का बोध होता है, ऐसी दिव्य भूमि, जहां दिव्यात्माओं का वास है, जहां प्रवेश पाया जा सकता है, यदि . . .

जगदम्बा साधना :

साधनाओं का अनूठा क्रम उनकी बारीकियों को उजागर करता हुआ, जो सर्वथा गोपनीय रहा है, एक दुर्लभ पुस्तिका . . .

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- 110034, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7186700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

कश्मीर की घाटियों में आतंकवादियों के प्रभाव में वृद्धि होगी, तथा सरकार द्वारा आतंकवादियों से निपटने के लिए की गई सभी सुरक्षा व्यवस्थाएं कमजोर पड़ती दिखाई देंगी।

भारत-पाक सम्बन्धों में आन्तरिक कटुता में वृद्धि होगी तथा कश्मीर मामले को लेकर पाकिस्तान की प्रधानमंत्री चिन्तित रहेंगी। किसी भी देश के द्वारा पाकिस्तान की मदद न करने से आन्तरिक उथल-पुथल में वृद्धि होगी, तथा पाकिस्तान सरकार की स्थिति कमजोर होगी। भारत अपने रवैये में दृढ़ता बनाये रखेगा। भारत-पाक शांति के विफल होते प्रयासों का जिम्मेदार भी पाकिस्तान ही होगा।

भारत की अर्थ व्यवस्था तथा सुरक्षा व्यवस्था को लेकर प्रधानमंत्री तथा वित्त मंत्री द्वारा कड़े रुख अपनाने से पार्टी में तनाव वढ़ेगा। भारतीय जनता पार्टी की स्थिति मजबूत बनती दिखाई देगी, किन्तु भारतीय जनता पार्टी के ही सदस्य पार्टी की साख को गिराने का प्रयास करेंगे। अयोध्या में एक बार फिर राम मंदिर विवाद भड़काने की चेष्टा विफल होगी।

भारत विश्व शांति के प्रयासों में अग्रणी रहेगा, तथा शांति जैसे उच्च स्तरीय मामलों में सभी देशों की दृष्टि भारत की गतिविधियों पर ही स्थिर रहेगी, उन्हीं देशों में से कुछ देश भारत के प्रति आलोचनात्मक रवैया भी अपनाएंगे।

इस माह भारत में राजनीतिक क्षेत्र में शांति का वातावरण रहेगा। राजस्थान में गुटबन्दी तनाव का कारण बनेगी। उत्तर - प्रदेश में स्थिति सामान्य ही रहेगी। भारतीय वित्त व्यवस्था को लेकर वित्त मंत्री की चिन्ताएं बढ़ेंगी। वेतन नीति के बारे में पुनः विचार करने की योजना बनेगी।

उत्तराखंड का विवाद उलझने से उच्च स्तरीय नेताओं की परेशानियां बढ़ेंगी। रूस का भारत की ओर पुनः झुकाव होगा, सैनिक सहायता को लेकर रूस भारत की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाएगा। भारत में होता निरन्तर आध्यात्मिक विकास विदेशों में विशेष आकर्षण का मुख्य बिन्दु बनेगा। देश-विदेश में आध्यात्मिक सम्मेलन एवं सभाओं का विकास होगा।

भारत में एक विशिष्ट व्यक्ति के निधन से समस्त भारत एक बार फिर शोकग्रस्त स्थिति में डूबेगा। राजनेताओं में आपसी संघर्ष बढ़ेगा। बाढ़ तथा सूखा जैसी विभिन्न मौसमी आपदाओं से निपटने के विशेष प्रस्ताव पारित किए जायेंगे।

हरियाणा निरन्तर विकास के कार्यों में प्रयासरत रहेगा। कृषक वर्ग तथा श्रमिक वर्ग के व्यक्तियों के लिए हरियाणा सरकार नवीन योजनाओं को प्रारम्भ करने का विचार करेगी।

शेयर मार्केट

साधनात्मक तरीकों द्वारा शेयरों तथा शेयर मार्केट के बारे में संक्षिप्त भविष्यवाणी व जानकारी प्रकाशित की जाती हैं, तथा वह जिस प्रकार से सत्य उतरती है, यह अपने-आप में ही आश्चर्य का विषय है, और पत्रिका के पाठक जिस प्रकार से लाभ उठा रहे हैं, यह हमारे लिए गर्व का विषय है।

शेयर मार्केट में बढ़ते शेयरों की संख्या से ग्राहकों में एक उत्साह उत्पन्न हुआ है। जिन शेयरों का भाव मार्केट में वढ़ रहा था, उन का एकदम से लुढ़क जाना अपने-आप में ही विस्मयकारी है। अचानक परिवर्तित होती स्थिति से शेयर होल्डर तनाव की स्थिति में आएंगे। लगातार वढ़ती असामञ्जस्य की स्थिति से शेयरों की खरीद-फरोख्त पर विशेष प्रभाव पड़ा।

अपोलो टायर्स, एस्सार शिपिंग, हिन्दुस्तान डेवलप कॉर्प. केल्वीनेटर ऑफ इंडिया, एपल इंडस्ट्रीज, आरसी पाइप, एग्रो बोर्ड जैसे शेयर अचानक उछाल खाकर रुकी गति से धीरे-धीरे पुनः उछाल की स्थिति में आने लगेंगे। बजाज लीजिंग, कॉलगेट, चम्बल फर्टीलाइजर एंड केमीकल, दीवान रबर, दीयान टायर्स जैसे शेयरों के भाव में विशेष वृद्धि होगी।

जिन शेयरों के भाव थमे रहेंगे वे हैं— दीवान स्टील, एस्कोर्ट ट्रेक्टर, एस्सार गुजरात, फाइनोलेक्स पाइप, फ्लेक्स इन्डस्ट्रीज, इंडियापोली फाईबर। जिन शेयर धारकों ने निम्न शेयर खरीद लिए हैं, वे ऊहापोह की स्थिति में रहेंगे, इनके मूल्यों में शीघ्र ही कोई परिवर्तन होने की आशा दिखाई नहीं देती— हिन्दुस्तान लीवर्स, लार्सन एण्ड टुब्रो, रिलायन्स इंडस्ट्रीज, टिस्को, धामपुर सुगर मिल, जयमाता रोल्ड ग्लास, जेम्स होटल जैसे शेयरों के भाव गिरने की सम्भावना बलवती हो गई है।

इसके अलावा जितने भी शेयर हैं, वे लगभग अपनी यथावत् स्थिति में ही रहेंगे, थोड़ी-बहुत मंदी अथवा तेजी आना सम्भावित है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का आधार मनुष्य है, और जब से मनुष्य ने इस ब्रह्माण्ड को देखना-परखना आरम्भ किया, तब से उसके मन में अनेकों विचार पनपने लगे, तब से यह सूर्य क्या है. . . यह चन्द्रमा क्या है. . . मनुष्य का सृजन क्यों हुआ है. . . मनुष्य की उत्पत्ति किस हेतु हुई है, जैसे प्रश्नों को उसने सोचना-विचारना प्रारम्भ कर दिया, तभी से "ध्यान" की उत्पत्ति हुई है, क्योंकि ध्यान सम्पूर्ण

"जन्म लेना कोई बहुत बड़ी घटना नहीं होती और न ही किसी के जन्म लेने से बहुत बड़ी घटना घटती है, न राम के, न बुद्ध के, न ही महावीर के, अपितु यह बात ज्यादा महत्व रखती है कि क्या उन्होंने अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया, क्या वे प्रज्ञा पुरुष बन सके . . . ?"

मानव-जाति के विचार का आधार है।

एक आवश्यक तथ्य यह भी है, कि मनुष्य होना कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है, अपितु मनुष्य बनना अपने-आप में एक श्रेष्ठ उपलब्धि है, और उसके लिए यह आवश्यक है, कि वह निरन्तर ऊपर की ओर उठे, ऊर्ध्वमुखी बने, तभी उसे एक ऐसा जीवन प्राप्त हो सकता है, जिसमें चेतना हो, श्रेष्ठता हो, पूर्णता हो, दिव्यता हो, बुद्धत्व हो।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएं, बाधाएं, अड़चनें, कठिनाइयां और न्यूनताएं होती ही हैं, जो कि उसे एक शारीरिक दौर्बल्य एवं मानसिक तनाव युक्त जीवन जीने पर मजबूर कर देती हैं, और जब वह शारीरिक रूप से पीड़ित होने की अपेक्षा मानसिक रूप से अधिक पीड़ित एवं दुःखी हो जाता है, तो उसकी अवस्था अकथनीय हो जाती है।

विज्ञान की परिभाषा के अनुसार– "मानव-मस्तिष्क एक सेकण्ड में तीन लाख विचारों को जन्म देता है," किन्तु जब तीन लाख विचार एक सेकण्ड में मस्तिष्क पर प्रहार करेंगे, तो ऐसी अवस्था में मस्तिष्क अपने-आप में कमजोर और कुतर्की बनेगा ही. . . **इससे बचने के लिए मुनष्य के अन्दर श्रद्धा भाव का जाग्रत होना आवश्यक है, जो उसे "ध्यान प्रक्रिया" की ओर अग्रसर करता है, अतः जहां तनाव मुक्त जीवन है, वहां सुख है, सौभाग्य है, सन्तोष है, पूर्ण मानसिक तृप्ति है, असीम आनन्द की अनुभूतियां हैं**. . . किन्तु इसके लिए यह जरूरी है, कि हम अपने तर्क को, अपनी बुद्धि को, जो कि मानसिक तनावों को उत्पन्न करती है, और जो जीवन को मृत्यु के द्वार तक घसीटती हुई ले जाती है, उसे एक तरफ रखकर, श्रद्धापूर्वक अपने मन को एकाग्र कर प्रभु-चिन्तन में लीन हो सकें।

मानव-मस्तिष्क हर क्षण गतिशील रहता है, और यह गतिशील रहता है विचारों से, भावनाओं से। जब तक मस्तिष्क में विचार रहते हैं, तब तक बुद्धि अपने-आप में पुष्ट होती रहती है, और जब मस्तिष्क में कई प्रकार के विचार आते हैं, तब मनुष्य कई प्रकार के झूठ, छल, सन्देह के कटघरे में अपने-आप को खड़ा पाता है, इस प्रकार वह एक 'अधोमुखी' जीवन की ओर अग्रसर होता रहता है। 'अधोमुखी' का अर्थ है, चिन्ताओं, परेशानियों, दुखों तथा पीड़ाओं से ग्रसित जीवन।

हमारे पूर्वजों की आयु पूरे सौ वर्ष की होती थी, अब वह सिमट कर साठ वर्षों के करीब आ गयी है. . . . क्या वजह है? मानव-मस्तिष्क में प्रति सेकण्ड तीन लाख विचार आते हैं और जाते हैं, जितना ज्यादा विचार होगा, उसकी क्रिया- क्षमता उतनी ही जल्दी खत्म होगी और आयु सिमट कर सौ से साठ, फिर पचास के आस-पास पहुंच जायेगी, आवश्यकता है . . .

परन्तु मानव को चाहिए, कि वह एक "ऊर्ध्वमुखी" जीवन का निर्माण करे, ऊर्ध्वमुखी का तात्पर्य है, एक प्रकार की श्रेष्ठता, उच्चता, दिव्यता युक्त जीवन।

इसके लिए यह आवश्यक है, कि हमारा मस्तिष्क "विचार शून्य" हो। विचार शून्य मस्तिष्क का अर्थ है– एक ऐसी प्रक्रिया, जिसके द्वारा मस्तिष्क में कम-से-कम विचार उत्पन्न हों, जब ऐसा होगा, तब वह बाह्य समाज से कट कर अपने अन्तर्मन में प्रवेश कर सकेगा, क्योंकि अपने अन्तर्मन में प्रवेश करने की क्रिया ही "ध्यान" है. . . और जब यह ध्यान और गहरा होगा, तभी असीम अनुभूतियां, एवं आनन्द की प्राप्ति सम्भव हो सकेगी . . . और यही प्रक्रिया, जो उस मानव-मन को आत्म-तत्व का ज्ञान करा देती है, वह "समाधि" है।

"समाधि" का तात्पर्य है, बाह्य समाज से कटकर अपने अन्तर्मन में गहराई के साथ उतरने की प्रक्रिया, पूर्णरूप से अन्दर उतरने की क्रिया, अन्दर के ब्रह्माण्ड को देख लेने की क्रिया।

जब व्यक्ति अपने अन्दर इस क्रिया को आरम्भ कर देगा, तब उसे ब्रह्माण्ड के उन सभी प्रश्नों का हल– सूर्य क्या है? चन्द्रमा क्या है? मुनष्य क्या है? स्वतः ही मिलने लग जाएगा, तब उसे स्वयं अपने ही अन्दर समस्त ब्रह्माण्ड दिखाई देने लग जाएगा, और **तब उसे यह ज्ञात होगा, कि हमारे अन्दर जो कुछ है, उसका ही छायांकन हम बाहर देख पाते हैं, इसका अर्थ है कि हम अन्दर की ही वस्तु देखते हैं।**

अर्थात् जो ध्यानावस्था में चले जाते हैं, उन्हें ये सूर्य और चन्द्रमा नहीं दिखाई देते, क्योंकि वह तो बन्द हो गया है आंखों के भीतर ही, तब बाहर देखने की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है, क्योंकि जो कुछ बाहर पुत्र-पुत्री, बन्धु-बान्धव, पति-पत्नी

हमें दिखाई दे रहे हैं, वह सब कुछ तो हमारे हृदय के भीतर ही समाहित हैं. . . और हृदय के भीतर देखने की क्रिया अपने-आप में एक अहंमन्यता है, अद्वितीयता है, श्रेष्ठता है।

यह अद्वितीयता, यह श्रेष्ठता मानव को तभी प्राप्त हो सकती है, जब वह अपने मानसिक तनाव से मुक्त होकर विचार शून्य हो सकेगा, और यह विचार शून्यता उसे प्राप्त होती है— 'ध्यान प्रक्रिया' के माध्यम से, क्योंकि इस प्रक्रिया के माध्यम से वह अपने 'स्थूल शरीर' से 'सूक्ष्म शरीर' में प्रवेश करने लगता है. . . और जब ऐसा होता है, तब उसे सांसारिक कष्ट, पीड़ा, दुःख कुछ भी व्याप्त नहीं होता, और न ही भौतिक-सुखों का उसके जीवन में कोई अन्य महत्व रह जाता है।

इस प्रकार के आंतरिक ज्ञान की प्राप्ति, इस आत्म-तत्व की अनुभूति **''प्रज्ञा सिद्धि''** द्वारा सम्भव होती है। **प्रज्ञा सिद्धि द्वारा हम उस वास्तविक ज्ञान को अपने अन्दर समाहित करने की प्रक्रिया आरम्भ कर सकते हैं, जो वास्तविक है, जो रहस्यमयी है, जो अलौकिक है।**

जब मानव के भीतर ज्ञान का, प्राण-ऊर्जा का, प्राणश्चेतना का संचरण होने लगता है, तो वह 'समाधि अवस्था' को प्राप्त कर जीवन की सर्वोच्चता को, जीवन की वास्तविकता को, जीवन के पूर्ण आनन्द को प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

किन्तु यह पूर्णता, यह आनन्द, जो वास्तविक जीवन है, यह मनुष्य को तभी प्राप्त हो सकता है, जब वह 'प्रज्ञा सिद्धि प्रयोग' द्वारा मानसिक पीड़ा व तनावों से मुक्त हो, तभी वह 'ध्यान व समाधि' की प्रक्रिया में संलग्न हो सकेगा।

'प्रज्ञा सिद्धि प्रयोग' अपने-आप में एक सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने देह के भीतरी द्वारों में प्रवेश कर जीवन के आनन्द को प्राप्त कर सकने में समर्थ हो सकता है, तब वह अपने ऊपर लगे संकीर्ण संस्कारों को धुल सकता है, तब वह अपने छल, झूठ, कपट से भरे जीवन का शुद्धिकरण करने की क्रिया प्रारम्भ कर सकता है, तब वह अपने ऊपर से माया के आवरण को हटा कर आत्म-तत्व से साक्षात्कार कर सकता है।

अगर व्यक्ति अपने इस न्यूनताओं से भरे जीवन में उच्चता को प्राप्त करना चाहता है, अगर व्यक्ति अपने अधोमुखी जीवन से ऊपर उठकर ऊर्ध्वमुखी जीवन को प्राप्त करना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह इस दिव्य, श्रेष्ठ और अद्वितीय प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करे, क्योंकि इस प्रयोग को सिद्ध करने से वह उस पथ पर गतिशील हो जाता है, जो उसे एक ऊर्ध्वमुखी जीवन प्रदान करता है, जिसे 'वास्तविक जीवन' कहते हैं।

समय

यह प्रयोग प्रत्येक साधक को १४ मई १९९५ 'वैशाख पूर्णिमा', रविवार के दिन 'बुद्ध जयन्ती' के अवसर विशेष पर अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, और वैसे भी यह प्रयोग अद्वितीय एवं श्रेष्ठ है, भौतिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन की ओर बढ़ने का मार्ग है, अतः इसे किसी रविवार या गुरुवार के दिन भी सम्पन्न किया जा सकता है, किन्तु विशेष मुहूर्त में इसे सम्पन्न करने से इसमें सफलता शीघ्र प्राप्त होती है, यह प्रयोग साधक को समय-समय पर करते ही रहना चाहिए।

इस प्रयोग को सिद्ध करने के लिए कोई स्त्री-पुरुष का भेद नहीं है, अतः इस प्रयोग को स्त्री या पुरुष दोनों ही पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सिद्ध कर सकते हैं।

सामग्री– ऊर्ध्वचेतस यंत्र, प्रज्ञा माला।

विधि–

प्रातःकाल साधक दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर, पूजा कक्ष में ढीले वस्त्र पहिन कर श्वेत आसन पर बैठ जाएं, पवित्रीकरण तथा दैनिक साधना विधि सम्पन्न करने के पश्चात् ५ मिनट तक अति तीव्रता से भस्रिका और प्राणायाम क्रिया को सम्पन्न करें, इसके लिए सांस को दोनों नथुनों से बाहर निकालें तथा अपने दोनों हाथों को झटके से आगे फैलायें, फिर सांस को दोनों नथुनों से अंदर भरते हुए अत्यन्त तीव्रता से पीछे की ओर हाथों को खींचें, हाथों को आगे और पीछे ले जाने और ले आने की क्रिया में आपको ऐसा लगना चाहिए, कि जैसे आप किसी भारी वस्तु को ढकेल रहे हैं और अपनी ओर खींच रहे हैं, यह क्रिया बहुत ही तीव्रता से ५ मिनट तक लगातार करें।

इसके पश्चात् सुखासन या पद्मासन किसी भी आसन में, जो आपके अनुकूल हो, आंख को बंद कर निश्चल भाव से बैठ जाएं तथा अपना ध्यान भ्रूमध्य में केन्द्रित करें, लगभग १०-१५ मिनट के पश्चात् **''ऊर्ध्वचेतस यंत्र''** को अपने सामने स्थापित कर दें, इसमें किसी विशेष पूजन की आवश्यकता नहीं है, सामान्य पूजन करें और **''प्रज्ञा माला''** से निम्न मंत्र का १५ माला मंत्र-जप सम्पन्न करें—

मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं

साधकों को चाहिए कि मंत्र-जप समाप्ति के बाद , वे प्रत्येक ३ माह तक पड़ने वाली पूर्णिमा को इसी प्रकार प्रयोग सम्पन्न करें, और तीसरे माह की पूर्णिमा को मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात् यंत्र और माला को नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

दीक्षा

सम्पूर्ण जीवन के उन्नति की सफल पूंजी

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और जीवन के सभी क्षेत्रों में पूर्ण सफलतादायक

विविध दीक्षाएं

दीक्षा से क्या होता है, उसका स्वरूप क्या है और यह क्यों आवश्यक है? जब तक हम इन प्रश्नों का उत्तर नहीं जान पाएंगे, तब तक गुरु-कृपा द्वारा प्राप्त दीक्षा के महत्व को भी नहीं समझ सकते, और न ही उसकी आवश्यकता को जान सकते हैं, क्योंकि इसके महत्व को समझने के लिए भी गुरु-कृपा की ही आवश्यकता होती है, वही इसके वास्तविक अर्थ को प्रतिपादित कर सकता है, और तभी जीव या शिष्य इसकी महत्ता को जान सकता है।

"दीक्षा" का रहस्य इतना सरल नहीं है, जिसे शब्दों के माध्मय से समझा जा सके, यह तो वह प्रक्रिया है, जिसे स्वयं अनुभव किया जाता है, अतः दीक्षा प्राप्त करके ही जीव उसके गूढ़ एवं जटिल रहस्य को समझ सकता है।

"दीक्षा" गुरु-शिष्य सम्वन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया है, उसे प्रदान कर गुरु, शिष्य के जीवन का रक्षक बन जाता है, और समय-समय पर उसे सचेत करता हुआ, उसके लिए पग-पग पर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।

जीव उस शिव से, जो अलौकिक है, परम तत्व है, भिन्न है, और उस आध्यात्मिक जीवन-पथ पर उन्नति करने के लिए दीक्षा ग्रहण करना एक अत्यन्त आवश्यक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा जीव, जो वास्तव में उस भगवत स्वरूप का ही अंश स्वरूप है, उसमें लीन हो जाता है, किन्तु यह ईश्वर-कृपा के द्वारा ही सम्भव है, और वह प्राप्त होती है गुरु के माध्यम से।

"गुरु", जो अपने शिष्य को अपरोक्ष ज्ञानदान करते हैं, उसी का नाम है– "दीक्षा"। कुलार्णव तंत्र के अनुसार–

दीयते विमलं ज्ञानं क्षीयते कर्मवासना।
तस्मात् दीक्षेति सा प्रोक्ता ज्ञानिभिः तंत्रवेदिभिः।।

अर्थात् तंत्रवेत्ता ज्ञानियों ने यह कहा है– जिसके द्वारा पवित्र ज्ञान दिया जाता है, और दुष्कर्मों का जहां क्षय होता है, वही दीक्षा है, और जब तक दुष्संस्कारों का, कर्म-वासना का क्षय नहीं होगा, तब तक दीक्षा की वास्तविक सार्थकता सिद्ध नहीं हो सकती।

दीक्षा के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है, जिससे पुरुषत्व से सम्बन्धित अज्ञान को दूर किया जा सके, क्योंकि गुरु-कृपा के माध्यम से ही दीक्षा द्वारा जीव माया रूपी आवरण से उन्मुक्त हो सकता है, परन्तु जब तक उसका चित्त निर्मल नहीं हो जाता, तब तक वह उस निरावरण सत्ता का अनुभव नहीं कर

पाता, क्योंकि मानवीय देह इतनी मलीन और दोष युक्त होती है, कि उसका जब तक शुद्धीकरण एवं पवित्रीकरण न हो जाए, तब तक जीव उस परम सत्ता के वास्तविक दर्शन नहीं कर सकता, और वह तभी सम्भव हो सकता है, जब वह जीव गुरु द्वारा दीक्षित हो।

शास्त्रानुसार दीक्षा केवल दो प्रकार की होती है— **१. बाह्य दीक्षा २. आंतर दीक्षा।**

बाह्य दीक्षा को "क्रिया दीक्षा" भी कहते हैं और आन्तर दीक्षा का दूसरा नाम "वेध दीक्षा" भी कहते हैं। क्रिया दीक्षा का तात्पर्य है, जीव के बाह्य दूषित आवरण और बौद्धिक अज्ञान की निवृत्ति करना, और वेध दीक्षा का अर्थ है, बौद्धिक अज्ञान को दूर कर भीतरी द्वार में प्राणशक्ति द्वारा प्रवेश करते हुए उस "आत्म-तत्व" को प्राप्त कर लेना।

कुलार्णव तंत्र में लिखा है—

स्वापत्यानि यथा मत्स्योह्य भीक्षणेनैव पोषयेत्।
दृगूभ्यां दीक्षोपदेशश्च तादृशः परमेश्वरी।।

अर्थात् जिस प्रकार मछलियां अण्डों की ओर दृष्टिपात कर उन्हें प्रस्फुटित कर देती हैं, और उनसे प्रकट सन्तानों का दृष्टि के द्वारा ही पोषण करती हैं, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य पर दृष्टिपात कर उनके आत्म-तत्व को जाग्रत करके उनका भली प्रकार पोषण करते रहते हैं।

दीक्षा गुरु के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है, क्योंकि गुरु और ज्ञान का सम्बन्ध अविछिन्न एवं महत्वपूर्ण माना गया है, इसीलिए उस गुह्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरु का योगदान अपरिहार्य है, अतः **चाहे किसी भी साधना में सिद्धि प्राप्त करनी हो या जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रविष्ट होना हो अथवा जीवन में किसी भी प्रकार की आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक बाधा उत्पन्न हो रही हो, तो व्यक्ति को योग्य गुरु से दीक्षा प्राप्त कर लेनी चाहिए, क्योंकि गुरु ही शिष्य को अपने नेत्रों के प्रवाह एवं अंगूठे के स्पर्श से शक्तिपात कर, उसकी मलीन एवं दोष युक्त देह का नाश कर उन्नति के पथ पर गतिशील करता हुआ, उसे वास्तविक ज्ञान का परिचय देता है।** यह प्रक्रिया एक बार नहीं अपितु बार-बार सम्पन्न की जानी चाहिए, क्योंकि इस सांसारिक जगत में, जिस प्रकार एक शीशे को बार-बार साफ करने पर भी हल्की सी धूल पड़ जाने से वह धुंधला दिखाई देने लगता है, वैसे ही शिष्य को बार-बार दीक्षित करने पर भी उसके चित्त रूपी दर्पण पर कर्म-वासना युक्त परत जमी रहती है, और गुरु दीक्षा के माध्यम से ही उस गंदेले आवरण को, उस धूल को हटाने की क्रिया करता है, जिससे कि उसका चित्त निर्मल, पवित्र एवं शुद्ध हो सके, और वह शिष्यत्व को प्राप्त कर सके।

"दीक्षैव मोचयत्यूर्द्ध शैवं धाम नयत्यपि।"

अर्थात् दीक्षा प्राप्त करे बिना जीव पशुवत जीवन से निवृत्त नहीं हो सकता, और न ही सांसारिक विषय-वासनाओं पर विजय प्राप्त कर शिव पद प्राप्त कर सकता है।

उपनयन संस्कार या दीक्षा संस्कार शिष्य का एक नया जन्म कहलाता है, पर प्रश्न यह उठता है, कि क्या जन्मता है उसके द्वारा? तो यह कहा जा सकता है कि इस क्रिया द्वारा एक और देह की उत्पत्ति होती है, जिसे "विशुद्ध देह" कहा गया है, सही अर्थों में इसे ही ज्ञान देह या सूक्ष्म देह कहा जाता है, और इसकी प्राप्ति तभी सम्भव है, जब जीव में व्याप्त अज्ञान, मल आदि का नाश किया जा सके, किन्तु इसका नाश दीर्घकाल में भी हो सकता है और अल्पकाल में भी। इसीलिए व्यक्ति, जीव या शिष्य को अपना दीक्षित क्रम जारी रखना चाहिए, जिससे कि वह उस ज्ञान देह अर्थात् विशुद्ध देह की प्राप्ति उस अनुग्रह (गुरु) द्वारा प्राप्त कर सके, और जब उसका चित्त पूर्ण विशुद्ध हो जाएगा, तभी वह अपने को शिष्य रूप में अनुभव कर सकेगा और जीवन मुक्ति का रसास्वादन कर सकेगा।

आज जीवन की इस आपाधापी में, संघर्षशील वातावरण में सांस लेना भी मनुष्य के लिए एक दुर्लभ प्रक्रिया हो गई है, फिर ऐसे में वह लम्बी-चौड़ी साधना पद्धतियों अथवा पूजा-पाठ आदि क्रिया को सम्पन्न करते हुए भौतिक क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त कर, उस "आत्म-तत्व" को प्राप्त कर सके, इसका समय उसके पास नहीं है, और यही बात हमारे ऋषि-मुनि बहुत पहले से जानते थे, कि इस परिवर्तनशील युग में विभिन्न आपदाओं और विपदाओं से यह मानव-समाज मलीन, अस्थिर और अनिश्चिंत हो जायेगा, इसलिए हर मानव-मन को एक ऐसी आश्रय सत्ता की आवश्यकता महसूस होगी, जो कि उसे, उसके परिवार को सुरक्षा कवच पहिनाकर, उन्हें सभी परेशानियों, बाधाओं और उलझनों से मुक्ति दिला कर भयमुक्त कर सके, और यह सुरक्षा उसे गुरु (आश्रय सत्ता) द्वारा प्रदान की गई दीक्षाओं के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है, इसीलिए जीवन में हर मानव के लिए दीक्षा साधारणतः आवश्यक एवं महत्वपूर्ण मानी गई है।

आज का मानव "रेडीमेड" चीजों को ज्यादा पसन्द करता है, उदाहरणतः वह घर में खाना खाने की अपेक्षा, बाहर होटल आदि में खाना ज्यादा पसन्द करेगा, क्योंकि घर में उसे उस भोजन को प्राप्त करने के लिए एक लम्बी प्रक्रिया को पूर्ण करना पड़ेगा तथा अधिक मेहनत करनी पड़ेगी, जिसके लिए उसके पास समय नहीं है, या वह इतना अधिक परिश्रम करना ही नहीं चाहता, इसी प्रकार कपड़े सिलवाने की अपेक्षा "रेडिमेड" कपड़े खरीदना ही उसे ज्यादा अच्छा व सुगम साधन प्रतीत होता है, ठीक उसी प्रकार व्यक्ति अपनी भौतिक और आध्यात्मिक पूर्ति के लिए साधनाओं को सम्पन्न करने की अपेक्षा दीक्षा लेना ज्यादा उचित समझता है, क्योंकि साधना की लम्बी क्रिया को पूर्ण करने के बाद भी

पूज्य गुरुदेव दीक्षा देते हुए

उसे उसमें सिद्धि व सफलता प्राप्त हो ही, यह कोई जरूरी नहीं है, और इसी कारणवश वह अपनी न्यूनताओं को दूर करने में असमर्थ ही रहता है।

परन्तु दीक्षा द्वारा गुरु अपने विशिष्ट शक्तिपात से उसमें वह ऊर्जा प्रवाहित कर देता है, जिससे उसे मनोवांछित सफलता प्राप्त होती ही है। दीक्षा प्राप्त कर साधक व शिष्य के सभी मनोविकारों की निवृत्ति तो होती ही है, साथ ही उसे उन साधनाओं में भी सिद्धि मिलने लग जाती है, जिसमें उसे सफलता प्राप्त नहीं हो रही होती। जीवन में सभी प्रकार के दुःख, दैन्य, भय, परेशानियां, बाधाओं, अड़चनों को दूर कर शारीरिक, मानसिक और आर्थिक लाभ हेतु मनुष्य को दीक्षाओं की आवश्यकता पड़ती ही है, और ये दीक्षाएं किसी भी अवस्था में प्राप्त की जा सकती हैं, चाहे वह बाल्यावस्था हो या यौवनावस्था अथवा वृद्धावस्था।

शास्त्रों में एक सौ आठ प्रकार की दीक्षाओं का उल्लेख किया गया है, जिनमें से अपनी इच्छानुसार एक-दो या समस्त दीक्षाएं व्यक्ति प्राप्त कर सकता है, परन्तु इन दीक्षाओं में से सर्वप्रथम **"गुरु दीक्षा"** होती है, जिसके द्वारा गुरु उसे अपनी शिष्यता प्रदान करते हैं। इन दीक्षाओं को तीन प्रकार की अवस्थाओं के अनुरूप बांटा जा सकता है, क्योंकि व्यक्ति को संशय बना रहता है कि वह अपने अनुकूल कौन-कौन सी दीक्षाएं ग्रहण करे, यह क्रम इस प्रकार है—

१. बाल्यावस्था— १८ वर्ष की आयु तक की अवस्था "बाल्यावस्था" कहलाती है, इनके लिए आवश्यक दीक्षाएं हैं—

- **ज्ञान दीक्षा—** जिसके माध्यम से उस बालक को अद्वितीय ज्ञान की प्राप्ति होती है।
- **जीवन मार्ग दीक्षा—** जीवन के सारे अवरोधों को समाप्त कर उस का सरल और सुगम मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।
- **सरस्वती दीक्षा—** जिसे प्राप्त कर बालक मेधावी बनता है।
- **वाग्देवी दीक्षा—** इसे प्राप्त करने पर बालक को वाक् चातुर्यता एवं वाक्सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

इनके अतिरिक्त **'गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा'** के माध्यम से गर्भस्थ शिशु को भी दीक्षा प्रदान की जा सकती है, और उसके द्वारा उसे अभिमन्यु, अष्टावक्र और शुकदेव की तरह ही तेजस्वी और पूर्णतायुक्त व्यक्तित्व प्रदान किया जा सकता है। गर्भस्थ शिशु को चेतना देने का सबसे बड़ा महत्व यह है कि, जो ज्ञान बाहरी मनुष्य २५ वर्षों में ग्रहण कर पाता है, वही ज्ञान गर्भस्थ शिशु ५ महीनों में ही अर्जित कर सकता है, क्योंकि उसके अन्दर ग्राह्य शक्ति अधिक होती है, इसीलिए गर्भस्थ बालक को दीक्षा दिलाना और भी श्रेष्ठतम कार्य है, जो कि खुद के लिए ही नहीं, अपितु समाज के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि ये बालक ही देश का भविष्य हैं।

२. युवावस्था— इसको भी दो वर्गों में बांटा जा सकता है, **पुरुष वर्ग और स्त्री वर्ग।**

• **पुरुष वर्ग–** इस वर्ग के लिए विभिन्न दीक्षाओं की आवश्यकता पड़ती है, जिससे पुरुष वर्ग अपनी सामाजिक, आर्थिक व मानसिक सभी प्रकार की परेशानियों व द्वन्द्वों से मुक्ति प्राप्त कर सके, क्योंकि आज इस समाज व देश में ९५ प्रतिशत लोग आर्थिक समस्या और मानसिक तनावों से ग्रस्त हैं, कोई बेरोजगारी की समस्या से, तो कोई नौकरी की समस्या से या फिर व्यापारिक हानि की समस्या को लेकर चिन्तित व परेशान है, इन धन-सम्बन्धी परेशानियों के अलावा भी उसे कई समस्याएं आ घेरती हैं जैसे कि पत्नी की समस्या, जीवन में सही मार्ग चयन करने की समस्या, प्रेम विवाह की समस्या या फिर किसी उच्च पद की प्राप्ति की अभिलाषा, और साथ ही समाज में यश, कीर्ति, ऐश्वर्य प्राप्त करने की आकांक्षा, ऐसी सैकड़ों समस्याओं का समाधान इन दीक्षाओं के माध्यम से किया जा सकता है, जो इस प्रकार हैं– **मनोकामना पूर्ति दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, पूर्ण वैभव दीक्षा, सामान्य ऋण मुक्ति दीक्षा, दीर्घायु दीक्षा, क्रिया योग दीक्षा,** जिन्हें प्राप्त कर पुरुष आर्थिक दृष्टि से पूर्ण हो कर, समाज में उच्च स्थान तथा यश, वैभव प्राप्त कर, इस सांसारिक जगत-यात्रा को पूर्ण करने की क्रिया-शक्ति प्राप्त कर सकता है।

• **स्त्री वर्ग–** इस वर्ग के लिए निम्न दीक्षाएं श्रेष्ठ हैं–

१. **सौन्दर्य दीक्षा–** इसे प्राप्त कर स्त्री अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्त कर सकती है।

२. **गर्भ चैतन्य दीक्षा–** इसके माध्यम से स्त्री अपने मनोनुकूल गर्भ की प्राप्ति कर सकती है।

३. **शीघ्र विवाह दीक्षा–** जिस लड़की या युवती का विवाह न हो रहा हो या विवाह में रुकावटें पैदा हो रही हों, तो उसे इस दीक्षा को प्राप्त करना चाहिए।

४. **चैतन्य दीक्षा–** पूर्ण चैतन्यता प्रदान करने वाली दीक्षा।

अतः **''सम्मोहन एवं वशीकरण दीक्षा''** या **''अनंग रति दीक्षा''** स्त्री-पुरुष दोनों ही ग्रहण कर सकते हैं।

३. वृद्धावस्था– इस अवस्था में हर व्यक्ति समस्त प्रकार के भौतिक सुखोपभोग को प्राप्त करने के बाद, अध्यात्म मार्ग की ओर गतिशील होकर ''शिवत्व'' अर्थात् मुक्ति प्राप्त कर लेना चाहता है, और अपनी पूर्ण वृद्धावस्था को इसी कार्य हेतु लगा देता है, क्योंकि वह यही सोचता है, कि इस अवस्था का अंत मृत्यु की गोद में सो जाना ही है।

जबकि ऐसा नहीं है, विशिष्ट दीक्षाओं को प्राप्त कर पुनः यौवनावस्था प्राप्त की जा सकती है, और कायाकल्प द्वारा सुन्दर, स्वस्थ, तेजस्वी व्यक्तित्व प्राप्त कर ''ब्रह्म तत्व'' को प्राप्त किया जा सकता है, और वह इन दीक्षाओं के माध्यम से ही सम्भव है, जो इस प्रकार हैं–

१. पूर्णत्व दीक्षा, २. धन्वन्तरी दीक्षा, ३. ब्रह्म दीक्षा, ४. शतोपंथी दीक्षा, ५. संन्यास दीक्षा, ६. कायाकल्प दीक्षा, ७. पापमोचिनी दीक्षा, ८. मोक्ष प्राप्ति दीक्षा।

इन सब दीक्षाओं के अतिरिक्त भी अन्य उच्चकोटि की विविध दीक्षाएं हैं, जिन्हें प्राप्त कर व्यक्ति अपने जीवन में उच्चता की ओर अग्रसर हो सकता है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

१. **कुण्डलिनी जागरण दीक्षा–** इस दीक्षा के सात चरण हैं, इन्हें एक-एक करके ग्रहण किया जाता है, और इन सातों चरणों को प्राप्त कर अद्वितीय व्यक्तित्व का धनी बना जा सकता है।

२. **चक्र जागरण दीक्षा–** यह समस्त षट्चक्रों को जाग्रत करने वाली दीक्षा है।

३. **शत्रु संहारक दीक्षा–** शत्रुओं को परास्त करने हेतु।

४. **अष्टलक्ष्मी दीक्षा–** धन प्रदायक विशेष दीक्षा।

५. **शिष्याभिषेक दीक्षा–** पूर्ण शिष्यत्व प्राप्त करने हेतु।

६. **कर्ण पिशाचिनी दीक्षा–** जिसके द्वारा भूत और वर्तमान के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

७. **जगदम्बा सिद्धि दीक्षा–** दैवी सिद्धि प्राप्त करने हेतु।

८. **हादी-कादी दीक्षा–** नींद व भूख-प्यास पर नियन्त्रण प्राप्त करने के लिए।

९. **सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा–** सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने के लिए।

१०. **चाक्षुष्मती दीक्षा–** नेत्रों की ज्योति को बढ़ाने के लिए।

इस प्रकार की अन्य कई दीक्षाएं हैं, जो मानव-जीवन के लिए विशेष उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं, व्यक्ति अपनी इच्छानुसार इन उपरोक्त दीक्षाओं में से कोई भी दीक्षा प्राप्त कर सकता है, इसके लिए कहीं कोई उम्र बाधक नहीं होती, यह तो समय के अनुसार और व्यक्ति की मांग के आधार पर ही हमने इन दीक्षाओं का तीन अवस्थाओं में वर्णन किया है, अतः कोई भी बालक, युवक व वृद्ध किसी भी प्रकार की दीक्षा प्राप्त कर उच्च अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

दीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है, कि आप जिस कार्य के उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे ग्रहण कर रहे हैं, वह एकदम से ही पूर्ण हो जाए, अपितु इसके द्वारा वह मार्ग प्रशस्त होता है, जिस पर बढ़कर आप अपनी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति कर सकते हैं।

जहां से गुजरना है मेरे गुरुवर को, वहां मेरे सीने की धड़कन बिछा दो।

यह पर्व गुरु जन्मोत्सव का है, उत्सव के क्षणों का है, मिलन के क्षणों का है. . . मिलन है जीवात्मा का परमात्मा से, मिलन है नदी का समुद्र से, मिलन है धरती का आकाश से. . .एक ऐसी ही स्वर्णिम बेला, जो एक नव चेतना का आगमन है, एक पुनर्जन्म है, जो जन्म न होकर एक अवतरण है, उस देव पुरुष का, जिसने अपने प्रकाश से अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर किया है, प्रकाश का सृजन किया है।

और यह मिलन कोई सामान्य मिलन नहीं है, यह तो कई-कई जन्मों का मिलन है, कई-कई जन्मों से वे आवाज दे रहे हैं तुम्हें, और हर जिन्दगी में तुम्हें पकड़ने की चेष्टा की है, क्योंकि उनका तो केवल मात्र यही उद्देश्य है, कि यह सुगन्ध बसंत में पूरी तरह से मिल जाए, यह बूंद समुद्र में पूरी तरह से विलीन हो जाए. . . और यह बार-बार जन्म लेने की प्रक्रिया एक बारगी ही समाप्त हो जाए।

तुम विन जीवन का मकसद क्या
तुम विन हर लम्हा भारी है।

हे प्रभु! आपके विना तो यह जीवन ही निरर्थक है, और इसीलिए यह "कौस्तुभ जयन्ती" हम सब शिष्यों को आवाज दे रही है, बुला रही है, प्राणों की झंकार का मधुर निमंत्रण भेज कर मस्ती में डूबने के लिए, आनन्द से सराबोर होने के लिए, अब यह तो हमारी न्यूनता है, कि हम उस झंकार को सुनकर भी अनसुना कर दें।

यह तो इस पृथ्वी लोक के प्रत्येक प्राणी का असीम सौभाग्य है, जो कि परमपूज्य गुरुदेव ने सामान्य मानव के रूप में जन्म लेकर, इस माटी को अपने चरणों की धूलि से धन्य-धन्य कर दिया, जिनके दर्शन मात्र के लिए उच्चकोटि के ऋषि, मुनि, योगी, संन्यासी भी तरसते रह जाते हैं, जो इतनी दुर्लभ, कठिन और कठोर तपस्या करने के बाद भी पूजनीय गुरुदेव का साहचर्य प्राप्त नहीं कर पाते, और दूर से ही एकटक ताकते रह जाते हैं।

ऐसी दिव्य विभूति, जिनके आगे देवता भी नतमस्तक रहते हैं, जिन्हें देखने के लिए अप्सराएं भी लालायित रहती हैं।

उनकी सामीप्यता प्राप्त करना तो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है, और यह पूज्य गुरुदेव का इस धरा पर जन्म नहीं, अपितु अवतरण ही हुआ है, जबकि उनके समस्त शिष्यों को उनकी उच्चता का, उनकी श्रेष्ठता का पूर्णाभास है, तो फिर उनके व्यक्तित्व का बखान करना तो ऐसा ही है, जैसे— "सूरज को दीपक दिखाना"।

"कौस्तुभ जयन्ती" ऐसा ही पावन पर्व है, जिसमें भाग ले समस्त साधक व शिष्य गुरुदेव की आशीर्वाद-वर्षा में आप्लावित हो सकते हैं, क्योंकि ऐसी वर्षा जो मन में, आत्मा में, हृदय के वीरान रेगिस्तान में ज्ञान रूपी बीज का अंकुरण कर दे, फिर यह तो एक अद्भुत घटना ही कही जा सकती है इस धरा पर।

जहां पूज्य गुरुदेव उपस्थित होते हैं, जहां वे अपने ज्ञान का उपदेश देते हुए एक पवित्रमय वातावरण का निर्माण करते हैं, वह स्थली देव लोक से कम नहीं होती, तो क्यों न हम उस दिव्य क्षण का आनन्द लें, और अपने जीवन की व्याधियों, बाधाओं को भुलाकर अपने-आप को मदमस्त कर दें, क्योंकि ये क्षण जो इलाहाबाद में गुरुदेव के जन्मदिन के अवसर पर हमें प्राप्त होने जा रहे हैं, ये क्षण हैं पूज्य गुरुदेव के साहचर्य को प्राप्त कर, उनके दर्शन कर अपने-आप को धन्य-धन्य करने के।

यह जन्मदिवस इस पृथ्वी पर ही नहीं, अपितु सिद्धाश्रम में भी समस्त संन्यासी शिष्यों द्वारा बड़ी धूमधाम से, पूरे जोश और उल्लास के साथ, नृत्यमय होकर मनाया जाता है, **क्योंकि वे पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति को अपने जीवन का परम सौभाग्य मानते हैं, जिनकी वजह से ही वे जीवन को सही ढंग से समझ सके,** उन गूढ़ तत्वों का रहस्य

ज्ञात कर सके, जिसका ज्ञान गुरुदेव के सिवाय और किसी को नहीं था, क्योंकि वेद, उपनिषद् सभी तो उन्हीं से पूर्णता प्राप्त करते हैं।

उनके इस धरा पर अवतरण का वह स्वर्णिम दिवस, जो प्रत्येक वर्ष उत्सव के रूप में मनाया जाता है, उत्सव ही नहीं, अपितु महोत्सव है, वसन्तोत्सव है, जिसमें प्रवाहित सुगन्ध के प्रत्येक झोंके को अपनी श्वासों में रचा-पचा लेना है, जिससे कि हमारे रोम-रोम में वह सुगन्ध पूर्णता के साथ समाहित हो पूरे शरीर को आनन्दित कर दे, बेसुध कर दे, तभी तो हम उस विराट स्वरूप के दर्शन कर सकने के योग्य बन सकेंगे।

और इस बार पूज्य गुरुदेव का जन्मदिवस "कौस्तुभ जयन्ती" के रूप में मनाया जा रहा है, यह जयन्ती कस्तूरी एवं पुलक से भरा महोत्सव है, क्योंकि यह दिवस विशेष २१/०४/१९९५ पूज्य गुरुदेव के षष्ठी पूर्ति महोत्सव के रूप में सम्पन्न हो रहा है।

अतः जब तक हम इस आनन्द का, इस महोत्सव का लाभ नहीं उठा पायेंगे, तब तक उनके 'शिवमय स्वरूप' के, 'ब्रह्ममय स्वरूप' के दर्शन कर पाना भी असम्भव है। उनकी विराटता के दर्शन का सौभाग्य उन्हें अवश्य ही प्राप्त होगा, जो इन क्षणों को जीवन्तता के साथ जी सकेंगे।

पूज्य गुरुदेव की कृपा का कहीं कोई अन्त ही नहीं है, वे तो हर बार, हर क्षण अपनी कृपा से हम सभी शिष्यों को फलीभूत करते ही रहते हैं, **और इस बार तो गुरुदेव की असीम कृपा ही है, कि हम गृहस्थ शिष्यों के साथ-साथ उच्चकोटि के संन्यासी शिष्य भी वहां दृश्य और अदृश्य दोनों रूपों में उपस्थित होंगे। कितना अद्भुत दृश्य होगा, जब अपने पूर्ण स्वरूप के साथ गुरुदेव आसन पर विराजमान होंगे, और हम सभी को अपनी अमृत वाणी से कृतार्थ करेंगे!**

यदि गृहस्थ जीवन में गुरुदेव की उपस्थिति से हम लीक से हटकर कुछ अलग चलने की, कुछ करने की प्रेरणा न ले सके, तो धिक्कार है ऐसे जीवन को, धिक्कार है इन प्राणों को। कब तक उलझे रहेंगे हम अपने जीवन की इन समस्याओं में, क्या हमारा जीवन सिर्फ भोजन-पानी में ही सिमट कर रह जाएगा? यदि अब भी हम नहीं जागे तो संसार में और कोई व्यक्तित्व फिर अवतरित नहीं होगा, जो हमें झकझोर सके, हमारा मार्गदर्शन कर सके, हमें नव जीवन प्रदान कर सके, क्योंकि अवतरण की क्रिया बार-बार नहीं होती। यह तो हमारे कई-कई जन्मों के पुण्योदय का फल है, कि पूज्य गुरुदेव बार-बार शिविरों के माध्यम से कई सुन्दर क्षण हमें प्रदान कर अपना सान्निध्य देने की पूर्ण चेष्टा करते हैं, और फिर यह तो "जन्मोत्सव" है।

शिष्य का यह पहला कर्त्तव्य होता है, कि वह गुरुदेव की एक आवाज़ पर अपना सर्वस्व उनके चरणों में अर्पित कर दे, लेकिन न जाने हम शिष्यों ने अपने पिछले जन्मों में ऐसा क्या किया था, कि गुरुदेव हमारे बन्धन में ही बंध गए हैं, सर्वस्व अर्पण करना तो दूर, वह तो सिर्फ हमारी

नज्जारा-ए-जमाल से जन्नत है जिन्दगी,
वो रु-ब-रु नहीं तो कयामत है जिन्दगी।
उनके ख्याल उनकी तमन्ना में मस्त हूं,
मेरे लिए तुम्हारी इबादत है जिन्दगी।।

उपस्थिति मात्र से ही आह्लादित हो जाते हैं, क्योंकि वास्तव में यदि देखा जाए, तो शिष्य ही गुरु के प्राण हैं, धकड़न है।।

शिष्यों के विकारों, उनके दोषों की समाप्ति, जिस क्षण हो जाए, और एक नए जीवन का उदय हो जाए तो वह क्षण, वह दिवस ही अपने-आप में वास्तविक रूप में "जन्मदिवस" कहलाता है, अतः इसे "गुरु जन्मोत्सव" न कहकर "शिष्य भाग्योत्सव" कहा जाना ज्यादा श्रेयस्कर रहेगा।

कैसी विडम्बना है, कि हम शिष्यों को अपना उत्सव मनाने के लिए भी गुरुदेव के आह्वान की आवश्यकता पड़ती है, अब तो समाप्त होना ही चाहिए यह क्रम। अब तो आवश्यकता है, कि शिष्य हर क्षेत्र में खड़ा होकर पूज्य गुरुदेव का आह्वान करे, और उन्हें आमंत्रित करे। फिर भी गुरुदेव का वरदहस्त हम सब शिष्यों के ऊपर है, जिसके कारण बार-बार वे हमें ऐसे सुन्दर-सुन्दर अवसर दे रहे हैं, जो कि हमारे जीवन की अमूल्य धरोहर हैं।

हमें निश्चित रूप से ही इस पूंजी को सहेजना है, और भूल कर भी इस अवसर को नहीं गंवाना है, जो २१ अप्रैल को इलाहाबाद की पावन भूमि पर कौस्तुभ जयन्ती के रूप में सम्पन्न होने जा रहा है। जहां सब कुछ भूल कर, नृत्यमय होते हुए, देह भाव से ऊपर उठ कर, प्राण तत्व में आना है, न कोई मोह हो, न कोई बन्धन हो, न कोई व्यर्थ चिन्तन हो, मात्र शिष्य रूप में पूर्ण मर्यादा के साथ हर दिन को साकार कर लेना है।

वास्तव में हम धन्यभागी हैं, कि गुरुदेव हमारे बीच खड़े हमें पुकार रहे हैं, अपनी बांहों में समेट लेने के लिए, हमारे कुविचारों और संचित किए गए पाप कर्मों को मृत्यु प्रदान कर, हमारे जीवन का नव-निर्माण करने के लिए। **अब तो हमें गुरुदेव के आह्वान को, उनकी मर्यादाओं को रखना ही चाहिए, क्योंकि उनकी पुकार अपनों के लिए है, और वे अपने और कोई नहीं, हम शिष्य ही हैं।**

हम शिष्यों के भाग्य पर देवी-देवताओं को भी रश्क होता है, कितना आत्मीय बना लिया है गुरुदेव ने हमें, इसी आत्मीयता को साकार करने के लिए एक बार पुनः उसी पुकार, उसी निमंत्रण को जीवंत करने के लिए हमारा प्रत्येक रोम एक हृदय बन जाये, और हर हृदय की यही आकांक्षा हो –

जहां से गुजरना है मेरे गुरुवर को,
वहां मेरे सीने की धड़कन बिछा दो।

कस्तूरी की तरह महक एवं पुलक से भरा महोत्सव

21 अप्रैल 1995

इलाहाबाद

पूज्य गुरुदेव का षष्ठी पूर्ति महोत्सव

कौस्तुभ जयन्ती

"पूरब में फिर लालिमा गहराने लगी है, एक घने अंधकार के बाद फिर प्रकाश की रोशनी जागी है . . . **ओ स्मृतिवान पुरुषों!** (स्मृतिवान – जगे हुए) . . . उड़ो . . . हंस की तरह . . . समाज रूपी डबरे को छोड़कर . . . मानसरोवर की तलाश में . . . सरिता सी गति में नाचते हुए, मचलते हुए, राह में आए सारे बंधनों को तोड़ते हुए . . . क्योंकि नृत्य करती हुई नदी समुद्र में एकाकार हो जाती है . . . और पूर्णता प्राप्त करती है, वैसे ही तुम्हें गुरु में समाकर गुरुत्व प्राप्त करना है . . . और समाहित होने की क्रिया प्रारम्भ होते ही इस महोत्सव में पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राप्त कर सकोगे उन प्रयोगों को, जो तुम्हारे जीवन में अहोभाव प्रदान करेंगे . . . जिससे तुम प्रज्ञावान बन सकोगे . . . क्योंकि तुम्हें प्रदान की जायेगी पहली बार **ऊर्ध्वपात दीक्षा**– ऐसी दीक्षा, जो सिर्फ आज तक संन्यासियों को ही प्राप्त हो सकी है।

शिविर स्थल : पी०डी० टण्डन पार्क, सिविल लाइन, हनुमान मन्दिर के सामने, इलाहाबाद (उ० प्र०)

शिविर शुल्क - ६६०/-

: सम्पर्क :

श्री एस. के. बनर्जी, आनन्द होम्यो हॉल, रिकॉब गंज, फैजाबाद, उ. प्र., फोन : (0527) 812595, 814052
श्री एस. के. मिश्रा, 317, मधवापुर, इलाहाबाद, उ. प्र.
श्री सी. डी. शर्मा, B-395, इन्द्रा नगर, लखनऊ (उ. प्र.), फोन : 0522-383900
श्री एस. सी. कालरा, फोन : 0536-7216,7237
श्री राज कुमार वैश्य, 94/A/13 A सन्तूर खारा, इलाहाबाद
डॉ० प्रमोद यादव, इलाहाबाद, फोन : 0532-632229
श्री हेमन्त सिंह, इलाहाबाद
श्री एल. डी. सिंह, किदवयी नगर, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह, भावड़ खेड़ा, शाहजहांपुर
डॉ० पी. सी. अग्रवाल, मुजफ्फर नगर, फोन : 0131-28579
श्री जे. एल. गोयल, बुलन्द शहर
श्री मदन मोहन श्रीवास्तव, वाराणसी, फोन : 0542-43131
श्री दीनानाथ यादव, अशोक नगर, वाराणसी
श्री वेद कुमार जायसवाल, वाराणसी, फोन : 0542-383759, 385427
श्री अच्छे लाल यादव, बसखारी, फैजाबाद
श्री ओम प्रकाश जायसवाल, फतेहगंज, फैजाबाद
श्री वेद प्रकाश, 21/11 पेपर मिल कॉलोनी, निशात गंज, लखनऊ
श्री एस. पी. बांगड़, 47, रविन्द्र नगर, उदयपुर, फोन : 0294-2635
श्री हरिराम चौधरी (फर्मासिस्ट), डफ्रिन हॉस्पीटल, फैजाबाद
श्री वासुदेव पाण्डेय (मैनेजर), जिला सहकारी बैंक, हर्रैया, बस्ती

११-०५-१९९५

"सौन्दर्य वह सौम्य प्रकाश है, जिसे हम आंखों से देख नहीं सकते, वह असीम संगीत है, जिसे हम कानों से सुन नहीं सकते। यह तो दिल की गहराइयों में पनपता है, जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है।"

श्रृंगार, प्रेम, मोहकता, चुम्बकत्व ये सब सौन्दर्य के ही पर्यायवाची शब्द हैं, जिसमें जीवन का सार छुपा है। प्राचीनकाल से लेकर अब तक सभी नर या नारी सौन्दर्य प्रेमी रहे हैं। मानव-मन की सदा से ही यह इच्छा रही है, कि वह समाज में ही नहीं, अपितु पूरे देश-विदेश का सबसे सुन्दर व्यक्ति हो, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। व्यक्ति क्या कुछ नहीं करता अपने पौरुष को सबके सामने प्रदर्शित करने के लिए और स्त्रियां क्या-क्या प्रयत्न नहीं करतीं अपने सौन्दर्य को अधिक से अधिक प्रस्फुटित करने के लिए।

जहां पुरुष अपने विरोचित लक्षणों को उभारने का प्रयत्न करता रहता है, वहीं नारी अपने-आप को विभिन्न रंगों में भिगो कर सौन्दर्य का प्रतिमान बनने का प्रयत्न करती रहती है, जहां हमारे मुख से "सौन्दर्य" शब्द निकलता है, वहीं एक नारी प्रतिबिम्ब हमारे नेत्रों में चित्रित होने लगता है, किन्तु वास्तविकता यह नहीं है, 'सौन्दर्य' कोई नारी शरीर नहीं है या किसी अप्सरा का उपमान ही नहीं है, सौन्दर्य तो सभी के पास होता है, केवल फर्क इतना है, कि किसी के पास तन का सौन्दर्य होता है तो किसी के पास मन का, हम उस सौन्दर्य का भली प्रकार से अनुमान नहीं लगा पाते।

हम सौन्दर्य की सही परिभाषा, उसके सही अर्थ को भूल चुके हैं। आज सौन्दर्य हमारे जीवन में रहा ही नहीं, धन के पीछे भागते हुए हम अर्थलोभी बन गए हैं, जिससे जीवन की अन्य वृत्तियां लुप्त सी हो गई हैं।

भारतीय जीवन में 'सौन्दर्य' को जीवन का उल्लास और उत्साह माना जाता है, यदि जीवन में सौन्दर्य ही नहीं, तो वह जीवन नीरस और उदास हो जाता है, और हममें से अधिकांश व्यक्ति ऐसा ही जीवन जी रहे हैं, हमारे होठों पर से मुस्कराहट खत्म हो गई है, जिसके फलस्वरूप हम प्रयत्न करके भी खिलखिला कर उन्मुक्त भाव से हंस नहीं सकते, एक प्रकार से हमारा जीवन बंध सा गया है, **जिस प्रकार एक जगह रुके पानी में सड़ांध पैदा हो जाती है, उसी प्रकार रुका हुआ जीवन भी निराश और बेजान सा हो जाता है।**

सौन्दर्य केवल दो ही प्रकार का होता है—

१. बाह्य सौन्दर्य

२. आन्तरिक सौन्दर्य।

बाह्य सौन्दर्य का अर्थ है— जो हमारी इन स्थूल आंखों से नजर आये— सुन्दर देह-यष्टि, गौर वर्ण, एक ऐसा चुम्बकीय व्यक्तित्व, जिसे पाने के लिए हर कोई उत्सुक हो उठता है। आज के इस आधुनिक युग में ऊपरी बनावट को ही मनुष्य ने सौन्दर्य

मान लिया है, भले ही उसके पास खाने को रोटी न हो, पहिनने को वस्त्र न हों, रहने को मकान न हो, किन्तु जैसे भी सम्भव हो, वह अपने प्रयत्नों से हर पल सुन्दर और आकर्षण युक्त बनने के लिए लालायित रहता है, और इसके लिए वह भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रसाधनों का उपयोग करता रहता है, किन्तु फिर भी वास्तविक सौन्दर्य को जुटा नहीं पाता, उसके द्वारा किये गये सभी उपाय निष्फल हो जाते हैं।

भारतीय साहित्य में प्रधानतः नारी को ही सौन्दर्य का पर्याय कहा गया है, अतः सौन्दर्य को समझने के लिए हमें "नारी सौन्दर्य" और "पुरुष सौन्दर्य" की एकात्मता को सर्वप्रथम समझना आवश्यक है।

"नारी सौन्दर्य" का अर्थ यहां किसी सुन्दर, सजीली काया से नहीं है, अपितु 'सम्पूर्ण प्रकृति' को भी शास्त्रों में नारी की उपमा दी गई है, और आंतरिक सौन्दर्य के रूप में 'ब्रह्म' को पुरुष की संज्ञा दी गई है, यही सौन्दर्य के आंतरिक व बाह्य रूप हैं। बाह्य सौन्दर्य अगर नारी है, तो आंतरिक सौन्दर्य पुरुष है।

सौन्दर्य की प्राप्ति के लिए मानव हर क्षण उद्विग्न रहता है, जिसे देखकर उसकी आंखों को ठंडक मिले, सुकून मिले, वह उस सौन्दर्य को देखने, उसे पाने की लालसा में अपने जीवन का एक लम्बा समय व्यतीत कर देता है, किन्तु जिस सौन्दर्य की उसे तलाश रहती है वह सौन्दर्य कहीं दूर तक भी दिखाई नहीं देता, क्योंकि उसे अपने जीवन में वास्तविक सौन्दर्य क्या है, इसका ज्ञान ही नहीं है।

यदि उसे यह ज्ञान हो जाये कि वास्तविक सौन्दर्य बाह्य आवरण में नहीं, अपितु आंतरिक मन में होता है, जिसे कहीं ढूढ़ना नहीं पड़ता, क्योंकि वह तो स्वयं के अन्दर ही छिपकर बैठा हुआ होता है, आवश्यकता है, उसे बाहर निकालने की, आवश्यकता है, उस आंतरिक सौन्दर्य से साक्षात्कार करने की, क्योंकि बिना उसे प्राप्त किये हमारा जीवन आनन्ददायक नहीं बन सकता, इसके लिए आवश्यकता है अपने अन्तर्मन को जाग्रत करने की, और जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक सौन्दर्य क्या है? यह जान पाना कठिन ही नहीं दुष्कर भी है।

हास्य, आमोद-प्रमोद, उत्साह, उमंग, ओज यही तो 'आन्तरिक सौन्दर्य' के मुख्य बिन्दु हैं, जब तक मनुष्य के जीवन में मस्ती, जोश, आन्तरिक प्रसन्नता व्याप्त नहीं होगी, तब तक उसे वास्तविक सौन्दर्य की उपलब्धि भी नहीं हो सकती।

हास्य, आमोद-प्रमोद, उत्साह, उमंग, ओज यही तो 'आन्तरिक सौन्दर्य' के मुख्य बिन्दु हैं, जब तक मनुष्य के जीवन में मस्ती, जोश, आन्तरिक प्रसन्नता व्याप्त नहीं होगी, तब तक उसे वास्तविक सौन्दर्य की उपलब्धि भी नहीं हो सकती।

यदि हम अपने शास्त्रों को टटोल कर देखें, तो देवताओं और हमारे पूर्वजों, ऋषियों ने भी प्रचुरता के साथ सौन्दर्य साधनाएं सम्पन्न की हैं, सौन्दर्य को जीवन में प्रमुख स्थान दिया है, क्योंकि जब तक जीवन में सौन्दर्य नहीं है, तब तक जीवन व्यर्थ और बेमानी ही है, इसीलिए उन उच्चकोटि के योगियों व ऋषियों आदि ने सौन्दर्य साधनाओं को सम्पन्न कर एक आकर्षक एवं सम्मोहक व्यक्तित्व को प्राप्त कर, अपने जीवन में सौन्दर्य से साक्षात्कार कर पूर्णता हासिल की है, जिसके फलस्वरूप वे सौन्दर्य के सही अर्थ को हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सके।

"गरिमा प्रयोग" ऐसा ही सर्वश्रेष्ठ एवं गोपनीय प्रयोग है, जो बहुत ही उच्चकोटि के योगियों एवं ऋषियों को ही ज्ञात है, हर किसी को नहीं। इस प्रयोग की यह विशिष्टता है, कि इसे सिद्ध करते ही इसके परिणाम साधक को शीघ्र ही प्राप्त होने लगते हैं।

सिद्धि प्राप्त साधक के मनश्च आत्मा पर इसका प्रभाव पड़ता ही है, जिससे कि उसके बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार के सौन्दर्य में निखार आने लग जाता है, वह कुछ ही दिनों बाद अपने आप में एक प्रकार का अनोखा परिवर्तन महसूस करने लग जाता है, उसे लगता है कि, जिस सौन्दर्य को वह बाहर तलाश रहा था, वह तो उसके अन्दर ही विद्यमान है, और धीरे-धीरे वह उस वास्तविक सौन्दर्य को प्राप्त कर अद्वितीय सौन्दर्य का स्वामी बन जाता है।

इस प्रयोग के माध्यम से जीवन की वे प्रमुख वृत्तियां, जो जीवन में आनन्द और हास्य का निर्माण करती हैं, वे उजागर होती हैं, और मनुष्य एक सुन्दर, मोहक, तेजस्वी एवं ओज पूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त कर लेता है, जिसे प्राप्त करने की प्रबल इच्छा को वह अपने अन्दर संजोये रहता है।

और तब वह झिलमिलाता हुआ आनन्द और तृप्ति से पूर्ण अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्त कर मानव-जीवन की पूर्णता को प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है, क्योंकि यह एक अद्वितीय प्रयोग है, जो मनुष्य को लौकिक ही नहीं, अपितु अलौकिक सौन्दर्य प्रदान करने में भी सक्षम है।

'गरिमा प्रयोग' को सम्पन्न करने से सम्मोहन, आकर्षण और एक अनूठी सुन्दरता उसके शरीर में व्याप्त हो जाती है, जो उसे किसी साधारण मानव से भिन्न ही घोषित करती है।

प्रस्तुत है सौन्दर्य का यह अनूठा प्रयोग, जिसे सम्पन्न कर आप स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करने लगेंगे। यह प्रयोग किसी भी उम्र के पुरुष - स्त्री सम्पन्न कर सकते हैं, क्योंकि मनुष्य का बचपन सौन्दर्य का माधुर्य है, तो यौवन सौन्दर्य की उमंग तथा वृद्धावस्था सौन्दर्य की गरिमा है।

वर्तमान युग में सौन्दर्य के प्रति पुरुष तथा नारी दोनों ही सजग हो चुके हैं, किन्तु उनकी यह सजगता मात्र बाह्य सौन्दर्य के लिए है। वे भूल चुके हैं कि बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ आन्तरिक सौन्दर्य भी आवश्यक है। एक प्रकार से आन्तरिक सौन्दर्य ही आधार होता है बाह्य सौन्दर्य का।

सामग्री– **मोती शंख, श्रृंगटिका, गरिमा माला।**

दिवस– वैशाख शुक्ल पक्ष, एकादशी, गुरुवार **११ मई ९५** या अन्य किसी भी **एकादशी** को।

समय– प्रातः ६ बजे या रात्रि ९.१५ से साधना प्रारम्भ करें।

विधि

स्नानादि से निवृत्त होकर नित्य पूजन क्रम यथावत् पूर्ण करें, फिर उसी आसन पर बैठे हुए ही अपने सामने किसी गहरे ताम्रपात्र में जल भर लें, इस जल में **''मोती शंख''** को डुबो दें तथा अलग किसी ताम्र प्लेट में कुंकुम से स्वस्तिक अंकित कर उस पर **''श्रृंगटिका''** को स्थापित करें, अन्य किसी पूजा विधान की इसमें आवश्यकता नहीं होती है, फिर **''गरिमा माला''** से ११ माला निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें–

मंत्र

ॐ ह्रीं गरिमा सिद्धि सौन्दर्य प्रदाय नमः

मंत्र-जप समाप्ति के उपरांत थोड़ा-सा जल ग्रहण कर लें और शेष जल को किसी पवित्र पौधे जैसे – पीपल या तुलसी की जड़ में चढ़ा दें। श्रृंगटिका तथा माला को किसी नदी या पवित्र सरोवर में प्रवाहित कर दें, अगली एकादशी तक इसी प्रकार नित्य रात्रि में मोती शंख को उसी ताम्र पात्र में जल भरकर डुबो दें और प्रातःकाल शंख को निकाल दें तथा थोड़ा-सा जल ग्रहण करें और बाकी जल को स्नान करने वाले पानी में मिलाकर उससे स्नान कर लें, **२५ मई ९५ गुरुवार, एकादशी** के दिन मोती शंख को भी नदी में विसर्जित कर दें। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के पश्चात् आप अपने अन्दर आये हुए परिवर्तनों को स्वयं एहसास करने लगेंगे। ❋

२१ अप्रैल ६५

को

पूज्य गुरुदेव के

में प्रवेश सर्वथा मुफ्त (कोई शिविर शुल्क नहीं)

आप क्यां करें. . .

- पत्रिका के अन्दर लगे पोस्टकार्ड को भली प्रकार से हिन्दी या अंग्रेजी में भर दें. . . और फिर अपना नाम व पता भी साफ-साफ लिख दें।
- आपको **दो द्विवर्षीय** पत्रिका सदस्य बनाने हैं, एक साल का पत्रिका शुल्क १८०/- रुपये है, इस प्रकार से प्रत्येक से ३६०/- रुपये लेने हैं।
- आपको हम मात्र सात सौ बीस रुपये की वी.पी.पी. से **''त्रैलोक्य विजय यंत्र''** भेज देंगे, ६६०/- रुपये तो शिविर शुल्क ही है, यह यंत्र तो आपको मात्र ६०/- रुपये में ही प्राप्त हो जाता है।
- वी. पी. पी. छुटने पर उन दोनों को पत्रिका सदस्य बना कर आपको रसीद भेज देंगे। इस प्रकार आपका शिविर शुल्क लगा ही नहीं और ६००/- रुपये का दुर्लभ ताम्र यंत्र मात्र ६०/- रुपये तथा २०/- रुपये डाक व्यय में ही आपको प्राप्त हो जायेगा।
- **आपको पत्रिका प्राप्ति के सात दिन के भीतर-भीतर पोस्टकार्ड भर कर भेज देना है।**

(इसमें आप अपनी पत्रिका सदस्यता नहीं बढ़ा सकते)

एक अभूतपूर्व योजना

आप सभी शिष्यों, साधकों के लिए

शिष्यों और गुरुवर की बातें, या मैं जानूं या वो जानें।

०१.०४.९५ से ०८.०४.९५ के बीच सिद्धाश्रम के आधार स्थल-कराला, दिल्ली

(देखें कवर पृष्ठ संख्या : तीन) में नवरात्रि शिविर **हम सब सिद्धाश्रम साधक परिवार** की तरफ से आयोजित हो रहा है. . .

१. और मैं इसमें सौ रुपये अनुदान भेज रहा हूं (मात्र सौ रुपये ही **मनीआर्डर** से भेजने हैं, ड्राफ्ट या चैक नहीं) न कम, न ज्यादा. . . आप जब शिविर में भाग लेने आयेंगे. . . तब आपको इस राशि के उपलक्ष्य में **''कात्यायनी यंत्र''** ताम्र पत्रांकित २x२ सर्वथा मुफ्त में प्रदान कर दिया जायेगा, मनीआर्डर जोधपुर के पते पर भेजें।

जोधपुर पता : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०) ३४२००१**

२. मैंने भोपाल शिविर में भाग लिया था, गुरु दक्षिणा के रूप में, मैंने . . . दीवार लेखन, पेम्पलेट वितरण, पांच पत्रिका सदस्य बना दिये हैं, जो गुरुदेव ने आज्ञा दी थी (कृपया प्रमाण भेजें) कृपया गुरुदेव से मेरा संन्यासी नाम लिखवा कर भिजवा दें।

आपने अपने क्षेत्र में जो कार्य किया है, उसे लिख भेजें–

दीवार लेखन : संख्या . . . . स्थान : . . . .

पेम्पलेट वितरण : संख्या . . . . स्थान : . . . .

पांच पत्रिका सदस्य : . . . . सदस्य संख्या व दिनांक . . . .

मेरा संन्यासी नाम (गुरुदेव द्वारा प्रदत्त) : . . . .

३. **'ध्यान, धारणा और समाधि'** (मूल्य ९६/-) तथा **'फिर दूर कहीं पायल खनकी'** (मूल्य ९६/-) गुरुदेव द्वारा लिखित ग्रंथ डाक खर्च जोड़कर वी.पी.पी. से भेज दें।

विशेष – पत्रिका प्राप्ति के एक सप्ताह के भीतर-भीतर यह पन्ना पत्रिका से अलग कर हमें भेज दें, उपरोक्त पुस्तकों पर गुरुदेव द्वारा स्वयं अपने हस्ताक्षर तथा आशीर्वाद युक्त पुस्तकें भेजने की व्यवस्था होगी **(मात्र प्रथम १०० सदस्यों को, जिनके द्वारा यह प्रपत्र पहले प्राप्त होगा),** जो कि आपके जीवन की धरोहर होगी।

पुस्तकें इस पते पर भेजें –

आपका नाम : ____________________

आपका पूरा पता : ____________________

____
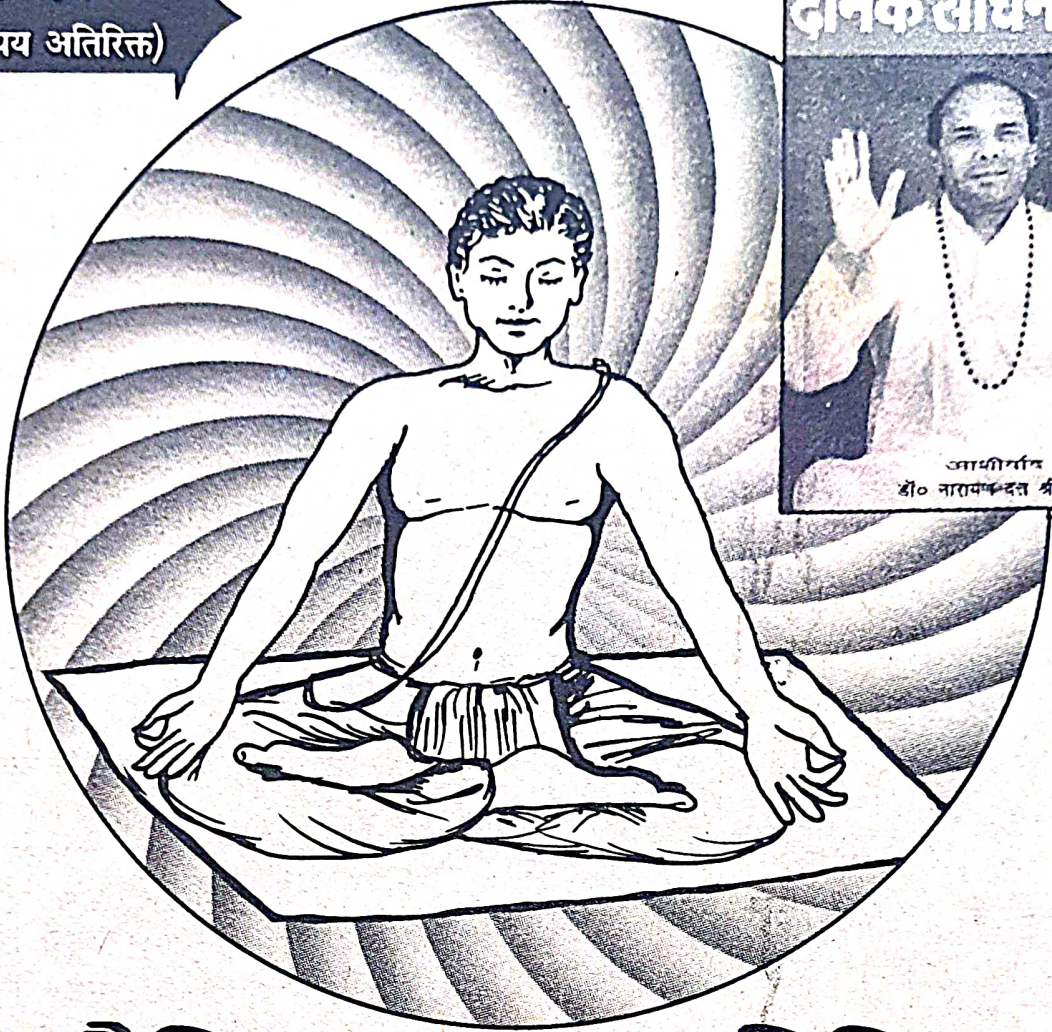
दैनिक साधना विधि

आशीर्वाद : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

परम पूज्य गुरुदेव **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"** के आशीर्वाद से युक्त

जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग साधना से प्रारम्भ होकर कुण्डलिनी जागरण की पूर्ण स्थिति में पहुंचना है। साधना के माध्यम से जीवन के कष्ट कटते हैं, और उदय होता है— नये श्रेष्ठ, अहोभाव, परिपूर्ण आनन्ददायक जीवन का।

क्या आप नित्य प्रति साधना करते हैं?

– विशिष्ट साधनाओं के प्रारम्भ में क्या प्रक्रिया होनी चाहिए, क्या आपको इसका ज्ञान है?
– स्पष्ट है, कि आप को चाहिए शुद्ध साधनात्मक ज्ञान, दैनिक साधना विधान।
– जिसे सम्पन्न कर आप कोई भी विशेष साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।
– हजारों, लाखों शिष्यों, पाठकों, साधकों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में **दैनिक साधना का विधान।**

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०९

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

मातंगी हृदय प्रयोग

दुःख और दरिद्रता का नाश कर समस्त सुखों को देने वाला

आज मैं अपने जीवन के उस पक्ष को स्पष्ट कर रहा हूं, जो मेरे अतिरिक्त अन्य किसी को भी ज्ञात नहीं, यहां तक कि मेरी धर्मपत्नी को भी नहीं। यह एक विशेष साधना है, जिसे सिद्ध कर मैं समाज का मुंह बंद कर सका, और अपने जीवन में दरिद्रता जैसे अभिशाप को हमेशा-हमेशा के लिए हटा सका . . .आज मैं बहुत ही सुख और सम्पन्नतायुक्त जीवन व्यतीत कर रहा हूं। मेरे पास आज रहने के लिए अपना एक बड़ा-सा घर है, धन की भी कोई कमी नहीं है, एक पुत्र एवं पुत्री भी है, पूरा वातावरण सुखमय है।

. . . लेकिन इस सुख-सम्पन्नता के प्रदाता तो सही अर्थों में वे 'हरिहर बाबा' हैं, जिन्होंने मुझे उन विकट परिस्थितियों में "मातंगी हृदय प्रयोग" को अपने सामने बैठाकर सिद्ध करवाया, जिसकी वजह से आज मैं एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा हूं. . . और उनसे हुई भेंटवार्ता के बारे में ही मैं आपको बताने जा रहा हूं।

जब मैं २३ वर्षीय युवक था, दुबली-पतली काया थी और शारीरिक, मानसिक, आर्थिक तीनों ही दृष्टियों से मैं रुग्ण था, तब समय ने मेरे मुंह पर जोरदार तमाचा मारा था। घर में खाने के लिए रोटी नहीं थी, पहिनने को कपड़े नहीं थे, व्यापार ठप्प हो गया था, यहां तक कि घर की एक-एक चीज गिरवी रखी जा चुकी थी, शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो जाने के कारण मेरे शरीर में इतनी ताकत भी नहीं रही थी, कि मैं दूर जाकर कहीं व्यापार कर सकूं। हर जगह से सगे-सम्बन्धियों के दरवाजे भी मेरे लिए बंद हो चुके थे। पत्नी के रोज-रोज के कलह ने मेरी मानसिक स्थिति को भी बिगाड़ कर रख दिया था, और मैं जिस किसी कार्य को करता, उसमें असफलता ही मिलती, इतना सब होते हुए भी समाज ने

मुझे प्रताड़नाओं, आलोचनाओं के सिवाय और कुछ नहीं दिया, और मुझे आवारा, निकम्मा घोषित कर दिया।

रोज-रोज इस प्रकार की गालियों को सुनकर मेरे कान पक चुके थे, ऐसे जीवन से मैं तंग आ चुका था, और **भगवान से हर रोज प्रार्थना करता, कि ऐसा जीवन देखने से तो अच्छा है, कि मैं मर जाऊं। समाज के इन व्यंग-वाणों ने मेरे सीने को छलनी-छलनी कर दिया था, और यहां तक कि मेरी पत्नी और बच्चे भी मुझे घृणा की नजरों से देखने लगे थे।**

अब इससे अधिक सहन कर पाना मेरी क्षमता के बाहर हो गया था, और सहन करते-करते मेरी स्थिति ऐसी हो गई थी, कि आत्महत्या करने के अलावा मेरे मानस में और कोई विचार जन्म नहीं ले रहा था, इसके अलावा मेरे पास और कोई चारा भी नहीं था, तब मैंने एक पत्र में यह लिखा, कि "मैं आत्महत्या करने जा रहा हूं, मुझे ढूंढ़ने की कोशिश मत करना", ऐसा लिखकर उस पत्र को घर में चुपचाप एक स्थान पर रख घर से बाहर निकल पड़ा।

मेरे घर से १२ किलोमीटर दूर ही एक नदी थी, जिसमें मैंने बिना कुछ सोचे-समझे ही छलांग लगा दी, लेकिन, विधाता को शायद कुछ और ही मंजूर था, मेरी बेबसी, कि मैं चाह कर भी मर न सका, और उस नदी से भी जीवित बच निकला, थोड़ी देर बाद जब मेरी आंख खुली, तो मैंने अपने-आप को नदी के दूसरे छोर पर एक पर्ण-कुटिया में पाया, जिसके चारों तरफ रेत ही रेत थी और एक घना जंगल था, उस कुटिया में एक ओर लम्बी दाढ़ी वाले, बलिष्ठ शरीर के एक बाबा आंखें बंद किए बैठे थे, यह दृश्य देखकर थोड़ी देर के लिए तो मैं आश्चर्यचकित रह गया, क्योंकि मेरे लिए तो वहां कि हर चीज ही नई थी।

जब मैं उठकर उस बाबा के पास पहुंचा, तो उन्होंने मेरे पास आते ही अपनी आंखें खोलकर मुस्कराते हुए मेरी ओर देखकर कहा — "तुम मुझे नहीं जानते, लेकिन मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूं, चिन्ता मत करो, सब ठीक हो जाएगा", ऐसा कहकर मेरे सिर पर हाथ फेरा, उनकी ममतामयी दृष्टि और हाथ के स्पर्श से मेरी आंखों से झर-झर अश्रु प्रवाहित होने लगे, और मैं सुबक-सुबक कर रोने लगा, तब उन्होंने मुझ से कहा — अभी थोड़े दिन तुम यहीं मेरे पास रहो, फिर चले जाना, मैं भी वापिस समाज की उन प्रताड़नाओं और व्यंग-वाणों को झेलना नहीं चाहता था।

मैं करीब १०-१५ दिन वहीं रहा, और वहां रहकर उन 'हरिहर बाबा' की दिन-रात सेवा की। सुबह स्नान आदि से निवृत्त हो, उनकी कुटिया की साफ-सफाई करता, फिर उन्हें प्रणाम कर जंगल से लकड़ी लाने के लिए चला जाता, उनके खाने-पीने और रहने का बहुत अच्छी तरह

से ध्यान रखता, मैं रात को उनके सोने के बाद ही सोता और उनके उठने से पहले ही उठ जाता।

मेरी सेवा से वे बहुत प्रसन्न थे, और मुझे भी वहां रहकर किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं थी, लेकिन कभी-कभी घर की याद आ जाती और यही सोचकर, कि पत्नी और बच्चे कैसे होंगे, आंखों में पानी भर आता। मेरे इस चिन्तन को शायद बाबा बहुत दिन पहले से ही भांप गए थे, तब उन्होंने मुझे एक दिन अपने पास बैठाकर कहा— **"मैं जानता हूं, तुम्हें अपने घर-परिवार की चिन्ता लगी है, और तुम्हारे यहां से जाने का समय भी आ गया है, इसीलिए मैं चाहता हूं, कि तुम्हें ऐसी गूढ़ विद्या देकर भेजूं, जिससे कि तुम उस समाज को, जिसने तुम्हें मृत्यु के लिए विवश कर दिया था, जिसने तुम्हें जलील किया था, जिसने तुम्हें ठोकर मारी थी, इस बार मुंह-तोड़ जवाब दे सको, और एक सुखी तथा आनन्द युक्त जीवन व्यतीत कर सको, किन्तु इसके लिए मैं तुम्हें कल प्रातःकाल एक साधना-पद्धति सम्पन्न करवाऊंगा, जिस के द्वारा तुम ऐसा करने में पूर्ण सक्षम बन सकोगे।"**

और तब उन्होंने मुझे भोर में ४-५ बजे के आस-पास उस क्रिया-पद्धति को सम्पन्न करवाया, जिससे मैं एक श्रेष्ठ जीवन जीने के योग्य बन सका, क्योंकि मातंगी अपने भक्त के सभी दुःखों व दरिद्रता का नाश कर समस्त सुखों को देने वाली देवी हैं... और यह "मातंगी हृदय प्रयोग" द्वारा ही सम्भव है।

इसे सम्पन्न करने के बाद मातंगी उस साधक के हृदय में निवास करने लगती है, और उसके भौतिक जीवन के समस्त दुःखों का निराकरण कर उसके जीवन को श्रेष्ठता प्रदान करने में सहायक होती है।

चूंकि दस महाविद्याएं "भोग और मोक्ष" दोनों को प्रदान करने वाली हैं, और मातंगी उन दस महाविद्याओं में से एक है, जिनकी साधना करना अपने-आप में श्रेष्ठ कहा जाता है।
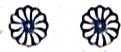
जिस प्रकार गरुड़ सर्पों का नाश करता है, उसी प्रकार मातंगी देवी की उपासना के फलस्वरूप साधक भी अपने शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

मातंगी साधना कई विधियों से सम्पन्न की जाती है, किन्तु श्रेष्ठ मातंगी हृदय प्रयोग सम्पन्न कर अपने शत्रुओं पर पूर्ण विजय तथा पूर्ण मान-सम्मान, प्रतिष्ठा व ऐश्वर्य प्राप्त किया जा सकता है।

"मातंगी हृदय प्रयोग" को सम्पन्न करने के बाद मैं शारीरिक, मानसिक और आर्थिक तीनों ही दृष्टियों से पूर्ण स्वस्थ, सुखी और सम्पन्नता युक्त जीवन प्राप्त कर सका, और अब मेरा गृहस्थ जीवन भी पूर्णतः सुखमय है, अतः इस प्रयोग के द्वारा साधक सभी भौतिक-सुखों की प्राप्ति करने में सक्षम हो सकता है।

यह एक ऐसी साधना है, जो कि पूरे जीवन को बदल कर रख देती है, इसीलिए वर्ष में १ दिन इस साधना के लिए निर्धारित किया गया है, जिसे **"मातंगी दिवस"** कहते हैं, क्योंकि समय का अपने-आप में विशेष महत्व होता है, इसीलिए साधक को विशेष क्षणों का लाभ अवश्य उठाना चाहिए, अतः **मातंगी दिवस** को या **२६ जून ९५ आषाढ़ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी** के दिन इस साधना को सम्पन्न करने से साधक को शीघ्र ही सफलता मिलती है।

यदि किसी कारणवश वह इस दिन यह प्रयोग सम्पन्न न कर सके, तो किसी भी **रविवार** के दिन वह साधक इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है। इस प्रयोग को कोई भी स्त्री या पुरुष सिद्ध कर सकता है।

प्रयोग विधि

साधक को चाहिए कि वह प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त हो, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर, आसन पर बैठ जाए, और अपने सामने **गुरु चित्र** , **यंत्र** और दरिद्रता विनाशक **"मातंगी यंत्र"** एक लकड़ी के बाजोट पर स्थापित कर दे, तथा उसका कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन सम्पन्न करे।

फिर साधक **"मांतगी गुटिका"** को आसन के नीचे दबाकर १ माला गुरु मंत्र-जप सम्पन्न करे तथा **"मातंगेश्वरी माला"** से २५ मिनट तक निम्न मंत्र का जप करे—

मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्टचाण्डालि श्री मातंगेश्वरि सर्व जनवशंकरि स्वाहा

मंत्र-जप सम्पन्न होने के पश्चात् उस गुटिका, यंत्र एवं माला को किसी नदी, कुंए या तालाब में विसर्जित कर दे।

माला, गुटिका और यंत्र पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं मंत्र-सिद्ध होने चाहिए।

इसमें साधक पीले वस्त्र धारण करे। इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण हो जाता है और साधक को ३-४ महीने के अंदर-अंदर अनुकूल फल प्राप्त होने लगते हैं, आवश्यकता है, तो साधना में पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ मंत्र-जप सम्पन्न करने की।

त्रिवेणी का महाश्मशान

● विश्वनाथ यादव

इसके पूर्व आपने पढ़ा —

त्रिवेणी के प्रसिद्ध मुकुन्द देव घाट पर पं० भोलानाथ कंठाभरण तथा जगन्नाथ पंडित के मध्य अनवरत् सात दिन तक शास्त्रार्थ चलता रहा, इस शास्त्रार्थ में जगन्नाथ पंडित को अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी, जिससे उन्हें मर्मान्तक कष्ट पहुंचा और उन्होंने प्राण त्याग करने का निश्चय कर लिया। जगन्नाथ पंडित के शिष्य रामदास ने उन्हें ऐसा करने से रोका, किन्तु जगन्नाथ पंडित ने रामदास से कहा— "तुम मेरे पुत्र को महाविद्या काली, तारा सिद्ध होने के लिए शव साधना कराओ और इसी घाट पर भोलानाथ कंठाभरण को जब वह परास्त करेगा, तभी मेरी आत्मा को शांति प्राप्त होगी", इसके बाद जगन्नाथ पंडित ने रामदास को कुछ विशिष्ट मंत्र प्रदान किए और शरीर त्याग दिया . . .

(इसके आगे पढ़िये)

सप्तग्राम भारतवर्ष का अन्यतम प्राचीन शहर और बन्दरगाह था। समुद्रगामी जहाज सप्तग्राम पहुंचने के पहले त्रिवेणी में विश्राम लेते थे। सोलहवीं शताब्दी तक सप्तग्राम एक विशिष्ट वाणिज्य केन्द्र था। १२४० ई० से गंगा नदी की गति में परिवर्तन से सरस्वती नदी कीचड़ और बालू में परिवर्तित हो सूखती चली गई, इसलिए सरस्वती के तट पर अवस्थित सप्तग्राम का व्यवसाय—वाणिज्य समाप्त हो गया। फलस्वरूप त्रिवेणी की अर्थनैतिक प्रगति में विराम लग गया।

इससे त्रिवेणी के ज्ञान-प्रसार क्षेत्र में उसकी प्रभुता में जरा भी अवनति नहीं हुई। उस समय भी त्रिवेणी में ३० के करीब ब्राह्मणों के चतुस्पाठी थे, जहां दूर-दूर से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने को आया करते थे। उस समय विद्या-शिक्षा व शिक्षण पूर्ण कर पंडित दिग्विजय को निकल पड़ते। जीतने पर उन्हें दिग्विजयी पंडित की आख्या प्राप्त होती। पंडितों के लिए यह सम्मान एक चक्रवर्ती सम्राट होने के सम्मान से कम नहीं था।

त्रिवेणी के मुकुन्द देव घाट के उत्तर में जो श्मशान है, उसे लोग 'त्रिवेणी का महाश्मशान' के नाम से जानते हैं। इस महाश्मशान के सम्बन्ध में, बहुकाल से लोक परम्परा के रूप में अलौकिक घटनाएं लोगों में प्रसिद्धि प्राप्त करती आ रही हैं।

उपयुक्त समय आने पर ब्राह्मणी को पुत्र की प्राप्ति हुई। रामदास अब तक साधक बन चुका था, वह गुरु के आदेश-पालन के लिए व्रती हुआ। शिशु के लालन-पालन में वह अपना अधिकतर समय व्यतीत करता, वह शिशु को लेकर श्मशान जाता। धधकती चिता के सामने जब आग की तपन सेक कर किसी शव की टांग ऊपर उठ जाती, तो शव जलाने वाले बांस की लट्ठ से उन्हें मार कर, टांग को घुटने से तोड़कर पुनः अग्नि को समर्पित कर देता। शिशु इस दृश्य को विस्मय से देख किलकारियां भरता।

त्रिवेणी का महाश्मशान, चारों तरफ गंदगी का असह्य परिवेश। यत्र-तत्र टूटी-फूटी पड़ी मानव हड्डियां, अधजली लकड़ियां, राखों के ढेर, रंग-बिरंगे चिथड़े, सूप, झाड़ू और हवा के झोंकों के साथ आती सड़ान्ध की बदबू।

इस महाश्मशान में कोई न कोई शव जलता ही रहता। जलते शवों से दूर झाड़-झंखाड़ों में उल्लू, चील और गिद्धों की टकटकी लगाती भूखी नजरें, दूर के खेतों से सियारों का क्रन्दन।

बचपन से ही गुरु-पुत्र को रामदास ने श्मशान के इस भयानक परिवेश का अभ्यस्त बना दिया था। जब शिशु कुछ बड़ा हुआ तो रामदास स्वयं श्मशान में उकड़ू हो शिशु को अपने पीठ पर बिठा, उसे 'काली' नाम का जप कराने लगा। उस छोटी सी उम्र में ही वह गुरु-पुत्र के मन में श्मशान-भीति को समाप्त कर चुका था।

समय गुजरता गया। शिशु अब बालक बन चुका था। रामदास ने बालक का उपनयन संस्कार सम्पन्न करा, उसे उसके पिता के साथ घटी घटना को सविस्तार बताकर उसे सिद्धि के लिए मानसिक रूप से तैयार किया, फिर तिथि-नक्षत्र को अनुकूल पा, अमावस्या की एक रात्रि को बालक को लेकर त्रिवेणी के महाश्मशान के लिए प्रस्थान किया, उस दिन दोनों ने ही उपवास रखा था।

आकाश गर्जन कर रहा था। जोरों की वृष्टि हो रही थी। प्रबल वेग से वायु बहने लगी, रामदास इसकी परवाह न कर, पूजा की वस्तुएं व गुरु-पुत्र को संग ले महाश्मशान में उपस्थित हुआ। रामदास अनुभव कर रहा था, कि एक अशरीरी छाया गृह से प्रस्थान करने से महाश्मशान पहुंचने तक उसके आगे-आगे उसका पथ-निर्देशन करा बढ़ती जा रही थी। गुरु की अशरीरी उपस्थिति से उसका उत्साह दूना बढ़ गया, उसने गुरु को मन ही मन प्रणाम किया।

त्रिवेणी के महाश्मशान में उपस्थित हो रामदास, फिर शास्त्रमत से पूजा की व्यवस्था में जुट गया। कुछ ही दूरी पर एक चिता की अधजली लकड़ियां चटख रही थीं।

रामदास ने पहले गुरु की स्तुति की —

ॐ नमस्तुभ्यम् महामंत्र दायिने शिव रूपिणे।
ब्रह्मज्ञान प्रकाशाय संसार-दुःख तारिणे।।
अति सौम्याय दिव्याय वीराय मोहान्ध हारिणे।

नमस्ते कुलनाथाय कुल कौलिन्य दायिने।।
शिव तत्त्व-प्रबोधाय ब्रह्मतत्त्व-प्रकाशिने।
नमस्ते गुरवे तुभ्यम् साधकाभय दायिने।।
अनाचाराचार भाव-बोधाय भाव हेतवे।
भावाभाव दि निमुक्त-मुक्तये गुरवे नमः ।।

(महामंत्र दाता, ब्रह्म ज्ञान के प्रकाशक, संसार-दुःख के निवर्तक, अतिसौम्य, दिव्य व वीर रूपी अज्ञान-निवर्तक शिव रूपी गुरुदेव को नमस्कार। साधकों के अभयदाता, अनाचार व आचार भाव के उपदेष्टा, दिव्यादि भाव के हेतु, भावा भावातीत मूर्ति गुरुदेव को नमस्कार)

रामदास ने इसके बाद सिद्धि-स्थान की रक्षा के लिए मंत्र पढ़ा, इसके बाद पूजन कर उसने बालक के कान में महामंत्र पढ़ा, तथा उसे उत्साहित करने लगा। फिर उसने पेट के बल सो रहे बालक को अपनी पीठ पर बैठा, उसे महामंत्र जप करने को कहा तथा स्वयं कुछ विशिष्ट क्रिया सम्पादित कर देह त्याग दिया, रामदास का शरीर शांत हो गया। बालक जरा भी भयभीत न हो रामदास की पीठ पर बैठा महामंत्र का जप करता ही रहा।

महामंत्र का जप अविराम चलता रहा। बालक को भयभीत करने के लिए सर्प, बाघ, भालू, भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी, भैरवी, योगिनी एक-एक कर सभी आए, व्यर्थ हो वापिस चले गए। बालक ने रामदास के निर्देशानुसार उन पर जरा भी कर्णपात नहीं किया।

शून्य से किसी रमणी की केशराशि नीचे गिरी और फिर शून्य से ही शव का गलित मांस गिर वातावरण को दुर्गन्धमय व अनिष्ट कर दिया, किन्तु बालक उसी तरह रामदास के शव पर बैठे महामंत्र का जप करता रहा।

इसके बाद कोई नारी उसकी मां का रूप धारण कर प्रकट हुई तथा बालक को महामंत्र का जप करने से निषेध कर, उसे गृह वापिस लौटने के लिए अनुनय करने लगी, किन्तु रामदास के निर्देशानुसार बालक ने उसकी बातों पर जरा भी कर्णपात नहीं किया।

इसी तरह के व्यवधानों के मध्य बालक अविचलित हो महामंत्र का जप करता रहा। कठोर साधना से उसे कोई भी डिगा नहीं सका। अंत में रात्रि के तृतीय प्रहर की समाप्ति हुई। शुक्रतारा के उदय होने का समय हुआ। सहसा पूर्व दिशा से अरुणोदय के समान मृदुमंद मलय पवन बहने लगी। महाश्मशान के दुर्गन्धमय वातावरण में वसन्त का प्रवेश हुआ। कहीं से "पिक" की ध्वनि आयी, निकट ही भ्रमर गुंजन करने लगे। बालक ने हठात् पूर्व के आकाश में एक नील कादम्बिनी को उदय होते देखा। सहसा कादम्बिनी के मध्य से कोटि सूर्य समुज्वल या कोटि चन्द्र सुशीतल अपूर्व मनोरम ज्योति नदी में से धीरे-धीरे प्रकट हुई। बालक को उस समय तक दिव्य-ज्ञान प्राप्त हो चुका था, वह उठ कर मां के चरणों में लोट गया।

जगतजननी ने बालक को वर मांगने का आदेश दिया। बालक ने पहले रामदास को वर देने का अनुरोध किया। इस पर जगदम्बा ने कहा —"पुत्र, जो मर गया है, वह वर कैसे लेगा?"

तब बालक ने हठ किया कि रामदास को वर न देने पर वह वर नहीं लेगा। जगदम्बा ने बालक की दृढ़ता व सत्यता को देख रामदास के मस्तक पर अपने वाम पद से स्पर्श कर कहा —

"उतिष्ठ वत्स मुक्तोऽ सि योग निद्रां परित्यज।
पश्य मे परमं रूपं यथोचितं वरं वृणु।।

रामदास ने उठकर सामने जगदम्बा को देखा, तो वह आनन्द से आत्मविभोर हो उठा। वह साष्टांग भूमि पर गिर, मां को दोनों हाथ जोड़ स्तुति करने लगा। जगदम्बा ने रामदास से वर मांगने को कहा, तो उसने मां की कृपा मांगी।

फिर मां ने बालक से वर मांगने को कहा। बालक ने सर्व विद्या पारदर्शी व शास्त्रों में अजेय होने का वर मांगा।

जगदम्बा ने तथास्तु कह, आठ वर्षीय उस तपस्वी बालक को अपनी गोद में ले, उसके मुख का चुम्बन किया। देवी-देवता जिसकी हर समय आकांक्षा करते थे, बालक ने वह पियूष पान कर देवत्व को प्राप्त किया। जगदम्बा उन दोनों साधकों को आशीर्वाद प्रदान कर शून्य में विलीन हो गईं। रामदास उस बालक के साथ जब गृह को वापिस लौटा, उस समय सूर्य की किरणें निशा को ग्रास कर चुकी थीं।

दो दिन बाद रामदास उस बालक को लेकर भोलानाथ कंठाभरण के पास पहुंचा तथा उसे बालक से शास्त्रार्थ करने का अनुरोध किया। भोलानाथ स्वयं एक सिद्ध पुरुष थे, उन्हें यह समझते देर नहीं लगी, कि बालक जगदम्बा की कृपा प्राप्त कर चुका है, उन्होंने अपनी पराजय वहीं स्वीकार कर ली तथा बालक की तुष्टि के लिए त्रिवेणी आए।

एक बार फिर त्रिवेणी के मुकुंद देव घाट पर शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ। इस शास्त्रार्थ को देखने के लिए ब्राह्मण समाज के अलावा दूसरे सम्प्रदाय के लोग भी उमड़ पड़े थे। जगन्नाथ कंठाभरण ने बालक की विद्वता की प्रशंसा की, तथा उस पर मां की कृपा होने के कारण जन समक्ष के सामने प्रणाम कर, अपनी पराजय स्वीकार कर ली।

भृत्य रामदास के नेत्रों से अविरल अश्रु बह रहे थे, वह शून्य में देख रहा था. . . क्या इस दृश्य को उसके गुरु जगन्नाथ पंडित देख रहे होंगे?

. . . उनका प्रतिशोध पूरा हुआ है, और अब उनकी भटकती आत्मा तृप्त हुई होगी।

रामदास ने त्रिवेणी के महाश्मशान की दिशा में देखा। कोई चिता धूं- धूं कर जल रही थी। सत्य की लीला-भूमि की ओर उसके दोनों हाथ कृतज्ञता व भक्ति से स्वतः जुड़ गए।

(समाप्त)
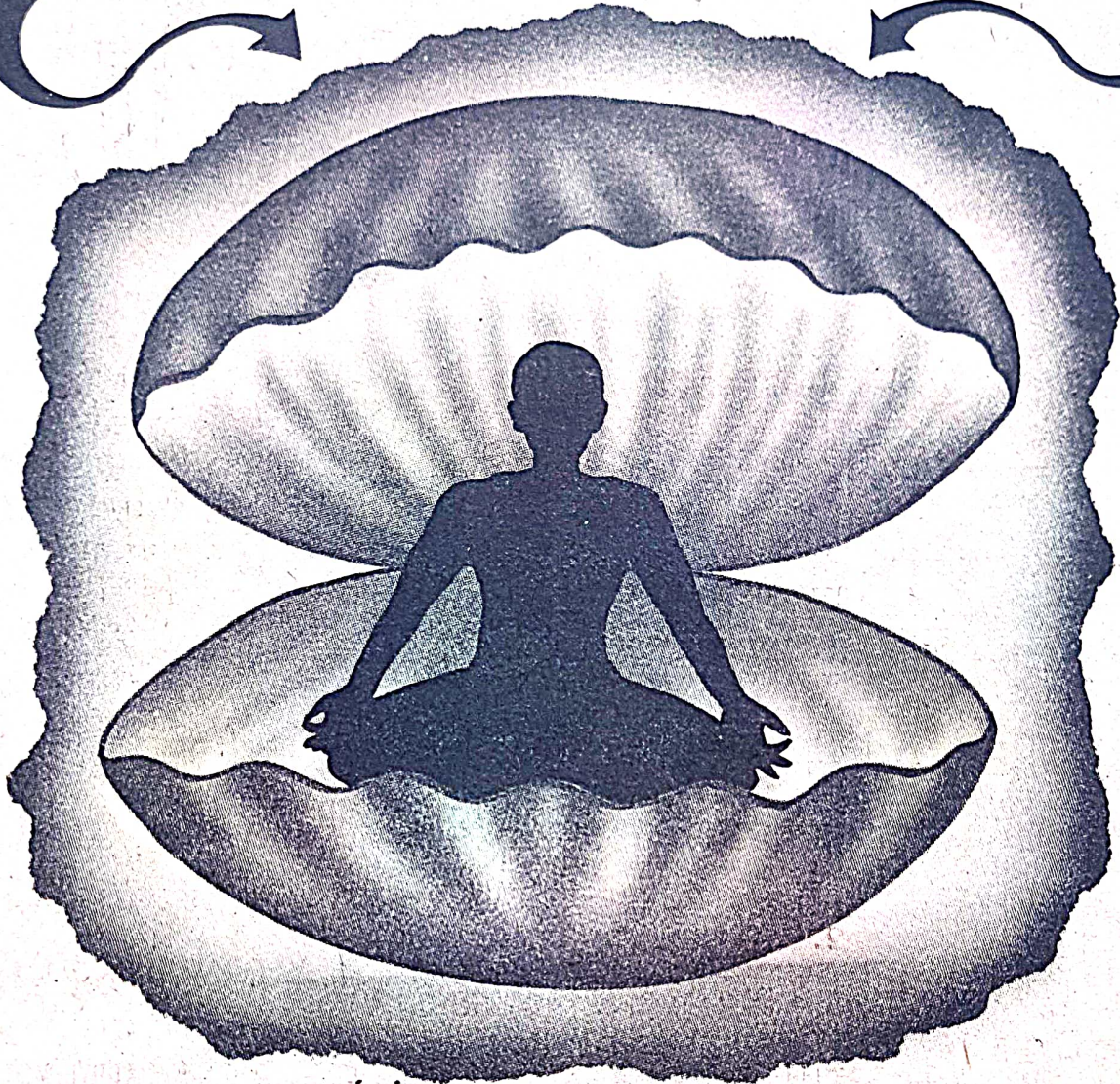
जब जीवन में विष घुल जाता है और समस्याओं के हल सही नहीं सूझते. . .यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाए

- **कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो**
- **शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों**
- **पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना**
- **विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए**
- **घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना**
- **ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो**
- **निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता चला जाना**
- **बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों**

या फिर झगड़े- झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमेबाजी, जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।**

संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. .

(न्यौछावर - ११०००/- मात्र) जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन:०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोन:०११-७१८२२४८, फेक्स:०११-७१८६७००
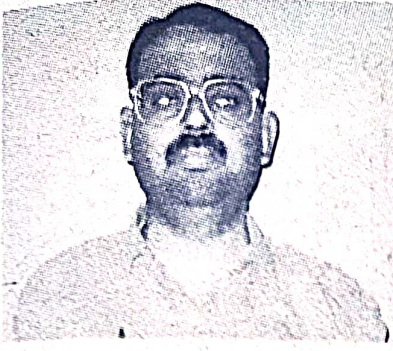
डायबिटिज (मधुमेह)

डॉ० एस० एन० दुबे

विकसित देशों में तीन रोग अधिक देखे जा सकते हैं— उच्च रक्तचाप, डायबिटीज एवं मानसिक तनाव। अब विकासशील देशों में (भारत भी एक विकासशील देश है) भी यही रवैया अपने पैर जमाता जा रहा है। ये तीनों ही एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं व इनके पनपने में भी एक-दूसरे का हाथ रहता है। हालांकि पैतृक (Genetics) और कुछ अन्य कारण भी इन बीमारियों को बनाते हैं, परन्तु यदि हम उन कारणों (Factors) की तरफ ध्यान दें, जिसमें कुछ किया जा सकता है, तो **इन तीनों ही बीमारियों पर कड़ी नजर, नियमित ध्यान (Observation), तुरन्त सही उपचार व सलाह दिये जाने का बहुत बड़ा सहयोग है, जिससे तीनों ही रोगों का बढ़ना रोका जा सकता है।**

पाश्चात्य सभ्यता की तेज जीवन की रफ्तार व पूर्व सभ्यता का घी व मीठे का अधिक उपयोग दोनों इन बीमारियों से जुड़ी पृष्ठभूमि है।

मधुमेह मुख्यतः दो प्रकार का होता है—

1. IDDM– इस मधुमेह का इलाज पूर्णतः "इन्सूलीन इन्जेक्शन" पर ही आधारित है।

2. NIDDM– इस मधुमेह का इलाज पूर्णतः "इन्सूलीन इन्जेक्शन" पर आधारित नहीं है।

1. IDDM (Type I)

यह वह बीमारी है, जिसमें जन्म से ही 'इन्सूलीन' की कमी होती है। बचपन से ही ब्लड शुगर के अनुपात (Level) के अनुसार लक्षण रहते हैं, पर अक्सर इन्फेक्शन हो जाया करता है व ब्लड शुगर व यूरिन शुगर की जांच से ही यह पता चलता है। इसका कारण शरीर में 'इन्सूलीन' का अभाव होता है, अतः इसका इलाज केवल इन्सूलीन (दवा) ही होता है। यह बहुत ही कम देखने में आता है व इसका निरीक्षण (Diagnose) करने का पूरा दायित्व डॉक्टर का ही है।

2. NIDDM (Type II)

इसको Maturity onset Diabetas Mellitus भी कहा जाता है, क्योंकि यह अक्सर ४०-५० वर्ष की अवस्था से पहले नहीं होती, इस तरह की डायबिटिज में प्रायः मरीज का वजन ज्यादा होता है। यह धीरे-धीरे बढ़ता है, और यदि इसे जल्दी ही पहिचान लिया जाए, और पूरा परहेज व अनुशासित जीवन शैली अपना लीया जाए, तो अक्सर इसका बढ़ना रुक जाता है, और प्रायः यह बिना दवा के भी ठीक रहता है। खाने में **कार्बोहाईड्रेट** व **वसा** की मात्रा घटाने, नियमित व्यायाम व शारीरिक श्रम करने से, निढाल करने वाली थकावट से यदि बचा जाए, तो जीवन पर्यन्त शरीर निरोग रह सकता है।

अब मैं जिज्ञासाओं व भ्रान्तियों को दूर करना चाहता हूं, क्योंकि अक्सर देखा गया है, कि व्यक्ति इस प्रकार के पूर्वाग्रह से ग्रसित रहते हैं, कि मुझे पेशाब की शुगर है अथवा मुझे केवल खून में शुगर है। क्या पेशाब (मूत्र) की शुगर या खून की शुगर अलग-अलग बीमारियां हैं? इसका केवल दृढ़ उत्तर है— "नहीं"। यह एक ही बीमारी अवस्था के लक्षण हैं। शुरु में जब ब्लड शुगर एक निश्चित सीमा (Level Renal Threshhold) से ऊपर चली जाती है, तो शुगर मूत्र से बाहर फेंकी जाती है, इस प्रयास में की ब्लड शुगर सामान्य रहे। यह अवस्था बहुत अल्पकालिक होती है, व इससे अगली अवस्था वह आ जाती है, जब रक्त व मूत्र दोनों में ही शुगर उपस्थित होती है। सही उपचार से वापिस किसी भी अवस्था में इसे लाया जा सकता है।

यदि ठीक से उपचार न हो तो अधिक 'ब्लड शुगर' से गुर्दा खराब हो जाता है व ऐसी स्थिति में 'ब्लड शुगर' बहुत ज्यादा होने पर भी कभी-कभी 'यूरिन शुगर' नहीं होती। यह एक गम्भीर अवस्था है, और इसका इलाज करना मुश्किल व कम परिणाम देने वाला होता है, क्योंकि इस अवस्था में शरीर के कई महत्वपूर्ण अंगों के काम करने में त्रुटि हो जाती है, तथा इलाज दुष्कर हो जाता है।

इस अवस्था में जाने से बचने के लिए 'डायबिटीज' का तुरन्त निदान व उपचार आवश्यक है। ❋

राशिफल

मेष - यह माह आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा, आपके कठोर परिश्रम से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा तथा व्यापार में उन्नति होगी। १, २, ४, ६, १०, २०, २७ तारीखें आपके लिए विशेष अनुकूल रहेंगी। महिलाएं गृहस्थ में सहयोगी रुख बनाकर चलें, उपेक्षा न बरतें, संतान की ओर से अनुकूल समाचार प्राप्त होगा। आप जिस कार्य को कर रहे हैं उसी को पूरा करें, कुछं विलम्ब से परन्तु लाभ होगा। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें, बेरोजगार व्यक्ति नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय की ओर ध्यान दें। कुछ नवीन बाधाएं आयेंगी, धैर्यपूर्वक एवं सावधानी के साथ मुकाबला करें। राजकार्य में संघर्ष की स्थिति बनेगी। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी।

मिथुन - मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी, इस माह ३, ५, ६, १६, १६, २३, २६ तारीख सभी दृष्टियों से अनुकूल सिद्ध होंगी। मन अशांत रहेगा, किन्तु धार्मिक और घरेलू मामलों में उपेक्षा न बरतें। महिलाएं परिवार की ओर ध्यान दें। संतान की ओर से अनुकूल स्थिति रहेगी। कारोबारी यात्रा लाभप्रद रहेगी, वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें। कला-जगत के व्यक्ति आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। अपने ही प्रयासों से रुका हुआ कार्य सफल होगा। साधनात्मक दृष्टि से समय अनुकूल एवं सफलतादायक रहेगा। पत्नी से वैचारिक सहयोग की प्राप्ति। परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। नवीन व्यापार आरम्भ कर सकते हैं। शत्रुओं से सावधानी बरतें, विश्वासघात की सम्भावनाएं प्रबल। मित्रों पर सीधा विश्वास न करें।

सिंह - आपके कठोर परिश्रम से ही आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। १, ४, ६, १२, १८, २०, २७, २८ तारीखें आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगी। कला-जगत के व्यक्ति नवीन कार्यों में रुचि लेंगे। वाद-विवाद की स्थिति गम्भीर रूप धारण कर सकती है, सावधानी बरतें। नए अनुबंधों से तथा नए सम्पर्कों से लाभ होगा। भूमि के क्रय-विक्रय में लाभ होगा। अपने धन को अचल सम्पत्ति में लगाएं। व्यापारिक उन्नति होगी, अधिक हड़बड़ाहट में किया गया कार्य हानिप्रद हो सकता है। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। बेरोजगार व्यक्ति नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय की ओर अधिक ध्यान देंगे। हनुमान साधना करें तथा मूंगा रत्न धारण करें।

वृषभ - जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। यह माह सामान्य ही रहेगा, साधकों के लिए यह माह साधना की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। परिवार में सहयोग बनाकर चलें, पत्नी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। संतान की ओर से अनुकूल सामाचार प्राप्त होंगे। व्यापारी वर्ग धैर्य एवं सूझ बूझ से कार्य करें। यात्रा अनुकूल, तीर्थ - स्थलों की यात्रा लाभप्रद सिद्ध होगी। मुकदमेबाजी से बचें, किसी भी आपदा का सामना धैर्यपूर्वक करें। मित्रों के हस्तक्षेप से बनता काम बिगड़ जाएगा। शत्रु पक्ष से सावधानी बरतें। महिलाओं को शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ेगा। छात्रों के लिए यह माह अनुकूल।

कर्क - आपके जीवन में मित्रों का सहयोग नहीं के बराबर रहेगा, वहीं आपके सहयोग से किसी का रुका हुआ कार्य प्रारम्भ होगा। व्यापार परिवर्तन के तथा नवीन व्यापार आरम्भ करने के विचार बनेंगे। राज्य पक्ष आपके अनुकूल रहेगा। इंटरव्यू आदि के लिए परिश्रम करें, परिश्रम से ही आपको सफलता प्राप्त होगी। घरेलू समस्याओं के प्रति उदासीनता न बरतें। समाज में प्रतिष्ठा व सम्मान प्राप्त होगा। आप मोती रत्न धारण करें। संतान की समस्याओं की ओर ध्यान दें। नौकरी की अपेक्षा आपके लिए व्यापार अधिक फलप्रद सिद्ध होगा। व्यर्थ की भाग दौड़ और तनावों से खिन्नता होगी।

कन्या - पारिवारिक उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी। घर-परिवार की समस्याओं के प्रति उदासीनता बरतना ठीक नहीं। ४, ६, १२, १४, २२, २४ तारीखें आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगी। समय अनुकूल रहेगा, बेरोजगार व्यक्ति नवीन कारोबार के सिलसिले में विचार-विमर्श कर सकते हैं। आकस्मिक धन-हानि की सम्भावना प्रबल है, सावधानी बरतें। प्रेम-प्रसंग अनुकूल। राजकार्य में कठिनाई आएगी, मगर सफलता प्राप्त होगी। महिलाएं सामाजिक कार्यों से ध्यान हटाकर गृहस्थ को सम्भालें। मतभेद की स्थिति में धैर्य से काम लें।

तुला - माह का प्रारम्भ अनुकूल ही कहा जा सकता है। नए कारोबार प्रारम्भ करने में उत्साह रहेगा, सम्बन्धियों एवं मित्रों से सहयोग की आशा करना व्यर्थ ही रहेगा। आप अपने परिश्रम से समस्या का समाधान करने में सफल हो पाएंगे। अध्ययन के प्रति लापरवाही न बरतें। साधनात्मक दृष्टि से समय अत्यन्त श्रेष्ठ एवं अनुकूल है। धार्मिक प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी। आपसी अनबन से तनाव रहेगा। घरेलू मामलों की उपेक्षा न करें। जमीन-जायदाद के मामलों में सुधार होगा। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें, किसी को ठेस पहुंचाने वाला कोई कार्य न करें। साधकों के लिए यह समय श्रेष्ठ एवं सफलतादायक सिद्ध होगा।

वृश्चिक - दो लाभ तीन खर्च की स्थिति बनेगी। मित्रों के सहयोग से धीरे-धीरे सफलता प्राप्त होगी। घरेलू समस्याओं की उपेक्षा न करें। किसी वृद्ध सदस्य को लेकर चिंता रहेगी, स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह सामान्य ही रहेगा। साधकों के लिए यह समय फलप्रद रहेगा। मांगलिक कार्यों में अड़चनें आयेंगी। आकस्मिक धन प्राप्ति के योग सामान्य। आप मूंगा धारण करें, समय-समय पर लाभ मिलेगा। अधिकारियों के सम्पर्क में मधुरता आएगी। स्थानान्तरण के आदेश प्राप्त होने से चिंता रहेगी। कला-जगत के व्यक्ति स्वास्थ्य की उपेक्षा न करें।

धनु - यह माह आपके लिए भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होगा। साधनात्मक दृष्टि से यह माह सफलतादायक है। जो करना चाहते हैं, आप करें। नए अनुबन्ध लाभप्रद होंगे, नए व्यापार की स्थापना कर बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति को दृढ़ बनायेंगे। यात्रा में सावधानी बरतें। अधिकारियों से सहयोग प्राप्त कर उलझे काम बनेंगे। मांगलिक कार्य सम्पादित होंगे। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी, तथा प्रेम-विवाह के मामलों से दूर रहें। शत्रु आपके अनुकूल होंगे। वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें, किसी अप्रिय घटना का योग। ऋण के लेन-देन से बचें।

मकर - नया अनुबन्ध लाभकारी सिद्ध होगा। नवीन व्यापार की स्थापना कर सकते हैं। पारिवारिक स्वास्थ्य की उपेक्षा न करें। मित्रों से सहयोग की आशा नहीं, सूझ-बूझ से लिए गए निर्णय लाभप्रद। राज्य पक्ष से संकट की स्थिति, अधिकारियों के सहयोग से समस्या का समाधान होगा। यात्रा के लिए अनुकूल समय। जीवनसाथी से वैचारिकता बनाए रखें। कार्यालय के सहयोगियों से वाद-विवाद न करें। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। कृषक वर्ग के लिए यह माह अधिक अनुकूल रहेगा। श्रमिक वर्ग व्यर्थ में धन व्यय न करें।

कुंभ - कोई भी नया कार्य प्रारम्भ न करें। जमीन-जायदाद के मामले उलझने से चिंता होगी, भूमि से सम्बन्धित क्रय-विक्रय सम्भव होंगे। भूमि से सम्बन्धित कार्य आपके लिए अनुकूल व फलप्रद रहेंगे। राज्य पक्ष की ओर से अड़चनें आएंगी, अधिकारियों से मधुर सम्पर्क बनेंगे। मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी व धार्मिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग। नए अनुबंध लाभप्रद होंगे। मित्रों से अनबन होने से तनाव होगा, धैर्य रखें। कारोबारी यात्रा फलप्रद। वाहन प्रयोग करते समय सावधानी बरतें। 'नीलम' धारण करें। महिलाएं गृह-कलह की स्थितियों में सामञ्जस्य बनाकर चलें। समाज में मान-सम्मान प्राप्त होगा। संयम से कार्य करें।

मीन - आपके सरल स्वभाव की वजह से शत्रु आपको भयभीत करेगा। सावधानी बरतें, कारोबारी स्थितियां अनुकूल ही कही जा सकती हैं। जीवनसाथी से प्रेम एवं स्नेह प्राप्त होगा। संतान की ओर से अनुकूलता प्राप्त होगी। प्रेम-प्रसंगों में ढीलापन रहेगा। कार्यालय में स्थिति सामान्य रहेगी। मित्र वर्ग का सहयोग प्राप्त होगा। पेट के रोगों से आप चिन्तित व परेशान रहेंगे। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दें तथा 'पुखराज' धारण करें। साधकों के लिए समय कष्टप्रद तथा साधना में सफलता प्रदायक रहेगा।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०१.०३.९५	फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३०	शिव खप्पर पूजा
०६.०३.९५	फाल्गुन शुक्ल पक्ष ०८	होलाष्टक प्रारम्भ
१३.०३.९५	फाल्गुन शुक्ल पक्ष ११	आमला एकादशी
१६.०३.९५	फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४	होलिका दहन
१७.०३.९५	**फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५**	**होली**
२०.०३.९५	चैत्र कृष्ण पक्ष ०४	गणेश चतुर्थी
२७.०३.९५	चैत्र कृष्ण पक्ष ११	पापमोचनी एकादशी
०१/०४/९५	**चैत्र शुक्ल पक्ष १**	**नवरात्रि प्रारम्भ (घट स्थापन)**
०८/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष ८	श्री दुर्गा अष्टमी
०९/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष ९	श्री राम नवमी
११/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष ११	कामदा एकादशी
१३/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष १३	श्री महावीर जयन्ती (जैन)
१५/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष १५	पूर्णिमा, श्री हनुमान जयन्ती
२१/०४/९५	**वैशाख कृष्ण पक्ष ७**	**श्री गुरु जन्मोत्सव**
२५/०४/९५	वैशाख कृष्ण पक्ष ११	वरूथिनी एकादशी
२६/०४/९५	वैशाख कृष्ण पक्ष ३०	शनैश्चरी अमावस्या
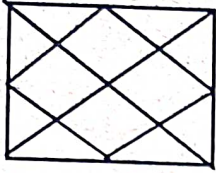
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

प्रश्न– क्या मैं एक्टर बन सकूंगा? अगर बनना चाहूं तो कैसे?
उत्तर– आप मिकैनिकल वर्क की ओर ध्यान दें, अधिक उचित रहेगा।

प्रकाश सिकरवार, राजगढ़

प्रश्न– किस व्यवसाय में सफलता मिलेगी?
उत्तर– सौन्दर्य प्रसाधनों से सम्बन्धित।

ज्ञानचन्द, उल्हास नगर

प्रश्न– मनोकामना पूर्ण कब होंगी?
उत्तर– मनोकामना पूर्ति में बाधा, अनुष्ठान सम्पन्न करें।

के० अमरनाथ, कर्नाटक

प्रश्न– क्या मैं डॉक्टर बनूंगी?
उत्तर– नहीं।

रोहिणी पटेल, सेधवा

प्रश्न– मुझे किस कार्य में सफलता मिलेगी?
उत्तर– आप के लिए धातुओं से सम्बन्धित कार्य उचित रहेगा।

कुंवर वीरेन्द्र सिंह, प्रतापगढ़

प्रश्न– भाग्योदय कब तक होगा? रत्न बताएं।
उत्तर– साढ़े तीन वर्ष बाद। ४ रत्ती का हीरा पहिनें।

विनोद कुमार, दिल्ली।

प्रश्न– मैं चित्रकार बनना चाहती हूं।
उत्तर– प्रयास करें, सफलता मिलेगी।

ज्योति चान्दे, बुरहानपुर

प्रश्न– क्या इस वर्ष परीक्षा में सफलता मिलेगी?
उत्तर– प्रयास करें, सफलता मिलेगी।

ममता चान्दे, बुरहानपुर

प्रश्न– पति वशीकरण के लिए।
उत्तर– वशीकरण प्रयोग सम्पन्न करें।

संजिता देवी, घन्दनपुरा

प्रश्न– मेरे घर की आर्थिक स्थिति कब तक सुधरेगी?
उत्तर– जीवन कठिनताओं से भरा होगा, भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करें।

धर्मेन्द्र कुमार, बिहार

प्रश्न– कौन-सी अप्सरा अथवा यक्षिणी साधना मेरे लिए उपयुक्त होगी?
उत्तर– आप स्वर्णप्रभा अप्सरा साधना करें।

दिनेश जैन, बम्बई

प्रश्न– पारिवारिक तनाव एवं आर्थिक स्थिति में सुधार कैसे होगा?
उत्तर– तारा साधना से।

मन्नू लाल पटेल, दुर्ग

प्रश्न– उच्च शिक्षा किस साधना से प्राप्त होगी?
उत्तर– सरस्वती साधना एवं दीक्षा से।

मनोहर, दुर्ग

प्रश्न– मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है?
उत्तर– पूर्ण विवरण न होने के कारण आप पूज्य गुरुदेव से स्वयं मिलें।

राम बहादुर, बयरबनागांऊ

प्रश्न– किस व्यवसाय में सफलता मिलेगी?
उत्तर– धातु एवं आयात-निर्यात के व्यवसाय में।

रामबहादुर, राजस्थान

प्रश्न– झगड़े-झंझट, कोर्ट-कचहरी में मुकदमे इत्यादि की क्या सम्भावना है? निदान बताएं।
उत्तर– बने रहेंगे, आप भैरव साधना करें।

प्रदीप कुमार गुप्ता, दिल्ली

प्रश्न– मैं ट्रैक्टर के लिए क्या करूं?
उत्तर– ट्रैक्टर खरीदना आपके लिए हानिप्रद सिद्ध होगा।

श्री गोपाल प्रसाद खोखरा

प्रश्न– क्या अप्सरा साधना में सफलता मिलेगी? अगर मिलेगी तो कौन-सी साधना करूं?
उत्तर– आपको सफलता मिलेगी, किन्तु विलम्ब से, आप उर्वशी अप्सरा साधना करें।

श्री सुशील कुमार, नई दिल्ली

प्रश्न– सफलता किस साधना में?
उत्तर– हनुमान साधना में।

सुरेन्द्र कुमार बेले, बैतूल

प्रश्न– सरकारी नौकरी मुझे कब तक मिलेगी?
उत्तर– सम्भावनाएं कम हैं। अनुष्ठान सम्पन्न करें।

शशिकान्त, जम्मू-कश्मीर

प्रश्न– मेरी शादी कब होगी?
उत्तर– शीघ्र ही विवाह के योग बनेंगे।

राजश्री अग्रवाल, लूना वाला

प्रश्न– सरकारी नौकरी का योग कब तक? समय बताएं।
उत्तर– सरकारी नौकरी के योग में बाधा, प्राइवेट नौकरी शीघ्र प्राप्त होगी।

कमलेश गौड़, राजस्थान

प्रश्न– साइड बिजनेस क्या करूं?
उत्तर– सिलाई का।

श्री राम मीणा, भोपाल

प्रश्न– स्वअर्जित सम्पत्ति की क्या सम्भावना है?
उत्तर– मिलेगी, लेकिन विलम्ब से।

प्रदीप गुप्ता, दिल्ली

प्रश्न– मैं कौन-सा व्यापार करूं, और कब से?
उत्तर– आप होटल, आयात-निर्यात अथवा ज्वेलरी से सम्बन्धित कार्य कर सकते हैं, यह कार्य आप तीन माह बाद ही प्रारम्भ करें।

रंजीत दास, दिल्ली,

प्रश्न– नौकरी करूं या व्यापार?
उत्तर– नौकरी।

मुकेश लाजवे, धार

कूपन क्रमांक :- **१२४ (कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)**

नाम :-..

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

– ज्योतिष प्रश्नोत्तर –
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४

विघ्नं नाशय-नाशय महाबली

धवल चन्द्रिका छिटकी हुई थी। वृक्षों के बीच से गुजरती चांदनी धरती पर छाया की विभिन्न प्रकार की विचित्र रंगोली सजा रही थी। मैं और मेरे मित्र सूर्यकांत, जो कि एक छोटा-सा अखबार निकालते हैं, लखनऊ के गुल्लाले में भैरव मंदिर में बैठे हुए साधना में लीन थे। वैसे मैं आपको बता दूं, कि यों तो लखनऊ में कई श्मशान घाट हैं— टड़ियों पर का श्मशान घाट, वजीर हसन रोड भैंसा कुंड का श्मशान घाट, आलमबाग का श्मशान घाट, पिपराघाट का श्मशान घाट. . . पर इन सब श्मशानों में गुल्लाले श्मशान घाट का अपना ही स्थान है।

टड़ियों पर उसी के आस-पास के लोग अपना मुर्दा ले जाते हैं, आलम-बाग वाले श्मशान घाट के लोग सुविधानुसार अपने मुर्दे जलाते या दफन करते हैं, पर इस श्मशान घाट पर एकांत का अभाव है. . . और भैंसा कुंड का श्मशान घाट वास्तव में वी० आई० पी० लोगों का श्मशान घाट है। बड़ी चहल - पहल रहती है उस पर। विजली, पानी, लकड़ी, लाश फूंके जाने का स्थान आदि तो सहज सुलभ है ही, साथ ही साथ विजली से लाश फूंके जाने वाला साधन भी सहज सुलभ है।

इसमें अभी तक रुढ़िवादी लोग अपने मुर्दे नहीं जलाते थे, किन्तु अव तो सभी जलाने लगे हैं। अर्थी चन्दन, धूप, गूग्गल, लोबन आदि से सजा कर, लोहे की बिना पहियों वाली गाड़ी कहें उसे या रेल की दो चलायमान पटरी कहें, उस पर रख दी जाती है, और सामने बनी दहकती भट्टी का मुंह खोल दिया जाता है। स्विच दवाया गया, पटरियां अर्थी सहित हरकत में आईं, और अर्थी लेकर भट्टी में प्रवेश कर गईं। **भट्टी का मुख अपने आप ही बन्द हुआ और लाश अन्दर रह गई। भट्टी का मुंह खुला दोनों पटरियां तुरन्त बाहर आ गईं। ऐसा लगता है, मानो चम्मच से शैतान ने लाश का कौर मुंह में डाला और चम्मच बाहर फेंक दिया।**

चन्द मिनटों में डॉक्टर, प्रोफेसर, अधिकारी जलकर खाक हो गए, बिना किसी भेदभाव के। चन्द मिनटों में लाश फूंकने वाले ने मुट्ठी भर राख एक हांडी में लाकर आपके सुपुर्द कर दी, और आप चल पड़े, लेकर विराट अहंकार का अवशेष— मुट्ठी भर राख। चल पड़े अपने प्रियजन की राख, अधिकारी, ज्ञानी, अज्ञानी, विरागी, रागी की राख लेकर और प्रवाहित कर दिया उसे या तो गोमती की धार में, या अपनी लाश की गाड़ी पर हांडी रखकर वापिस घर आ गए गंगा में प्रवाहित करने हेतु, हताश, निराश एक हारे हुए जुआरी की तरह।

और कभी-कभी सत्य को इतने समीप से देखने के बावजूद भी किसी परिजन, प्रियजन की मौत पर मन ही मन प्रसन्न, किन्तु ऊपर से आंसू बहाते हुए चल पड़े पुनः माया के इस संसार में, इस भावना को लेकर— "अब तो इसकी सारी सम्पत्ति का मालिक मैं बन जाऊंगा।"

अभी दस - बारह रोज पहले ही मैं इसी प्रकार का हादसा देख चुका हूं। बहुत रुढ़िवादी परिवार था वह, बड़े पढ़े-लिखे एवं पदाधिकारी लोग थे परिवार के। सब चाहते थे, कि लकड़ी से पारम्परिक ढंग से चिता जलाई जाए, पर स्वर्गीय के कोई पुत्र न था, बस सगा भाई या उनके उच्च पदाधिकारी थे। भाई साहब. . . पर सगे भाई को मुखाग्नि देने को तैयार न हुए। परिणाम स्वरूप विजली की चिता में जलाना पड़ा। रिश्ते-नातेदारों में कहा - सुनी भी हुई— कपाल क्रिया नहीं हुई, यह कैसा कर्मकांड है. . . पर माया के इस संसार में सब कुछ चलता है।

ओह! मैं मूल विषय से हट गया। क्षमा कीजियेगा, मैं पुनः आपको मूल विषय की ओर ले चलता हूं। हां! तो मैं बता रहा था, कि मैं और मेरे मित्र भैरव मंदिर में साधना में लीन थे। इसके पूर्व साथ ही साथ आपको बता दूं, कि गुल्लाले के इस मन्दिर में इसके पूर्व के मेरे कई विचित्र अनुभव रहे हैं। जैसे— इस गुल्लाले में एक वैताल रहता है, जो अक्सर साधना में बाधा डालता है, पर आपकी खैरियत इसी में है, कि आप उसके किसी क्रियाकलाप से न तो भयभीत हों, न उसमें हिस्सा ही लें। क्रियाकलापों से भी आपको अवगत करा दूं, जैसे—

एक दिन मैं अपने खप्पर से अर्धरात्रि में भैरव को सुरा चढ़ा रहा था, अचानक लगने लगा, कि पीछे से कोई फ्लैशगन चला रहा है. . . और जेऽक-जेऽक करती रोशनी मंदिर में फैल रही है, और अंधकार में भैरव की मूर्ति स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है. . . या चिता पर हवन कर रहा हूं, या मंदिर में बैठकर ध्यान कर रहा हूं, और कुछ कुत्ते उछल-कूद मचाने लगे. . . और कुत्ते अपनी बोली की बजाय उल्लू की बोली बोलने लगे। मैंने जब यह बात पशु चिकित्सक से कही, कि क्या कुत्ता उल्लू की बोली बोल सकता है? तो वे हंसते हुए मुझे

बेवकूफ बनाने लगे, और बोले— कुत्ते के गले में कोई नली नहीं होती है, जिससे वह किसी और जानवर की बोली बोल सके।

आज भी मैं और मेरा मित्र, इसी भैरव के मंदिर में बैठे ध्यान कर रहे थे। हम लोग एक पुरानी छोटी कार से यहां आए थे। ड्राइवर समेत कार बांध के उस पार घंटाघर के समीप ही छोड़ दी थी, चूंकि ड्राइवर इससे आगे आने से कतराता था। आज भी साधना करते समय कुछ विचित्र अनुभव हुए थे, जैसे— ध्यान करते समय ही मन्दिर की छत पर एक जोरदार धमाका हुआ। मानो किसी ने लकड़ी का भारी कुंदा छत पर फेंक दिया हो। सूर्यकांत घबड़ा गया और उठकर खड़ा हो गया। मैंने उसे बैठने का इशारा किया, तो वह सहमा-सहमा बैठ गया, थोड़ी देर बाद फिर वही घटित हुआ। मैंने उससे कहा— "वह अब घबराये नहीं, बंधे पर लकड़ी उतारी जा रही है।" पर वह जानता था, कि इतनी रात में लकड़ी उतारे जाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

खैर ध्यान समाप्त हुआ, भैरव को खप्पर में सुरा- पान कराया और चल पड़ा। मैंने सूर्यकांत से पूछा— "क्या समय हुआ है?"

— "बारह बज चुके हैं।"

— काफी गहरा ध्यान लगा आज, और यह कहता हुआ जैसे ही बाहर निकला, देखा बारहदरी के पास जमीन पर चादर ताने हुए प्रेत लेटा हुआ है। वह नंगा था, खाली उसने ऊपर से चादर तान रखा था, सूर्यकांत चौंका!

— "देखिये, वह कौन चादर ओढ़े लेटा है।"

— "आओ चलें सूर्यकांत! श्मशान पर बिना मतलब की खोजबीन नहीं करनी चाहिए, अपनी राह पर चलते चलो।

"और हम लोग चुपचाप बंधे की ओर खामोशी से चल दिए। सूर्यकांत यंत्र चालित सा शव की भांति चुपचाप तेज कदमों से आगे बढ़ता जा रहा था। हम लोगों ने ड्राइवर को जगाया और घर की ओर चल दिए। सुबह हम लोगों को दिल्ली जाना था।

आपको एक बात तो बताना भूल गया हूं, कि सूर्यकांत का एक मकान दिल्ली में भी था। आज उसको उसके मकान के पास घटित घटनाओं के विषय में समाचार पत्र के लिए कवरेज हेतु जाना था।

दूसरे दिन प्रातः वह दिल्ली की ओर गोमती से चल पड़ा, और निर्धारित समय पर दिल्ली पहुंच गया। **मेरे मन में घटित घटनाओं के विषय में अपूर्व जिज्ञासा थी। मैंने तथा सूर्यकांत ने स्नान कर नाश्ता पानी किया और तत्काल उस घर की ओर चल पड़े, जहां चौबीसवीं जान गई थी।**

रास्ते में मैंने सूर्यकांत को काफी छेड़ा, कि यह सब कैसे और क्या हो रहा है? पर उसने इसका उत्तर न देकर सिर्फ हां-हूं मात्र की।

मैं उस परिवार के घर पहुंचा, जिनका जवान बेटा कल सुबह ही "हार्टफेल" हो जाने से मरा था। घर में अपूर्व मनहूसियत की शांति विराजमान थी। जब उन लोगों को मालूम हुआ, कि हम लोग पत्रकार हैं और घटना के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने आये हैं, तो पुनः घर में रोने-धोने का कोहराम मच गया। लड़के की मां पछाड़ें खाकर गिरने लगी और बेहोश हो गई। लड़के के बड़े भाई ने हम लोगों को ले जा कर बैठक में बिठाया, और रोते हुए घटना का विवरण देने लगा।

उसने बताया– भोगल के पास से लेकर लगभग पचास मकानों तक, रात में दस बजे से प्रातः चार बजे तक नहीं गुजरना चाहिए। मेरा भाई वहां से गुजरने पर ही मृत्यु का शिकार बना है।

— "मैं समझा नहीं आपकी बात।"

— ऐसा है भाई साहब! भोगल में जब आप प्रवेश करते हैं, तो शुरू में एक पीला मकान दिखाई पड़ता है, वहां से लेकर आखिरी मकान, जो स्लेटी रंग से पुता हुआ है, वहां तक, रात को दस बजे के बाद जो गुजरता है, उसे एक महिला हाथ के इशारे से अपने पास बुलाती है, और आप जिस सवारी से होते हैं, उससे अपने को ले चलने हेतु "लिफ्ट" मांगती है। बड़ी सुन्दर, साफ - सफेद कपड़े में लिपटी हुई होती है वह महिला . . . और आपने जहां उसे लिफ्ट दिया, बस सुबह तक वह आपका काम तमाम कर देती है।

— "यानी!"

— लिफ्ट देने वाले व्यक्ति को "हार्ट-अटैक" या "ब्रेनहैमरेज" आदि घातक रोग एकदम से पकड़ लेते हैं, और उसका काम तमाम हो जाता है। मेरा भाई भी इसी घटना का शिकार हो गया। वह रात को लौट रहा था, और उसकी मीठी बातों में फंसकर दुर्भाग्य की चपेट में आ गया। हाय भैया. . . कहकर वह दहाड़ मार कर बहुत ही कारुणिक, हृदय को दहला देने वाला रुदन करने लगा।

मैं इस घटना से काफी बेचैन हो उठा था। मुझे मौत से कोई भय नहीं लगता है, वह तो आनी ही है, पर जवान मौत से मेरा दिल दहल उठता है . . . यह जवान मौत थी।

मैंने उससे पूछा— इसके पूर्व कितने लोगों के साथ यह हादसा हुआ है?

— "मुहल्ले के तेईस लोग अब तक मारे जा चुके हैं, और यह चौबीसवीं मौत है।"

— "ओह!" थोड़ी देर तक हम दोनों गमगीन वहां बैठे रहे, फिर उठकर चल दिए। घर पहुंचने पर मन बड़े अवसाद से भर गया था।

मैं बड़ी बेचैनी से शाम होने का इंतजार करने लगा। रात को दस बजे मैंने सूर्यकांत और ड्राइवर को तैयार होने के लिए कहा।

— "क्या मतलब! इतनी रात में क्या वहां जाने का इरादा है?" मैं देख

रहा हूं, कि सारा दिन तो तुम बड़े बेचैन रहे, पर अब बड़े प्रसन्न दिखाई दे रहे हो, क्या बात है?

— "मैं भोगल जाना चाहता हूं।"

— "मगर क्यों?"

— "मैं उस औरत से मिलना चाहता हूं।"

— "पागल हो गए हो क्या? मैं भाभी जी को क्या मुंह दिखाऊंगा?"

— "बकवास मत करो, ड्राइवर को बुलाओ. . . और तुम भी मेरे साथ चलो।"

— "न बाबा, मैं तो नहीं जा सकूंगा।"

— "तुम्हें चलना ही होगा।"

— और मेरी आज्ञा कहें या इच्छा, सूर्यकांत मेरे साथ चलने को तैयार हो गया, किन्तु भोगल के पास पहुंच कर वह बोला— "मुझे यहीं उतार दो, मैं आगे न जा सकूंगा।"

— "जैसी तुम्हारी मर्जी।"

और गाड़ी रोककर मैंने उसे एक वृक्ष के नीचे उतार दिया और ड्राइवर सहित मैं आगे चल पड़ा। चारों ओर दिव्य चांदनी छिटकी हुई थी, पर रास्ते में कोई परिंदा भी पर मारता हुआ न मिला, हर तरफ घोर सन्नाटा छाया हुआ था।

गाड़ी मुश्किल से एक फर्लांग चली होगी , कि खुशबू के एक झोंके ने मुझे झिंझोड़ कर रख दिया। मैं चौकन्ना हो गया। अचानक फुटपाथ पर मेरी दृष्टि पड़ी। एक स्त्री सफेद वस्त्रों में लिपटी खड़ी मेरी ओर इशारा कर रही थी।

मैंने ड्राइवर से कहा— "गाड़ी रोक दो।"

उसने मेरी आज्ञा का पालन किया, मैं गाड़ी से नीचे उतरा। ड्राइवर घबरा कर हनुमान चालीसा पढ़ने लगा। वह कार के पास आकर खड़ी हो गई, गोरी-चिट्टी अद्भुत रहस्यमय नेत्र वाली महिला थी वह। बाल 'ब्वायकट' भली-भांति सजे-संवरे थे, उसके होंठों पर गहरी लिपिस्टिक लगी हुई थी। बड़ी ही मस्त नजरों से मेरी ओर देखते हुए उसने कहा— "मुझे थोड़ी दूर पर छोड़ देंगे आप?"

— "हां! हां!! क्यों नहीं पधारें मां! आयें।"

'मां' शब्द सुनकर वह थोड़ा चौंकी। ड्राइवर से मैंने कहा— "दरवाजा खोल दो, ये मेरे ही साथ बैठेंगी।"

किन्तु ड्राइवर की सिट्टी-पिट्टी गुम हो चुकी थी। वह अर्ध-विक्षिप्त जैसा हो गया था, वह दरवाजा खोलने में असमर्थ था। मैंने गाड़ी का दरवाजा खोल दिया, वह अन्दर आकर बैठ गई।

उसने कहा— "मैं पीछे बैठ जाऊं?"

मैंने कहा— नहीं, आप मेरे ही साथ बैठें. . . और फिर वह मुस्कराती हुई मेरे ही साथ बैठ गई। सारी गाड़ी एक मादक सी सुगन्ध से भर गई। मुझे अजीब तरह की मस्ती महसूस होने लगी। मेरी आंख बन्द होने लगी, पर मैंने अपने-आप को संभाला और गाड़ी चला दी।

— "कहां जाना चाहेंगी आप?"

— "मुझे फरीदाबाद के श्मशान पर छोड़ दें।"

— "ठीक है, जहां कहें वहीं छोड़ दूंगा, एक बात बतायें, आप इस तरह लोगों से लिफ्ट मांगकर उनकी हत्या क्यों कर देती हैं?"

— "यह मत पूछिये, यह एक लम्बी कहानी है। मैं पुरुषों से नफरत करती हूं और बहुत नफरत करती हूं।"

— "पर क्यों?"

— "वास्तव में मेरे पति और देवर ने मुझ पर बहुत अत्याचार किया और अंत में मुझे जहर देकर मार डाला तभी से मैं पुरुषों से बहुत घृणा करने लगी। अब तक इसी प्रकार "लिफ्ट" मांगकर चौबीस आदमियों को मैं मार चुकी हूं।"

— "बस मां! बहुत हो चुका, अब क्षमा करें।"

— "नहीं! मैं पुरुषों को कभी क्षमा नहीं कर सकती।"

फरीदाबाद का श्मशान समीप आ चुका था, वह मुझसे बोली— "गले में अस्थियों की माला क्यों पहिन रखी है, इसे उतार दो।"

— "क्यों उतार दूं? इसे तो मैं नहीं उतारूंगा।"

तभी अचानक एक घटना घटी। श्मशान के समीप पहुंचते ही, जैसे ही एक पीपल का पेड़ आया, जोर से बिजली कड़की, खुली खिड़की से वह सशरीर निकल गई और पीपल के वृक्ष पर चढ़ गई। मैं गाड़ी से नीचे उतरा और पीपल के वृक्ष पर ही उसे कीलित कर दिया।

वह बहुत मार्मिक स्वर में चिल्लाई— "नहीं! नहीं!! ऐसा मत कीजिए।"

पर **मैंने उसकी एक न सुनी और वृक्ष पर ही उसे कीलित कर गाड़ी में आकर बैठ गया। ड्राइवर होश में नहीं था, इसलिए गाड़ी मैंने ही चलाई,** और वहां पर गया, जहां मित्र महोदय को छोड़ा था। मुझे देखकर वह चौंक पड़ा।

— "क्या हुआ?"

— "वह फिर बताऊंगा, पहले इन ड्राइवर महोदय को होश में लाया जाए।"

ड्राइवर के मुंह पर पानी के छींटे दिए, वह होश में आया, उसे चाय पिलाई और हम घर की ओर चल दिए। घर आकर मित्र को सारी कथा सुनाई, और तब से आज तक का दिन है, भोगल का वह रास्ता साफ हो गया है। अब उस रास्ते से गुजरने में किसी को कोई डर नहीं लगता है। मुझे अपने द्वारा की गई "भैरव साधना" पर गर्व है।

● श्री इन्दर चन्द तिवारी

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी की दुर्लभ कृतियां

एस-सीरीज के अन्तर्गत प्रस्तुत हैं ये अमूल्य ग्रन्थ

मूल्य प्रति- 96/-

मूल्य प्रति- 240/-

हिन्दी कृति

कुण्डलिनी नाद ब्रह्म :

कुण्डलिनी जागरण की क्रिया क्या होती है? क्या होते हैं विविध चक्र? कैसे सम्पादित होती है यह अति श्रेष्ठ क्रिया? इसका सूक्ष्म विवेचन है इस ग्रन्थ में . . .

ध्यान, धारणा और समाधि :

इन तीनों विषयों पर विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं, इन सभी के चक्कर में फंस कर मनुष्य इसके मूल चिन्तन के प्रति भ्रमित हो गया है, इसी भ्रम का निवारण है, यह ग्रन्थ . . .

फिर दूर कहीं पायल खनकी :

प्रिया के आगमन का संदेश, दूर से आती उसकी पायलों की खनक से प्राप्त हो जाता है . . . किन्तु हम अपने प्रिय (ईश्वर, गुरु, इष्ट) के आगमन की आहट सुनने की सामर्थ्य खो बैठे हैं. . . इस श्रवण शक्ति को पुष्ट करने का माध्यम है, यह कृति . . .

अंग्रेजी कृति

Meditation :

नाम के आकर्षण में फंस कर पूर्ण जानकारी न होने के कारण अधिकतर लोग ध्यान की खोज में भटकते रहते हैं। इस भटकने की क्रिया का समापन कर ध्यान का प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत है, इस कृति द्वारा . . .

Kundalini Tantra :

प्रस्तुत है इस ग्रन्थ के माध्यम से कुण्डलिनी की विस्तृत विवेचना, सप्त चक्रों का विश्लेषण, जिससे मनुष्य को पूर्णता प्राप्त हो सके।

The Sixth Sense :

छठी इन्द्रिय के जाग्रत होने का तात्पर्य है, सम्पूर्ण प्रकृति के कार्य में इच्छानुसार हस्तक्षेप करने की शक्ति प्राप्त कर लेना . . . लेकिन कैसे? यह आप इस ग्रन्थ को पढ़कर प्रामाणिक रूप से जान सकते हैं।

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

सूर्य रेखा

अंग्रेजी में इस रेखा को 'सन लाइन' एवं हिन्दी में 'यश रेखा' भी कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की यह सामान्य इच्छा होती है कि वह जीवन में कुछ ऐसा कार्य करे, जिससे समाज में उसके कार्यों की सराहना हो, लोग उसके विचारों को आदर दें, और उसकी मृत्यु के बाद भी उनकी अक्षय कीर्ति बनी रहे। इन सबके अध्ययन के लिए सूर्य रेखा का सहारा लेना अत्यन्त आवश्यक होता है। यह सूर्य रेखा ही मानव को उसके जीवन में यश, मान, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य तथा कीर्ति दिलाने में सहायक होती है। **यदि किसी व्यक्ति के हाथ में स्वास्थ्य रेखा, हृदय रेखा और जीवन रेखा चाहे कितनी ही अधिक पुष्ट हो, परन्तु उसके हाथ में सूर्य रेखा कमजोर होती है, तो उस व्यक्ति का जीवन नगण्य सा होकर रह जाता है।** स्पष्ट, गहरी और निर्दोष सूर्य रेखा ही मानव को ऊंचा उठाने में सहायक होती है। हस्त रेखा विशेषज्ञ के लिए इस रेखा का सूक्ष्मता से अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

यह रेखा सूर्य पर्वत के नीचे होती है। इसकी पहिचान यह है कि इस रेखा का उद्गम चाहे कहीं से भी हुआ हो, परन्तु इस रेखा की समाप्ति सूर्य पर्वत पर ही होती है। जो रेखा सूर्य पर्वत तक नहीं पहुंचती, वह रेखा 'सूर्य रेखा' नहीं कहला सकती।

अब मैं सूर्य रेखा से सम्बन्धित कुछ नए तथ्य पाठकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूं—

१. लम्बी, स्पष्ट और सीधी सूर्य रेखा व्यक्ति को यश, मान, प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक होती है।
२. यदि दोनों हाथों में यह रेखा स्पष्ट हो, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।
३. यदि यह रेखा बिना कहीं से कटे हुए अपनी पूरी लम्बाई लिए हुए हो, तो उसके जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहती।
४. छोटी सूर्य रेखा व्यक्ति के जीवन में परिश्रम एवं संघर्ष के बाद ही सफलता देने में सहायक होती है।
५. सूर्य रेखा जिस जगह कट जाती है, आयु के उस भाग में वह व्यक्ति अपना व्यापार अथवा कार्य बदल लेता है।
६. यदि हथेली गहरी हो और सूर्य रेखा स्पष्ट हो, तो उस व्यक्ति की प्रतिभा का सही रूप में उपयोग नहीं हो पाता।
७. यदि यह रेखा पतली या फीकी हो, तो वह व्यक्ति अपनी कला का पूरा-पूरा उपयोग नहीं कर पाता।
८. यदि सूर्य रेखा के मार्ग में द्वीप के चिह्न हों, तो वह जीवन में दिवालिया होता है तथा उसको समाज में अपयश मिलता है।
९. यदि हथेली में बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और सूर्य रेखा गहरी हो, तो उस व्यक्ति के सम्बन्ध अत्यन्त उच्च स्तर के व्यक्तियों से होते हैं।
१०. यदि सूर्य रेखा पर तारे का चिह्न हो, तो वह व्यक्ति अपनी कला के माध्यम से विश्वव्यापी सफलता प्राप्त करता है।
११. हथेली में जिस स्थान पर सूर्य रेखा सबसे अधिक गहरी हो, आयु के उस भाग में वह व्यक्ति विशेष धन लाभ प्राप्त करता है।

१२. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति पर बिन्दु का चिह्न हो, तो उसे जीवन में बहुत अधिक कष्ट उठाना पड़ता है और अन्त में सफलता मिलती है।

१३. यदि हथेली में सूर्य रेखा पतली हो, परन्तु सीधी और स्पष्ट हो, तो वह व्यक्ति समृद्धिवान होता है।

१४. यदि सूर्य रेखा के अन्त में नक्षत्र का चिह्न हो, तो उसे राष्ट्रव्यापी सम्मान मिलता है।

१५. यदि सूर्य रेखा के प्रारम्भ में और अन्त में नक्षत्र का चिह्न हो, तो उसे जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

१६. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति कई छोटी-छोटी रेखाओं से हो, तो उसे जीवन में असफलता ही मिलती है।

१७. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति किसी तिरछी रेखा से हो, तो वह जीवन में भली प्रकार से प्रगति नहीं कर पाता।

१८. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति पर क्रॉस का चिह्न हो, तो व्यक्ति का अन्त अत्यन्त दुःखमय होता है।

१९. यदि सूर्य रेखा कई जगह से टूटी हो, तो उसमें प्रतिभा तो होती है, परन्तु उसके माध्यम से न तो वह श्रेष्ठ धन लाभ प्राप्त कर सकता है, और न उसे उच्चकोटि का सम्मान ही मिलता है।

२०. यदि सूर्य रेखा हाथ में न हो, तो उस व्यक्ति का जीवन लगभग बेकार रहता है।

२१. यदि सूर्य रेखा पर वर्ग का चिह्न हो, तो उसे जीवन में कई बार अपमान सहन करना पड़ता है।

२२. यदि दोनों हाथों में यह रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ होती हो, तो वह कला के माध्यम से सफलता प्राप्त करता है।

२३. यदि सूर्य रेखा का अन्त दो धाराओं से होता हो या अन्त में यह रेखा दो भागों में बंट जाती हो, तो समाज में उसे सम्मान नहीं मिलता।

२४. यदि सूर्य रेखा के साथ-साथ कई और सहायक रेखाएं दिखाई दें, तो वह जीवन में आश्चर्यजनक प्रगति प्राप्त करता है।

२५. यदि विवाह रेखा के द्वारा सूर्य रेखा कटी हुई हो, तो उसका गृहस्थ जीवन पूर्णतः दुखमय होता है।

२६. यदि सूर्य रेखा से कोई एक रेखा मस्तिष्क रेखा की ओर जाती हो, तो उसे जीवन में पूर्ण धन-लाभ रहता है।

२७. यदि इस रेखा पर चतुर्भुज का चिह्न हो, तो उसे प्रारम्भ में बहुत ज्यादा असफलताएं मिलती हैं, परन्तु अन्त में पूर्ण सफलता मिल जाती है।

२८. यदि इस रेखा को तीन-चार रेखाएं काटती हों, तो वह जीवन में किसी भी कार्य में सफल नहीं होता।

२९. यदि शनि पर्वत से कोई रेखा निकलकर सूर्य रेखा को काटती हो, तो आर्थिक कमी की वजह से वह जीवन में सफल नहीं हो पाता।

३०. यदि यह रेखा स्पष्ट हो, पर साथ में कुछ लहरदार रेखाएं दिखाई दें, तो उस व्यक्ति की प्रतिभा का कोई उपयोग नहीं होता।

३१. यदि सूर्य रेखा गहरी हो और इसके दोनों ओर सहायक रेखाएं चल रही हों, तो उस व्यक्ति को उच्च स्तरीय सम्मान मिलता है।

३२. यदि सूर्य रेखा से कोई शाखा निकलकर शनि पर्वत की ओर जाती है, तो उस पर्वत के विशेष गुण व्यक्ति को प्राप्त होते हैं।

३३. यदि सूर्य रेखा से कोई शाखा निकलकर गुरु पर्वत पर पहुंचे, तो उस व्यक्ति को जीवन में श्रेष्ठ राज्य पद प्राप्त होता है।

३४. यदि इस रेखा के आस-पास बहुत सी छोटी-छोटी रेखाएं दिखाई दें, तो उसके जीवन में आर्थिक बाधा रहती है।

३५. यदि हृदय रेखा से निकलकर कोई रेखा त्रिशूलवत् बन कर सूर्य रेखा को स्पर्श करे, तो ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं के प्रयत्नों से ही सफलता प्राप्त करता है।

३६. यदि अनामिका उंगली टेढ़ी-मेढ़ी हो, पर सूर्य रेखा स्पष्ट हो, तो उसे अपराध पूर्ण कार्यों से यश मिलता है।

३७. यदि सूर्य रेखा के अन्त में तीन रेखाएं दिखाई दें, तो उसे जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई कमी नहीं रहती।

३८. यदि यह रेखा बार-बार टूट कर बढ़ रही हो, तो वह अपने आलस्य के कारण ही सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है।

३९. यदि यह रेखा जंजीरदार हो, तो उस व्यक्ति के जीवन में काफी बाधाएं रहती हैं।

४०. यदि यह रेखा टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो उस व्यक्ति के कार्य ही उसके जीवन में बाधाएं उत्पन्न करते हैं।

४१. यदि हथेली में भाग्य रेखा तथा सूर्य रेखा दोनों ही श्रेष्ठ हों, तो उसका जीवन सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ होता है।

४२. यदि रेखा के अन्त में द्वीप हो, तो वह व्यक्ति जीवन-भर बीमार बना रहता है।

वस्तुतः सूर्य रेखा व्यक्ति के जीवन को और उसके भाग्य को समझने के लिए बहुत अधिक उपयोगी है। अतः हस्त रेखा विशेषज्ञ को सूर्य रेखा का अत्यन्त सूक्ष्मता और गहराई से अध्ययन करना चाहिए।

(पूज्य गुरुदेव की पुस्तक वृहद् हस्त रेखा से साभार)

एक बार उनसे निगाहें मिलीं
और उम्र भर का फैसला हो गया

मैं और मेरी प्रियतमा सौन्दर्या यक्षिणी

उसे एक बार मेरी आंखों ने देखा, और ठगी सी रह गईं, जैसे मेरे दिल ने धड़कना बंद कर दिया हो, और शरीर निष्प्राण सा हो गया हो. . . ऐसा ही था उस १८ वर्षीया बाला का सौन्दर्यमयी गौर वर्णीय शरीर, जिसे एक क्षण देखते ही मैं स्तम्भित सा खड़ा रह गया, और उसे अपना बना लेने का स्वप्न देखने की धृष्टता कर बैठीं ये बेमौत मारी हुईं दो आंखें . . .और दिल, जो रह-रह कर उसी का स्मरण मानस-पटल

आकर्षक योजना
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
१६८१ से प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के कई दुर्लभ अंकों की मांग आप सभी पाठकों द्वारा की गई है। आपकी इस आवश्यकता को ध्यान में रख कर ही हमने इन दुर्लभ अंकों का प्रकाशन किया है। इन्हें प्राप्त करने के लिए आप सिर्फ अपना नाम व पता हमें लिख कर भेज दें, और हम आपको मात्र १००/- में भेजेंगे इन दुर्लभ १२ अंकों का पूरा सेट, इनका संग्रह आप अपने लिए कर सकते हैं और अपने किसी मित्र को उपहार में दे कर उसके जीवन को प्रशस्त करने का मार्ग प्रदान कर सकते हैं .... अब देर नहीं करें—
पुनर्प्रकाशित विशेषांक —
१६६१ का पूरा सेट
१६६२ का पूरा सेट
१६६३ का पूरा सेट
१६६४ का पूरा सेट
१६८६ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१६८७ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१६८८ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१६८६ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१६६० के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
इनमें से आप कोई भी १२ अंक अपनी इच्छानुसार हमें लिख भेजें।
हां! इतना अवश्य है कि यदि आप एक साथ ६ अंक मंगायेंगे, तो ६०/- देय होगा तथा १२ अंक मंगाने पर मात्र १००/- देय होगा। प्रति अंक १५/- देय होगा।
नोट : पुराने अंक सीमित संख्या में ही उपलब्ध हैं।
: प्राप्ति स्थान :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२६१-३२२०६, फेक्स : ०२६१-३२०१०
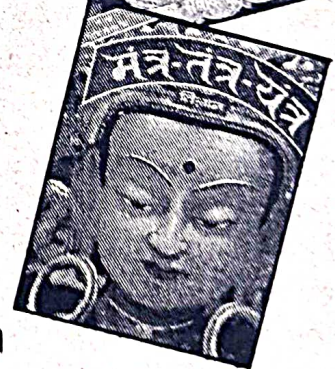
पर ज्यों का त्यों अंकित कर रहा था।

ऐसा लग रहा था, जैसे इसी सौन्दर्य की प्रतिक्षा में मैं कई वर्षों से भटक रहा था, जो आज अचानक ही स्वप्न रूप में मेरे सामने दृष्टिगोचर हो गया हो, लेकिन यह स्वप्न नहीं शायद हकीकत ही था, यह मुझे तब महसूस हुआ, जब **वह मेरे ही बाईं तरफ की बगल वाली सीट पर बैठी, और एक मनमोहक मुस्कराहट के साथ उसने मुझे देखा. . . और ऐसे देखा, कि फिर मैं होश में न रह सका,** न जाने क्यों उसे बार-बार देखने की इच्छा हो रही थी, लेकिन मर्यादावश कुछ अटपटा सा भी लग रहा था, जाने क्यों फिर भी उसे एकटक देखता रहा . . . और वह भी मुझे एक मादक मुस्कराहट के साथ, प्रेममयी दृष्टि से देखने के लिए उत्सुक हो रही थी, लेकिन संकोचवश अपनी पलकों को कभी झुका लेती, तो कभी हौले से, चुपके से मुझे देख लेती।

यह बात मेरी समझ में नहीं आई, कि वह मेरी ओर इस दृष्टि से क्यों देख रही थी, जैसे वह मुझे कई वर्षों पहले से जानती हो, इस भाव को उसकी आंखों में पढ़ मेरा मन यह जानने के लिए बेचैन हो उठा, किन्तु फिर भी मैं मौन ही रहा और २५ मिनट तक उसके साथ सफर कर कुछ न कहते हुए, मैं और वे दोनों ही अपने-अपने रास्ते अलग-अलग दिशा में चल दिए।

हर क्षण मेरा मन उसे देख लेने के लिए बेचैन होने लगा, ऐसा एहसास होता, कि जैसे वह मेरी ही प्रेमिका है, जो शायद मुझसे विछुड़ गई है, उस दिन मैं चैन से एक पल भी सो नहीं पाया, और इन्हीं विचारों की उथल-पुथल ने मेरे मन में उससे मिलने की उत्सुकता पैदा कर दी।

मेरे जीवन में ऐसे मोड़ कई बार आए, जब उससे साक्षात्कार हुआ, और वह भी उन क्षणों में, जब मैं तनावग्रस्त होता था या फिर कोई मुसीबत मेरे ऊपर आने वाली होती थी, ऐसे क्षणों में ही मैं उसे अपने पास पाता, और हर बार वह मुझे उस समस्या से मुक्त कर अदृश्य हो जाती, मेरा मन फिर विचलित हो उठता और एक ही प्रश्न मेरे मानस को झकझोरने लगता, कि आखिर यह है कौन, जो मुसीबतों, परेशानियों और समस्याओं के बवंडर से मुझे निकाल कर बार-बार लुप्त हो जाती है?

हर बार मैं उससे पूछने के लिए आगे बढ़ता, किन्तु हर बार मेरे कदम रुक जाते, और जब तक मैं फिर साहस जुटा पाता, तब तक वह गायब हो जाती, ऐसा लगातार ७-८ महीनों तक छुपा-छुपी का खेल चलता रहा, किन्तु उसने कभी मेरा अहित नहीं चाहा, उसने हर बार मेरी सहायता ही की और कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी मुझे निकाल लिया, उसने मेरी हर दृष्टि से पूर्ण सहायता की, जब **मुझे धन की आवश्यकता होती, तो मेरे पास अकस्मात् ही धन आ जाता, मैं कभी निराश होता या किसी अन्य तनाव से ग्रस्त होता, तो वह उस क्षण अचानक मेरे सामने उपस्थित हो जाती, मैं अपना सारा दुःख, तनाव उसे देखते ही भूला बैठता,** और उसके निदान का उपाय भी मुझे मिल जाता, उसने बड़ी-बड़ी दुर्घटनाओं से मेरी जान भी बचायी, जिससे बच पाना कठिन ही नहीं असम्भव भी था।

दिखने में तो वह एक साधारण सी पूर्ण यौवन के भार से लदी एक बाला थी, जिसका सौन्दर्य किसी को भी बेसुध कर देने के लिए पर्याप्त था, उसकी झीलदार और धारदार आंखें, छोटी सी नाक, गुलाब की पंखुड़ियों की तरह थिरकते हुए होंठ, भादों की श्यामल काली घटा की तरह लहराते हुए बाल और हिरणी की तरह भोली-भाली चितवन, जो किसी भी पुरुष को अपने नयनों से बांध लेने में समर्थ थी, जो किसी भी यौवनवान व्यक्ति को अपनी तरफ खींच लेने में सक्षम थी, क्योंकि उसके शरीर से प्रवाहित होती थी मादक, नशीली हवा, उसके शरीर से निकलती थी— गुलाब के पुष्पों सी, सुवास।

उसके सौन्दर्य का कोई भी गुण उसे किसी साधारण स्त्री की श्रेणी में खड़ा नहीं करता था, और उसके चेहरे का वह दिव्य प्रकाश, जो हर क्षण बना रहता था, अद्भुत और आश्चर्यचकित कर देने वाला था, मानो सूर्य का प्रकाश चारों तरफ अपनी रोशनी बिखेर कर वातावरण को प्रकाशवान कर रहा हो. . . और फिर हर बार उसका मिलना और हंसकर

चले जाना, मेरे मन में प्रेम का **अंकुरण प्रस्फुटित** कर रहे थे।

हर क्षण मैं यही सोचता रहता, कि वे क्षण मादक और माधुर्य से ओत-प्रोत हो जाते हैं, जब वह मेरे साथ होती है, वे क्षण प्यार की एक मीठी सी फुहार से सारे तन-मन को आप्लावित कर स्मृति-इतिहास के अमिट अक्षर बन जाते . . . **ऐसे सुन्दर क्षण ही जीवन की सार्थकता हैं, और ऐसे ही क्षण पूरे जीवन भर बने रह सकें, इसीलिए मैं अपने पूज्य गुरुदेव के चरणों में उपस्थित हुआ, और उन्हें अपने मन की पूरी व्यथा कह डाली।**

यह सब कहते-कहते मेरी आंख से अश्रुकण छलकने लगे, जिसने पूज्य गुरुदेव के चरणों को भिगो दिया, क्योंकि मैं अब एक पल भी उसके वगैर जी नहीं पा रहा था, और यह गुरुदेव भली-भांति जान चुके थे। गुरुदेव ने मुस्कराते हुए मेरी ओर देखा, और मेरे सामने एक आश्चर्य-चकित कर देने वाले रहस्य को उद्घटित कर मुझे चौंका दिया, जो मेरे पूर्वजन्म से सम्वन्धित था।

उन्होंने वताया, कि पूर्वजन्म में भी मैं उन्हीं का शिष्य था, और उन्हीं के प्रांगण में रह कर ही मैंने विशिष्ट साधनाओं में सिद्धि प्राप्त की थी, जिनमें से एक "सौन्दर्या यक्षिणी साधना" भी थी, जिसे मैंने प्रेमिका रूप में सिद्ध किया था, और वह मुझे प्रेमिका रूप में सिद्ध भी हुई, उसने मुझे अपनी सामीप्यता भी प्रदान की, लेकिन उसके प्रति कुछ अशिष्टता पूर्ण व्यवहार हो जाने से वह मुझसे रुष्ट हो गई, और यह कहकर—"अब वह कभी नहीं आएगी" लुप्त हो गई, लेकिन कुछ समय उसके साथ आनन्ददायक क्षणों को बिता देने के कारण मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ, और पुनः उसे साधना द्वारा प्राप्त कर लेने का निर्णय कर उस अद्वितीय साधना को मैंने सम्पन्न किया, किन्तु उसमें सफलता हाथ न लगी, जिस कारण मैं बहुत दुःखी रहने लगा, और गुरुदेव से प्रार्थना की, कि मैं पुनः उसे प्रेमिका रूप में सिद्ध करना चाहता हूं, क्योंकि उसके चले जाने से विभिन्न प्रकार की विपरित परिस्थितियों ने मुझे जकड़ लिया, और जब मैं शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर हो गया, तब मुझे ज्ञात हुआ, कि मेरे जीवन की सफलता और पूर्णता का श्रेय तो उस यक्षिणी को ही जाता है, जिसने मुझे हर दृष्टि से सुख-सम्पन्नता और आनन्द प्रदान किया था।

गुरुदेव ने रहस्योद्घाटन करते हुए बताया, कि मैंने पूर्वजन्म में सौन्दर्या यक्षिणी को साधना द्वारा प्रेमिका रूप में प्राप्त किया था . . . किन्तु मेरे द्वारा कुछ अशिष्टता पूर्ण व्यवहार हो जाने से वह रुष्ट हो कर चली गयी और उसके जाने के बाद मैं विभिन्न परेशानियों से घिरता चला गया।

मैंने गुरुदेव से इस साधना में पुनः सफलता न मिल पाने का कारण पूछा, तो उन्होंने कहा — मुझे उस यक्षिणी के साथ अत्यधिक माधुर्य, कोमलता और प्रेममय व्यवहार करना चाहिए था, क्योंकि अभद्रता पूर्ण व्यवहार से वह अपनी दी हुई सुख-सम्पन्नता व आनन्द को छीन लेती है, और उस साधक के जीवन से हमेशा-हमेशा के लिए चली जाती है।

फिर उन्होंने कहा— तुमने अपनी गलती का एहसास किया है, इसलिए मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं, कि तुम्हें वह प्रेमिका रूप में प्राप्त हो, लेकिन यह इस जीवन में तो सम्भव नहीं है, **वह अपमानित होकर गई है, इसलिए मैं भी उसे वापिस आने के लिए बाध्य नहीं करूंगा, तुम्हें इस जन्म में तो इस बात का प्रायश्चित करना ही पड़ेगा,** चूंकि तुम मेरे शिष्य रहे हो, और तुमने मेरी हर आज्ञा का पालन किया है, इसीलिए मैं तुम्हें यह आशीर्वाद देता हूं, कि अगले जीवन में तुम्हारी

भेंट उससे अचानक ही होगी, और हर क्षण वह तुम्हारी परेशानियों, समस्याओं में साये की तरह तुम्हारे साथ ही खड़ी मिलेगी, जिससे कि तुम्हें जीवन में किसी प्रकार की कोई कठिनाई व्याप्त नहीं होगी, **किन्तु वह तब तक तुम्हें प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक तुम पुनः मेरे पास आकर ''सौन्दर्या यक्षिणी साधना'' को सिद्ध नहीं कर लोगे।**

इस पूर्व जन्मकृत घटना को सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया, और शीघ्र ही गुरुदेव से आशीर्वाद ले, मैंने ''सौन्दर्या यक्षिणी साधना'' को सिद्ध कर, अपनी प्रेमिका रूप में उसे प्राप्त कर लिया, और अब मैं जब भी उसे याद करता हूं, वह मेरे सामने साकार हो जाती है, इस साधना को किस प्रकार से मैंने सम्पन्न किया, उसका वर्णन प्रस्तुत है—

समय

२३ जून शुक्रवार को यह साधना सम्पन्न करने का मुहूर्त है, परन्तु यदि साधक किसी कारणवश इस साधना को इस दिन सम्पन्न नहीं कर पाता, **तो किसी भी शुक्रवार के दिन** वह इस साधना को पूर्ण श्रद्धा के साथ सम्पन्न कर सकता है। इस साधना को स्त्री-पुरुष दोनों ही सिद्ध कर सकते हैं।

सामग्री – सौन्दर्या यंत्र, यक्षिणी वश्य माला।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह अत्यन्त ही सुन्दर और नए वस्त्र पहिन कर, साथ ही गुरु-चादर ओढ़कर पूजा-स्थल में बैठ जाए। साधना किसी एकांत कमरे में ही करे, जिसमें उसके अलावा अन्य कोई प्रवेश न कर सके।

पूजा-स्थान को स्वच्छता से साफ कर, चारों तरफ के खिड़की और दरवाजे बंद करके ही पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठ जाए तथा कमरे में सुगन्धित इत्र, सुगन्धित धूप, अगरबत्ती प्रज्वलित कर दे, और अपने वस्त्रों पर भी गुलाब का या अन्य सुगन्धित इत्र लगा ले, जिससे कि एक सुन्दर वातावरण बन सके, जो मन में खुशी, उमंग और आह्लाद पैदा कर सके।

सर्वप्रथम साधक को चाहिए कि वह पूजा-स्थान पर **''सौन्दर्या यंत्र''** को किसी भी आकर्षक रंग के नए वस्त्र पर स्थापित कर दे। साधक दो गुलाब की पुष्पमालाओं को पहले से ही मंगवाकर, जिसमें से एक पुष्पमाला गुरुदेव के चित्र के ऊपर चढ़ा दे और दूसरी उस यंत्र के सामने रख दे।

साधक उस यंत्र पर कुंकुम, अक्षत आदि चढ़ाये, और उसके सामने एक घी का दीपक प्रज्वलित कर दे, सामने खीर का या अन्य किसी भी चीज का भोग आदि लगाए, फिर गुरु का ध्यान कर यह प्रार्थना करे— मुझे इस साधना में सिद्धि प्राप्त हो, और मैं जिस रूप में भी चाहूं, उसे प्राप्त कर सकूं, ऐसा मन ही मन प्रार्थना कर, फिर साधना आरम्भ करे।

इसके पश्चात् वह निम्न मंत्र का **''यक्षिणी वश्य माला''** से २१ माला जप सम्पन्न करे, यह माला भी मंत्र-सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित होनी चाहिए।

मंत्र

ॐ प्रिय सौन्दर्य यक्षिण्यै फट्

मंत्र-जप सम्पन्न कर साधक उस भोग को ग्रहण कर ले, और उस यंत्र एवं माला को किसी नदी, कुंए या तालाब में विसर्जित कर दे।

इस साधना को सिद्ध कर साधक अपने भौतिक जीवन की परेशानियों से मुक्ति पा सकता है, और सुख-सम्पन्नता एवं वैभव के साथ- साथ आनन्ददायक जीवन जीने में भी सक्षम हो सकता है।

इस साधना (यक्षिणी) को वैसे तो किसी भी माता, बहिन, सखी, प्रेमिका के रूप में सिद्ध किया जा सकता है, किन्तु प्रेमिका रूप में सिद्ध करने पर साधक को शीघ्र ही सफलता प्राप्त होती है, और इस रूप में वह उसके लिए विशेष अनुकूल सिद्ध होती है।

● डॉ० राम नारायण सिंह ''मधुर''

वशीकरण के विभिन्न उपाय शास्त्रों में मिलते हैं। **अथर्ववेद** में अश्विनी को वशीकरण में सहायक माना गया है। साधक अश्विनी से प्रार्थना करते हुए कहता है— ''तृण को जैसे वायु घुमाती है, वैसे ही मंत्र-बल से तेरे हृदय को आन्दोलित करता हूं। हे अश्विनी! मेरी इच्छित नारी को ले आओ।''

कौशिक सूत्र में इसके लिए दूसरा उपाय बताया गया है। मंत्र-पाठ करते हुए, यदि कूट को मक्खन में मिला कर, तीन वार अग्नि दिखा कर शरीर को ताप दें, तो निश्चय ही मक्खन के समान नारी/ पुरुष का हृदय भी द्रवीभूत होगा।

वशीकरण साधना के प्रति हर देश में प्राचीन काल से ही मानव - मन में रुचि रही है। कुंवारियां उत्कृष्ट वर की प्राप्ति के लिए इसका अवलम्बन लेती थीं। पुरुष. प्रेमिका या सुन्दरी की प्राप्ति के लिए इसे अपनाता था। नववधू पति को सदैव मुट्ठी में किए रहने के लिए इसका सहारा लेती थी। मुसलमानों की कुछ जातियों में विवाह के समय कन्या की हथेली पर रखे तिल को वर चाटता है। यह भी वशीकरण के लिए टोटके के रूप में ही किया जाता है, मान्यता है — कि इससे पति सदैव पत्नी के वश में रहेगा।

वशीकरण के लिए मंत्र ही नहीं, वनस्पतियों की सहायता भी ली जाती थी। औषधि और लता आदि की सहायता से यह क्रिया की जाती थी। विश्वास किया जाता था कि, जैसे लता वृक्ष से लिपटती है, वैसे ही उस लता को अभिमंत्रित करने से कन्या भी प्रेमी से आ लिपटेगी। पत्ते को मंत्र से प्रभावित कर हिलाते हैं, तो उधर लड़की का हृदय भी कांपने लगता है। मिट्टी या आटे

> **"मिट्टी की बनी एक नारी प्रतिमा पर एक तरुण एकान्त में बैठा बार-बार बाण चला रहा था। यह लक्ष्य भेद कोई अभ्यास के लिए नहीं किया जा रहा था। युवक के अधरों की थरथराहट को देखिए— लक्ष्य भेद मंत्र-पाठ के साथ कर रहा था। युवक का विश्वास था कि लक्ष्य भेद की निश्चित अवधि पूर्ण होते ही वह तरुणी निश्चय ही उसकी हो जाएगी। वैदिक युग में यह वशीकरण का एक विधान था।"**

का पुतला बना कर उस पर वशीकरण क्रिया की जाती है। विशेष रूप से काली उर्द का आटा प्रयोग में लाया जाता है। अगर पति किसी अन्य औरत के चक्कर में है, तो उस औरत से उसका ध्यान हटाने के लिए भी यह उपाय किया जाता है।

राज्याभिषेक के अवसर पर पर्ण वृक्ष की मणि बनाने के लिए, उसे अभिमंत्रित किया जाता था। विश्वास किया जाता था कि राजा यदि इसे बांह पर बांध ले, तो जो भी सामने आयेगा, उसके वश में हो जायेगा। जो राजा उस अवसर पर सामने आयेंगे, वे भी उसकी अधीनता स्वीकार कर लेंगे।

युद्ध के अवसर पर, विरोधी पक्ष की सेनाओं पर मोहन मंत्र के प्रयोग के अनेक उल्लेख मिलते हैं, जिससे शत्रु पक्ष की सेना अस्त्र छोड़ कर स्तम्भित सी हो जाती थी। रण दुन्दुभि को भी मोहन मंत्र से युक्त कर बजाया जाता था, जिससे उसके नाद को सुनने वाला वशीभूत हो जाता था।

मोहन मंत्र का प्रयोग मनुष्यों पर ही नहीं, पशु-पक्षियों पर भी किया जाता था। **बहेलिये वीणा पर टोडी रागिनी बजाते तो हिरण मंत्र- मुग्ध से खड़े रह जाते थे। राजा उदयन की वीणा से ऐसे स्वर निकलते थे, कि विशाल जंगली गजराज भी उसके पीछे-पीछे स्वर की डोर में बंधे- खिंचे चले आते थे।** विदेशी यात्रियों ने बहेलियों के द्वारा विशेष स्वर उत्पन्न कर पक्षियों को पकड़ने का जिक्र किया है। कृष्ण की वंशी सुन कर गोपियां ही नहीं, गायें भी सुध-बुध भूल जाती थीं।

हर देश की नारियां अपने पतियों और प्रेमियों को वश में किए रखने के लिए, औषधियों का टोटकों के रूप में प्रयोग करती हैं। कभी-कभी उन औषधियों की अधिक मात्रा या विषाक्त तत्व हानि भी कर जाता है। कभी-कभी पति या प्रेमी को लेने के देने भी पड़ जाते हैं। भारत और यूनान में ऐसी कई जड़ी-बूटियां प्रयोग में लाई जाती थीं। 'यहूदी ड्रेक' नामक पौधे का फल इस काम में लाते थे। इसके फल को वे "प्रेम का सेब" कहते थे। दक्षिणी यूरोप और अफ्रीका में इसे 'मन्द्रागौरा' कहते थे।

ईसा पूर्व दूसरी सदी में, राजनीतिज्ञ सिसरो के समय में, रोम में भी इस प्रकार की वशीकरण औषधियों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में होता था। **रोम के प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक लुक्रेटिस (६६ से ५५ ई० पूर्व) के ऊपर उसकी पत्नी लुसीलिया ने वशीकरण वनौषधि का प्रयोग किया था।** रोम के सेनापति लकुलस (७६५१ ई० पूर्व) को वश में रखने के लिए उसकी पत्नी ने वशीकरण औषधि का प्रयोग किया था, जिसकी अधिक मात्रा से उन्माद हो जाने के कारण वह बेमौत मारा गया था। इस प्रकार वश में करने की धुन में इन औषधियों का प्रयोग करने वाले उसका उपयोग गलत ढंग से भी करते रहे। कभी-कभी अधिक मात्राएं भी देते थे, जिनका परिणाम घातक सिद्ध होता था।

रोमन साम्राज्य की मेडिया नामक औरत का नाम इस प्रकार की वशीकरण औषधियां तैयार करने में सबसे आगे रहा है। **रोम साम्राज्य के कवि और व्यंगकार होस और ओविड ने भी मेडिया के चमत्कारों का उल्लेख किया है। बाद में यूनानी औरतों ने मेडिया से यह कला सीखी। वहां विष की जानकारी जादू-टोने से जुड़ी हुई थी। बूढ़ी औरतें तरह-तरह के टोटके और जादू करना जानती थीं।**

सिसली के लोगों का अब भी चरस और बोरेक्स के पौधे पर बहुत विश्वास है, उनका कहना है कि अगर इसकी एक निश्चित मात्रा किसी भी स्त्री या पुरुष को दी जाती रहे, तो वह उसके चरणों में लोटने लगेगी, हां! उसे इस औषधि को दिए जाने का पता नहीं चलना चाहिए। भोजन में मिलाए जाने पर तो पवित्र से पवित्र औरत भी वश में हो जाएगी। भारत में भांग को भी इसी श्रेणी में रखते हैं, मगर इसे इतना प्रभावशाली नहीं माना जाता है।

फ्रांस में आकर्षित करने के लिए 'मैण्ड्रेक' वृक्ष की जड़ खिलाते हैं। जर्मनी में चिकोरी जाति के 'एण्डिव' नामक पौधे के बीज खिलाये जाते हैं। अभी कुछ शताब्दियों पहले इसे प्रेम और उत्तेजना उत्पन्न करने वाला माना जाता था। इंग्लैण्ड के कुछ भागों में अब भी इस तरह के विश्वास जिन्दा हैं।

सन् १६५२ में एक रूसी यहूदन जादूगरनी को वशीकरण करने के आरोप में सजा दी गई थी। लन्दन के पूर्वी हिस्से के छोर पर रहने वाली यहूदन को जादू करने के अपराध में सजा दी गई थी, उसने दो औरतों को वशीकरण औषधियां दी थीं, उसमें से एक औरत को उसके पति ने छोड़ दिया था और दूसरी चाहती थी, कि उसका पति उसी के वश में रहे। उसे नौ महीने की कैद, वशीकरण औषधियां बनाने और देने के अपराध में मिली थी।

भारत में वशीकरण वाली औषधियों का जिक्र मिलता है। भले ही वे पाश्चात्य देशों जैसी जहरीली न होती रही हों, फिर भी विचित्र अवश्य रही हैं।

वशीकरण के ये अनोखे प्रयोग पूर्व काल से लेकर वर्तमान युग तक अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह युवक हो, युवती हो, चाहे बच्चा हो या वृद्ध सभी एक - दूसरे को आकर्षित करना ही चाहते हैं। वैसे सबसे बड़ा वशीकरण तो नम्र वाणी ही है, उससे स्त्री-पुरुष यहां तक कि पशु-पक्षी भी वशवर्ती हो जाते हैं। इसीलिए कहा गया है—

"वशीकरण एक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।"

'अघोर साधना' तंत्र का श्रेष्ठतम रूप है, इस प्रकार से साधना करने पर शीघ्र अनुकूलता प्राप्त होती है। इस साधना को अच्छी तरह से समझने की मेरी प्रबल इच्छा थी, शायद इसीलिए 'अघोरनाथ' ने विशेष परिस्थितियां निर्मित कर मुझे अघोरियों के साथ रहने का सौभाग्य दिया . . .

लगभग अर्द्धरात्रि का समय रहा होगा और मेरी आंख खुल गई, घना अंधेरा और विचित्र ध्वनियां मेरे रोम-रोम में सिहरन भर रही थीं। अंधेरे के घनेपन को कुछ ही दूरी पर चीर कर नष्ट कर रही थी, अलाव में जलती आग की सुनहरी लपटें, जिसमें उन अघोरियों की देह भी सोने की तरह दमक रही थी, उनका नृत्य, नृत्य लगते हुए भी स्पष्ट रूप से लग रहा था, कि वे कोई नृत्य नहीं, अपितु कोई **'तांत्रिक क्रिया'** सम्पन्न कर रहे हैं।

सामने कोई काले पत्थर का अनगढ़ दिखता अपने ऊपर पुते सिंदूर को आग की लपटों में चमका रहा था, उनकी मस्ती देखते ही बन रही थी, लेकिन मेरे मन में उनकी वेशभूषा और उनके प्रयोग से इतना अधिक भय समा गया था, कि मैंने अंधेरे का लाभ उठाकर चुपचाप वहां से भाग जाना ही उचित समझा, और एक ओर धीमे-धीमे सरकना आरम्भ कर दिया।

एक सीमा तक भाग जाने के बाद अचानक ऐसा लगा, कि जैसे मेरे सामने कोई दीवार खड़ी है। मैंने हाथों से टटोला, किन्तु कोई ठोस आकार पकड़ में नहीं आया, फिर पांव बढ़ाये और सिर अंधेरे में पता नहीं किससे टकरा कर लहूलुहान हो गया। मैं लाख

उपाय करके भी आगे नहीं बढ़ पाया।

समय कम था, इसलिए मैंने दूसरी दिशा में भागना शुरू कर दिया। दूसरी ओर भी बढ़ने पर मेरे पांव एक सीमा तक जाकर जड़ हो गए, जैसे कोई शिकंजा उनको आकर जकड़ गया हो। हर दिशा में बढ़ने पर मेरे साथ यही हाल हुआ, और मैं सारी रात इधर से उधर भागता रहा। कुछ तो प्रयोग का प्रभाव और कुछ भागने की थकान से मैं बेहोश होकर गिर पड़ा।

सुबह की लालिमा छाई और चिड़ियों की चहचहाहट से जब मेरी आंख खुली, तो सारा सिर दर्द से फटा जा रहा था, उसी नीम बेहोशी में सामने से आते एक अघोरी को देखकर मेरे प्राण सूख गए, कि पता नहीं वह मेरी इस दुस्साहस पूर्ण क्रिया पर क्या कर बैठने वाला था। दूर से ही वह ठठाकर हंसा, **"मुझसे पहले ही पूछ लेता, तो साला क्यों भटक-भटक कर अपने पांवों को इस तरह से तुड़वाता, यह सारा क्षेत्र मंत्रकीलित है, जिसमें न तो कोई अपनी इच्छा से आ सकता है और न ही वाहर जा सकता है।"**

अब मेरी दृष्टि अपने तलवों की ओर गई और सचमुच वे लहूलुहान हो गए थे। भय, दहशत और पीड़ा से जब तक मैं कुछ कहूं, तब तक उसका अगला आदेश आ गया— **"सीधी तरह से उठ, और चल मेरे पीछे-पीछे।"** मैं बिना एक भी शब्द बोले चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। कुछ दूर जाने के वाद जहां जंगल और घना हो गया, वहां एक झरना अपने पूरे प्रवाह से गिर कर गम्भीर ध्वनि उत्पन्न कर रहा था, वहां पर शेष सभी अघोरी और स्त्रियां बैठी थीं।

आश्चर्य! आज उनके वस्त्र साफ-सुथरे थे और सारी वेशभूषा किसी गम्भीर साधक के समान थी, उनके चेहरों से भी पहले दिन की अपेक्षा अधिक गरिमा और ओज झलक रहा था, जिसे देख कर कोई भी उन्हें सहसा अघोरी नहीं मान सकता था। किसी गम्भीर गुत्थी में उलझे इन लोगों के पास, जब मैं भी नहा कर पहुंचा, तो उन्होंने मुझे भी अपने पास बैठा लिया।

मुझे अघोरियों से कुछ दुर्लभ मंत्र प्राप्त हुए, जिनका प्रयोग मैंने किया और वे अपनी प्रामाणिकता में पूर्ण खरे उतरे, इनका प्रभाव अकाट्य व अचूक है।

मैं कुछ आश्वस्त हुआ ही था, कि उनकी बातचीत सुनकर फिर सहम गया। वे बात कर रहे थे— उन्हें जो आज मुर्दा शरीर मिला है, उस पर **'संजीवनी प्रयोग'** उनमें से कौन सिद्ध करेगा? मुर्दा शरीर. . . और उस पर साधना!! मैं झुरझुरी से भर कर, अपने सूख गए होठों पर जीभ फेर कर उनकी ओर देखने लगा, लेकिन उनके चेहरे निर्विकार थे, लग ही नहीं रहा था, कि वे कोई असामान्य बात कर रहे हों।

मुझे अपनी ओर ताकता पाकर उनका स्वर कुछ धीमा हुआ और तभी एक वाक्य तैरता हुआ मेरे समीप आया— "नहीं! आज नहीं! इसको अभी नहीं!" अधूरे सुने इस वाक्य का अर्थ लगाने में मैं उलझ गया. . . क्या है उनकी इच्छा? क्या वे आज नहीं, मुझे कल बलि देंगे? वे मेरे साथ क्या करेंगे?

— और यह सब सोचकर मैं भय से पीला पड़ गया। ऊपर से तो मैं सामान्य दिखने का प्रयास कर रहा था, लेकिन मेरे अन्दर ही अन्दर जो कुछ उमड़-घुमड़ रहा था, उससे मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था, उन्होंने मुझे खाने-पीने को भी दिया, लेकिन मैं आधा-अधूरा खाकर चुपचाप एक ओर लेट गया।

धीरे-धीरे करके दिन ढला और रात की कालिमा जंगल को और भी घना दिखाने लगी। पिछली रात की तरह ही अलाव जला दिया गया, और **वह काली अनगढ़ दिखती 'पत्थर की शिला', जो भैरव की सुन्दर व दुर्लभ मूर्ति थी, उसके चारों ओर विचित्र प्रकार की साधना व पूजन-सामग्री उनके द्वारा एकत्र की जाने लगी,** जिसमें से अधिकांश जड़ी-बूटियां और जंगल में मिलने वाले दुर्लभ वनस्पति थे, तभी एक अघोरी अपने कंधे पर एक मृत शरीर डाले हल्की चाल से चलकर आता हुआ दिखाई दिया, मुझे छोड़ वहां सभी के चेहरे प्रसन्नता से खिल गए।

शव तो मैंने जीवन में पहले भी देखे थे, लेकिन इस प्रकार से शव देखकर मेरे मन में जुगुप्सा मिश्रित भय भर गया। अब उनका कोई गुह्य अनुष्ठान प्रारम्भ होने वाला था, और मैं मन ही मन सिकुड़ता जा रहा था कि इस कृत्य में उन्हें मेरी क्या आवश्यकता पड़ गई?

मेरे देखते ही देखते वे सब उस शव को पूर्णतया नग्न कर, उस पर सिन्दूर लेकर लेपन में जुट गए। भरे-पूरे बदन का वह शव, जिसे देखकर लगता था, कि वह किसी आकस्मिक दुर्घटना में फंस कर अपने प्राण खो बैठा है, मेरे देखते ही देखते उन्होंने उसे पूरी तरह से सिर से पांव तक सिन्दूर में रंग दिया।

अब उन में से एक अघोरी कुछ वनस्पति लेकर, उसको पीस, उसके शरीर के विभिन्न स्थानों पर मलता हुआ पांव से

सिर की ओर बढ़ रहा था, और **दूसरा निरन्तर मंत्रोच्चार में व्यस्त था, जिसकी मुख-मुद्रा धीरे - धीरे कठोर से कठोरतम होती जा रही थी, और सारा चेहरा लाल भभूका हो गया था।** उसकी इस तीव्रता से मैं ही नहीं, उसके संगी-साथी भी संकुचित हो गए थे। दूर अलाव में जलती लकड़ियों में उनमें से एक स्त्री निरन्तर कुछ ऐसे पदार्थ डालती जा रही थी, जिसकी मादक सुगंध से सारा वातावरण भीग गया था।

उनके क्रियाकलापों में भय और विचित्रता होते हुए भी घृणित जैसा कुछ नहीं लग रहा था। धीरे-धीरे सारी रात शरीर के पूजन और मंत्रोच्चारण में व्यतीत हो गई और सुबह की लालिमा के साथ-साथ उन सब की देह भी थकान की लालिमा से भर गई। निराश हो सब उठे और वहां से कुछ दूर चल दिए, मैं भी चुपचाप उनके पीछे चल दिया। रास्ते में एक अघोरी, जो कि मेरी ही आयु का था, उससे मैंने अपना साहस जुटा कर पूछा— वे रात में क्या कर रहे थे? उसने उचाट निगाह मेरी ओर डालते हुए रूखेपन से इतना ही कहा— "मृत संजीवनी प्रयोग।"

दूसरे दिन रात में भी उनका यही क्रम रहा, लेकिन तीसरे दिन वे सब हर्ष मिश्रित स्वर में चीख उठे, जब धीरे-धीरे उस मृत शरीर में स्पन्दन प्रारम्भ हुआ और देखते ही देखते वह मृत शरीर ऐसे उठ कर बैठ गया, जैसे नींद से जागा हो।

स्पष्ट था, कि उन्हें अपने 'मृत संजीवनी प्रयोग' में सफलता मिल गई थी, लेकिन शायद ये अघोरी भी प्रकृति के क्रम में छेड़छाड़ करना उचित नहीं समझते, इसीलिये उन्होंने किन्हीं विशेष क्रियाओं और मंत्रोच्चार से उसे पुनः उसी मृतावस्था में पहुंचा दिया।

उनमें से जो मंत्रोच्चार कर रहा था, उसका उल्लास तो उसके शरीर में समा ही नहीं रहा था। उस दिन उन लोगों ने खुल कर मुझे अपने साथ अपने ही बीच मिला लिया, और मेरे मन से भी सारे भय दूर हो गए। मेरा उनसे क्या सम्बन्ध था? क्यों वे मुझे जंगल में अपने साथ लाए? क्यों उन्होंने मुझे यह क्रिया प्रत्यक्ष करके दिखाई? यह सब तो एक अलग विषय है।

मेरे और उनके कुछ पूर्वजन्म के सूत्र थे, जिसकी वजह से उन्होंने साधनाओं के ज्ञान द्वारा मुझे अपने पास बुलाया और अपने से जोड़ा। वे मेरे पूर्वजन्म के गुरु भाई-बहिन ही थे, और पूज्य गुरुदेव की आज्ञानुसार ही उन्होंने मुझे तंत्र साधनाओं की दुर्लभ व गोपनीय विद्या से परिचित कराने के लिए ऐसा किया।

मेरा एक सामाजिक जीवन होने के कारण मैं प्रत्यक्ष और पूर्णरूप से उनके साथ नहीं रह सका, फिर भी उनसे आत्मीय सम्बन्ध तो इस घटना के बाद भी बने रहे, और उन्होंने मुझे 'अघोर विद्या' के दुर्लभ और अत्यन्त विशाल भण्डार से चुन-चुन कर ऐसे प्रयोग दिए, जिनसे मेरा सारा भौतिक और साधनात्मक जीवन जगमगा गया।

आज मैं उन्हीं वरिष्ठ गुरु भ्राता के इस आग्रह से, कि समाज में 'अघोर विद्या' की पुनर्स्थापना हो और इससे सम्बन्धित भ्रान्तियां दूर हों, एक लघु प्रयोग दे रहा हूं, जिससे समाज के सामान्य जन लाभान्वित हो सकते हैं, और देख सकते हैं, कि अघोर विद्या अपने-आप में कितनी तीव्र और अचूक फलदायक है।

रोग मुक्ति प्रयोग

रविवार एवं मंगलवार की रात्रि में काले रंग के ऊनी आसन पर बैठें, सामने यदि सम्भव हो तो श्मशान की राख बिछा दें, यदि ऐसा न हो तो आटे का एक पुतला बना कर लकड़ियों में जला दें, और उस राख को लेकर उसके ऊपर काला वस्त्र बिछायें व **"रोग मुक्ति यंत्र"** स्थापित कर **"अघोर माला"** से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र-जप करें—

मंत्र -

ॐ अघोरेभ्यो फट्

यह मंत्र-जप दूसरे के लिए भी संकल्प करके किया जा सकता है। मंगलवार को मंत्र-जप समाप्ति के बाद राख, यन्त्र व माला को उसी काले वस्त्र में लपेट कर नदी में प्रवाहित कर दें।

इस साधना की विशेषता यह है, कि कैसा भी गम्भीर रोगी हो, उसकी तबीयत में दूसरे दिन सुबह से ही निश्चित रूप से सुधार होने लगता है।

❋

फार्म नं० ४ (नियम - ८ देखिए)

१. प्रकाशन स्थान : दिल्ली
२. प्रकाशन अवधि : मासिक
३. ४. मुद्रक, प्रकाशक : श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली
५. सम्पादक का नाम : नन्दकिशोर श्रीमाली। क्या भारत का नागरिक है? हां।
पूरा पता : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर।
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - ३४, फोन : ०११-७१८२२४८
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों — कैलाश चन्द्र श्रीमाली।

मैं कैलाश चन्द्र श्रीमाली एतद् द्वारा घोषित करता हूं, कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : ३१-०३-१९९५

कैलाश चन्द्र श्रीमाली (प्रकाशक)

डॉ० श्रीमाली : एक महान व्यक्तित्व

– डॉ० पी० सैलवे दास
मेंबर– संघ लोक सेवा आयोग

*"डॉ० पी० सैलवे दास" संघ लोक सेवा आयोग (सी०पी०एस०सी०) की सदस्या तथा एक धर्मपरायण महिला हैं, गुरुदेव **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"** से उनका परिचय होने के बाद उनके जीवन की रिक्तता पूर्ण हो गई, जिसके लिए वे अपने-आप को सदैव गुरुदेव का आभारी मानती हैं। पत्रिका टीम ने उनसे साक्षात्कार कर उनके अनुभवों को प्राप्त किया है। प्रस्तुत है उसी साक्षात्कार का एक भाग–*

पत्रिका : डॉ०दास क्या आप अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ बताना चाहेंगी?

डॉ० दास : मेरा जन्म **२६ सितम्बर १६३२** को कोल्हापुर **कर्नाटक** में हुआ था, मेरी माता जी का नाम **"चंदोवलिता"** है तथा पिता जी का नाम **"अलावंदा"** था। हम कुल दस भाई-बहिन हैं, और मैं सबसे बड़ी हूं, मेरे पिता द्वारा दी हुई शिक्षा ही मेरे लिए सबसे बड़ी दौलत है, मुझे वे शिक्षा के लिए विदेश भेजने के बड़े इच्छुक थे, और जब मुझे ऐसा मौका मिला, तो उन्होंने मुझे भेजा भी। पिताजी ने मुझे मास्टर की डिग्री प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया, जब मैं डिग्री लेकर विदेश से लौटी, तो मैंने अपना व्यवसायिक जीवन एक लैक्चरार के रूप में महारानी कॉलेज, बैंगलोर (कर्नाटक) में आरम्भ किया। १६६१ में मेरी पदोन्नति हुई तथा मैं रीडर बनी, सन् १६६६ में प्रोफेसर हुई तथा १६७७ में उच्च शिक्षा निर्देशक (कर्नाटक) तथा प्रधानाचार्य, गृह विज्ञान कॉलेज (बैंगलोर) के रूप में कार्यरत रही। १६८८ में मेरी नियुक्ति मैसूर विश्वविद्यालय के उप कुलपति के रूप में हुई, इस पद पर मैं लगभग साढ़े तीन वर्ष तक रही, १६६१ में मेरा स्थानान्तरण दिल्ली (यू०पी०एस० सी०) के सदस्य के रूप में हुआ, और तब से मैं इसी पद पर कार्यरत हूं।

> **– क्योंकि बिना उसके इस विश्व में एक तिनका भी नहीं हिल सकता। मनुष्य ही नहीं, अपितु जानवरों की भी ईश्वर में आस्था होती है। मुझे जब भी कोई महत्वपूर्ण दस्तावेज पर साइन करना होता है, तो मैं सबसे पहले ईश्वर से प्रार्थना करती हूं . . .**

पत्रिका : क्या आप विवाहिता हैं?

डॉ० दास : नहीं! माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् घर में सबसे बड़ी होने के कारण, मैंने शादी नहीं करने का निश्चय किया, पर इसे मैंने कोई बड़ा त्याग नहीं समझा, और न ही मुझे कभी ऐसा महसूस हुआ, कि मेरे जीवन में कुछ अपूर्णता है।

पत्रिका : क्या आप ईश्वर में आस्था रखती हैं?

डॉ० दास : ईश्वर में मेरी पूर्ण आस्था है, क्योंकि बिना उसके इस विश्व में एक तिनका भी नहीं हिल सकता। मनुष्य ही नहीं, अपितु जानवरों की भी ईश्वर में आस्था होती है। **मुझे जब भी कोई महत्वपूर्ण दस्तावेज पर साइन करना होता है, तो मैं सबसे पहले ईश्वर से प्रार्थना करती हूं,** उसकी वन्दना करती हूं, और हर क्षण हर कार्य में ईश्वर का साथ मुझे अनुभव होता है।

पत्रिका : क्या आपको कुछ ऐसे अनुभव भी हुए हैं, जिनसे यह प्रमाणित हो, कि इस जगत में ईश्वर का अस्तित्व है?

डॉ० दास : १६६४ में मेरी एक बार बड़ी भयंकर कार दुर्घटना हुई थी, अगर ईश्वर उस वक्त मेरे साथ नहीं होता, तो शायद मेरा

बच पाना असम्भव था। जब कार लट्टू की तरह घूम गई थी, तब मैं अचानक ही अपने होशोहवास खो बैठी थी और मेरे मुंह से एक चीख निकली स्वामी ऽ ऽ ऽ . . .! तभी कुछ ही समय बाद मेरी चेतना लौट आई. . . और वहां एकत्रित लोगों को मैंने बताया— मैं कौन हूं, मुझे कहां जाना है?

इतनी बड़ी दुर्घटना के बाद भी मैं अपने होशोहवास में आ गई थी, यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी, स्पष्ट है कि ईश्वर की ही मुझ पर कृपा थी, जो मैं बच सकी, तभी से मैं जीवन में जो भी कार्य करती हूं, ईश्वर का स्मरण सर्वप्रथम कर लेती हूं।

पत्रिका : आपकी ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था देख हम यह जानना चाहते हैं, कि किस प्रकार से आप उसका चिन्तन-मनन करती हैं?

डॉ० दास : मेरे पूजा-कक्ष में भगवान विष्णु, महालक्ष्मी, वैंकटेश्वर और मालय मारुतवामन (लक्ष्मी) और एक शिवलिंग है, जिनकी पूजा-आराधना मैं नित्य नियम से करती हूं, उसी शिवलिंग पर एक दिन जब गुरुदेव की नजर पड़ी, तो उन्होंने उसे शुभ बताया और प्राण-प्रतिष्ठित कर दिया।
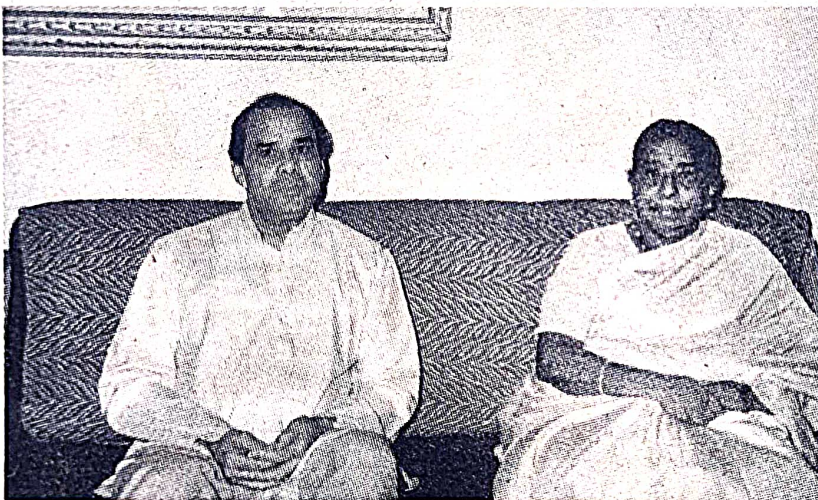
सुबह ७.०० बजे के करीब स्नानादि से निवृत्त होकर मैं कुछ मंत्र तथा श्लोक का तमिल में उच्चारण करती हूं, उस समय मैं कुछ सोचने का प्रयत्न नहीं करती। मैं पूजा करते समय भगवान को पुष्प तथा हल्दी, कुंकुम का टीका अर्पित करती हूं, फिर तिरुपति आरती करती हूं, और अब मेरे पूजा कक्ष में गुरुदेव का भी चित्र लगा है, उन्हें मैं पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ नमन करके कार्यालय की ओर रवाना हो जाती हूं, ऐसा करने पर मुझे शांति का अनुभव होने लगता है।

> **"तुम भगवान हो, मैं भगवान हूं और हर कोई भगवान का ही स्वरूप है, हम केवल उस भगवान को पहिचान नहीं पाते, इसके लिए हमें अपने भीतर निहित देवत्व को उजागर करना चाहिए तथा कुण्डलिनी के द्वारा हमारा पूरा शरीर, मन और आत्मा भगवान में लीन होनी चाहिए।"**

> **"मन में एक क्षण के लिए सोचा, कि जरूर इन लोगों को पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में शांति प्राप्त होती होगी, तभी तो वे घंटों उनसे मिलने की प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं।"**

पत्रिका : क्या मंत्रों की शक्ति पर आपको भरोसा है?

डॉ० दास : जी हां! मंत्रों में निहित शक्ति असीम होती है। भगवान विष्णु के मंत्र और श्लोक का मैं नित्य उच्चारण करती हूं, इस श्लोक का अर्थ है— भगवान वैंकटेश्वर प्रसन्न होकर अपने भक्त की सहायता के लिए प्रत्यक्ष होते हैं, वे अपने सभी भक्तों की समस्याओं का निराकरण करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं, इसीलिए मैं उनकी सदैव प्रार्थना करती हूं।

पत्रिका : क्या आपने कभी काली, शिव अथवा गोविन्द को प्रत्यक्ष रूप में देखा है?

डॉ० दास : नहीं! मैं केवल ईश्वर का स्मरण करती हूं, और अपने को उस में लीन कर देती हूं, जब मैं भगवान वैंकटेश्वर का स्मरण करती हूं, तो उनकी छवि अप्रत्यक्ष रूप में सामने आ जाती है, ऐसा ही मुझे प्रतीत होता है, क्योंकि वे मेरे पूरे शरीर में रच-बस गए हैं।

पत्रिका : आप ६२ साल की होने पर भी इतनी स्वस्थ हैं, क्या आप कोई विशेष व्यायाम करती हैं?

डॉ० दास : मेरा स्वास्थ्य निश्चय ही अच्छा है, कभी किसी खांसी या अन्य रोगों का मुझे सामना नहीं करना पड़ा। बस एक बार जैसा मैंने बताया, कि कार ऐक्सिडेन्ट में मेरे घुटनों में चोट आ गई थी, पर ईश्वर-कृपा से मैं ठीक हो गई। आज भी मेरी पाचन शक्ति तीव्र है तथा मैं गरिष्ट से गरिष्ट भोजन को भी आसानी से पचा सकती हूं, और मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही रूपों से मैं स्वस्थ हूं।

पत्रिका : आप की भेंट पूज्य गुरुदेव जी से कब और कहां हुई?

डॉ० दास : मुझे इस बात की बेहद खुशी है, कि मैं **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"** से मिली। एक बार जब मैं
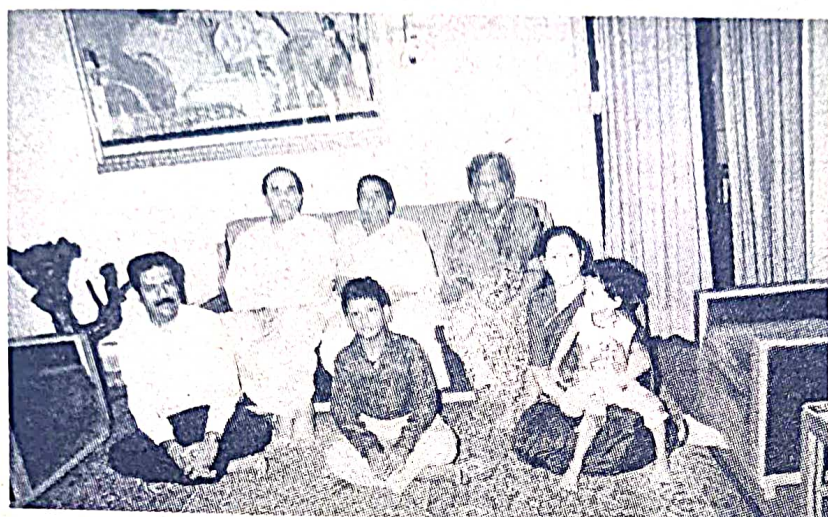
उदयपुर से दिल्ली आ रही थी, उसी वायुयान में वे जोधपुर से दिल्ली आ रहे थे, शायद यह उनकी ही कृपा रही, कि उनकी सीट मेरे बगल में ही थी। इस एक घंटे की उड़ान के दौरान ही मेरी उनसे बातचीत हुई।

पत्रिका : जब आप "डॉ० श्रीमाली जी" से मिलीं, तब आपको कैसा लगा?

डॉ० दास : उनसे बातचीत करते हुए मुझे लगा, कि वे निश्चय ही एक महान व्यक्तित्व हैं। **उन्होंने मेरे बारे में कई महत्वपूर्ण भविष्यवाणियां भी कीं, अपने भविष्य के बारे में जानकर मुझे प्रसन्नता हुई, उनकी बातों में इतनी आत्मीयता थी,** कि मैं उन्हें अपने घर पर आने के लिए निमंत्रण दिए बिना न रह सकी, अतः मुझे उनसे मिलने पर असीम आनन्द की अनुभूति हुई।

"मुझे पता चला, कि वे बहुत महान व्यक्ति हैं, परन्तु इतना कुछ होने पर भी वे इतने सरल तथा सहज स्वभाव के हैं, कि मैं उनकी कायल हो गई।"

पत्रिका : आप उनके बारे में क्या सोचती हैं?

डॉ० दास : जब मेरा उनसे परिचय हुआ, तब मुझे पता चला, कि वे बहुत महान व्यक्ति हैं, परन्तु **इतना कुछ होने पर भी वे इतने सरल तथा सहज स्वभाव के हैं, कि मैं उनकी कायल हो गई।** मैंने उन्हें जब अपने घर आने के लिए निमंत्रण दिया, तो उन्होंने निःसंकोच ही वह निमंत्रण स्वीकार कर लिया, किन्तु परिस्थितियां ही कुछ ऐसी रहीं, कि वे आ न सके और जोधपुर चले गए।

जब वे दोबारा दिल्ली आए, तो मैंने उनसे फिर सम्पर्क किया, क्योंकि कुछ व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में मुझे उनसे विचार-विमर्श करना था, परन्तु जिस आत्मीयता से उन्होंने मेरा अभिवादन स्वीकार किया, मुझसे बातचीत की, उससे तो उनकी महानता तथा सरलता का प्रमाण मिलता ही है।

मैं तो उनसे केवल एक बार ही मिली थी, परन्तु जिस रूप में वे मुझ से मिले, उससे पता लगता है, कि उनके मन में कितना मानव-प्रेम है।

पत्रिका : जिस समय आप उनके निवास स्थान पर पहुंची, तब आपने वहां क्या देखा?

डॉ० दासः जब मैं उनके निवास स्थान पर पहुंची, तो मैंने देखा, कि वहां पर बहुत भीड़ लगी हुई थी लोगों की, फिर मन में एक क्षण के लिए सोचा, कि जरूर इन लोगों को पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में शांति प्राप्त होती होगी, तभी तो वे घंटों उनसे मिलने की प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं।

सचमुच पूज्य गुरुदेव जी से मिलने के बाद तो ऐसा लगता है, कि मानो मेरा और उनका आत्मा का सम्बन्ध है, और उन्होंने भी मेरे घर पर आकर मुझ पर अति कृपा कर लगभग डेढ़ घंटे का समय अपने व्यस्त क्षणों में से दिया, मुझे ऐसा लगा, जैसे मुझे बड़े भाई के द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। मैं इस प्रेम के लिए, जो उन्होंने मुझे प्रदान किया है, सदा ही उनकी कृतज्ञ रहूंगी।

पत्रिका : आप पूज्य गुरुदेव जी से कब अधिक प्रभावित हुईं?

डॉ० दास : गुरुदेव से हुई डेढ़ घंटे की वार्ता के दौरान उन्होंने मुझे बताया— जहां आपकी आस्था है, वहां भगवान हैं, अगर आप पूर्ण विश्वास के साथ एक पत्थर को भी पूजने लगें, तो आपके लिए वह ही भगवान है। भगवान तो सर्वव्यापी हैं, निराकार हैं, आप उसे जो चाहें स्वरूप दे दें। गुरुदेव कहते हैं— "तुम भगवान हो, मैं भगवान हूं और हर कोई भगवान का ही स्वरूप है, हम केवल उस भगवान को पहिचान नहीं पाते, इसके लिए हमें अपने भीतर निहित देवत्व को उजागर करना चाहिए तथा कुण्डलिनी के द्वारा हमारा पूरा शरीर, मन और आत्मा भगवान में लीन होनी चाहिए।"

यही मेरी भी भावना थी, जिसे पूज्य गुरुदेव ने भेंटवार्ता के दौरान स्पष्ट किया। मैं उन्हें भक्तिभाव से एक बार फिर प्रणाम करती हूं।

❋

होली विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका-पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
नारायण यंत्र	२३	२४०/-
नारायण चक्र	२३	८०/-
पीली हकीक माला	२३	१५०/-
बिल्ली की नाल	२३	६०/-
कमल गट्टे की माला	२३	१५०/-
लाल हकीक माला	३०	१५०/-
रुद्राक्ष (१)	३०	५१/-
शूलिनी यंत्र	३०	२४०/-
नाग मुष्टिका	३०	१५०/-
काली हकीक माला	३०	१५०/-
ऊर्ध्व चेतस यंत्र	३५	२४०/-
प्रज्ञा माला	३५	१५०/-
मोती शंख	४५	८०/-
श्रृंगटिका	४५	१००/-
गरिमा माला	४५	१५०/-
गुरु चित्र - यंत्र	५१	१५०/-
मातंगी यंत्र	५१	२४०/-
मातंगी गुटिका	५१	६०/-
मातंगेश्वरी माला	५१	१५०/-
सौन्दर्या यंत्र	६६	२४०/-
यक्षिणी वश्य माला	६६	१५०/-
रोग मुक्ति यंत्र	७५	२४०/-
अघोर माला	७५	१५०/-

दीक्षा

प्रज्ञा दीक्षा
भैरव दीक्षा
अघोर दीक्षा
मातंगी दीक्षा
सम्मोहन दीक्षा
राजयोग दीक्षा
यक्षिणी दीक्षा
वशीकरणदीक्षा
धन्वन्तरी दीक्षा
महालक्ष्मी दीक्षा
काल ज्ञान दीक्षा
तंत्र सिद्धि दीक्षा
सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा
गरिमा (सौन्दर्य) दीक्षा
शूलिनी दुर्गा दीक्षा
सौन्दर्या यक्षिणी दीक्षा
पूर्ण वीर वैताल दीक्षा
भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा
आत्म वार्तालाप सिद्धि दीक्षा
निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा
ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा
गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा
पत्थर को वश में करने हेतु "हादी तंत्र दीक्षा"
गड़ा धन प्राप्त करने हेतु "भूगर्भ सिद्धि दीक्षा"
दूसरों के मन की बात जानने के लिए "पराविज्ञान दीक्षा"

"दीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि आप जिस उद्देश्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, वह कार्य सम्पन्न हो ही जाय, अपितु दीक्षा का तात्पर्य तो यह है कि आप जिस उद्देश्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, उस कार्य के लिए आपका मार्ग प्रशस्त हो।"

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें। सम्पूर्ण धनराशि पर मनीऑर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धनराशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनीऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-342001 (राज.),टेलीफोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

306,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : 011-7182248

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. 13 , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

रजिस्ट्रेशन नं० ५५७६१/६३
A.H.W.
पोस्टल-डी.एल.नं० १६०५२/६३
अंतर घट जब प्रकाशिया
दीक्षा
तंत्र सिद्धि दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा
वशीकरण दीक्षा, सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा
पूर्ण वीर वैताल दीक्षा, भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा
पत्थर को वश में करने हेतु "हादी तंत्र दीक्षा"
गड़ा धन प्राप्त करने हेतु "भूगर्भ सिद्धि दीक्षा"
सम्मोहन दीक्षा, राजयोग दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा,
भैरव दीक्षा, दूसरों के मन की बात जानने के
लिए "परा ज्ञान दीक्षा", गर्भस्थ बालक चेतना
दीक्षा, आत्मा-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा, निश्चित
परिणाम प्राप्ति दीक्षा, ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति
दीक्षा, गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा,
धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा
– विशेष –
प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान
पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर
शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का
प्रावधान. . . और साथ में साधना सिद्धि से सम्बन्धित
गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .
27 से 30 अप्रैल 1995
को ये दीक्षाएं प्रदान की जायेंगी
नोट :
ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव
केवल "गुरुधाम" दिल्ली में
ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।
सम्पर्क :
३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४
फोनः०११-७१८२२४८, फैक्सः०११-७१८६७००
वर्ष-१५
अंक-३